

व्याकरणवीथिः

कक्षा 9 एवं 10 के लिए संस्कृत व्याकरण



0974



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जुलाई 2003 आषाढ़ शक्संवत् 1925

संशोधित संस्करण

नवंबर 2016 कार्तिक शक्संवत् 1938

पुनर्मुद्रण

अप्रैल 2019 चैत्र शक्संवत् 1941

सितंबर 2019 भाद्रपद शक्संवत् 1941

जनवरी 2021 पौष शक्संवत् 1942

सितंबर 2022 आश्विन शक्संवत् 1944

मार्च 2024 चैत्र शक्संवत् 1946

दिसंबर 2024 शक्संवत् अग्रहायण 1946

PD 15T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2016

₹ 85.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम.
पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग,
नवी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा डी.पी.
प्रिंटिंग एवं बाईंडिंग, बी-149, ओखला-I, ए-1,
नई दिल्ली- 110020 द्वारा मुद्रित।

□ प्रकाशक की पूर्ण अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को
छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, प्रशीरी, फोटोप्रिलिंग, रिकॉर्डिंग अथवा
किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा
प्राप्ताण वर्जित है।

□ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्ण
अनुमति के बिना यह पुस्तक आगे मूल आवरण अथवा जिल्द के
अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या
किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

□ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पुष्ट पर मुद्रित है। बड़ की मुहर अथवा
चिपकाई गई पर्ची (स्टीकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी
संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैप्स

श्री अरविंद मार्ग

नवी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेती एम्बेंशन, होटेलेकरे

बनाशकरी III इस्टेट

बैंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवीनीवन द्रस्ट भवन

डाकघर नवीनीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी.कैप्स

निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहाड़ी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781021

फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम.वी. श्रीनिवासन

मुख्य संपादक : विज्ञान सुतार

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : जहान लाल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार

संपादक : रेखा अग्रवाल

सहायक उत्पादन अधिकारी : प्रकाश वीर सिंह

आवरण

अमित श्रीवास्तव

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु
संस्कृत - शिक्षणार्थमादर्श - पाठ्यक्रम - पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य
द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्मय
पाठ्यपुस्तकानि निर्मायन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे माध्यमिकस्तरीयच्छात्राणां
संस्कृतव्याकरणसम्बन्धिकाठिन्यमपाकर्तुं द्वादशाध्यायेषु प्राक्तनसामाजिक-
विज्ञानमानविकीशिक्षाविभागेन निर्मितस्य व्याकरणवीथिः नामपुस्तकस्य
संशोधितं परिवर्धितं च संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र वर्णविचारसंज्ञासन्धिशब्द-
धातुरूपोपसर्गाव्ययप्रत्ययसमारचनाप्रयोगानां परिचयप्रदानेन सह छात्रेषु
संस्कृतभाषाकौशलानां विकासोऽप्यस्माकं लक्ष्यम्। पुस्तकमिदं पठित्वा छात्राः
संस्कृतस्य प्रयोगे दक्षाः भवेयुः, इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः
अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति
परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं
अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

हृषिकेश सेनापति

निदेशकः

राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

नवदेहली

नवम्बर 2016

not to be republished
© NCERT

भूमिका

व्याकरणशास्त्र अनादिकाल से भारतीय चिन्तन का अनिवार्य अङ्ग रहा है। प्रातिशाख्य तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में पदगत सन्धि, समास, आगम, लोप, वर्ण-विकार, प्रकृति तथा प्रत्ययों का विवेचन प्राप्त होता है। निरुक्तकार यास्क का योगदान इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इनके द्वारा की गई नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात तथा क्रिया आदि की व्याख्या व्याकरण के परवर्ती आचार्यों (पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि) के लिए भी उपयोगी रही है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत भाषा में लिखित शास्त्रों के सम्यक् अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि व्याकरण भाषा को शुद्ध बनाकर उसका समुचित प्रयोग सिखाता है। व्याकरण शब्द (वि + आ + कृ + ल्युट्) से निष्पन्न है। **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः** अनेन इति व्याकरणम् अर्थात् शब्दों की व्युत्पत्ति करने वाले, प्रकृति एवं प्रत्यय का निर्धारण करने वाले तथा उनके शुद्ध स्वरूप का विवेचन करने वाले शास्त्र को व्याकरणशास्त्र कहते हैं। अति प्राचीन काल से शास्त्रों में व्याकरण का प्रमुख स्थान है — मुखं व्याकरणं स्मृतम्। संस्कृत भाषा में व्याकरणशास्त्र का जितना सूक्ष्म तर्कपूर्ण एवं विस्तृत विवेचन हुआ है उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ है। वेदों के सम्यक् अध्ययन, अर्थ बोध तथा वेद मंत्रों की व्याख्या के लिए वेदाङ्गों का ज्ञान अनिवार्य है। वेदाङ्ग छह हैं —

शिक्षा व्याकरणं छन्दो, निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडज्ञानि, वेदस्याहुर्पनीषिणः॥

1. शिक्षा, 2. व्याकरण, 3. छन्द, 4. निरुक्त, 5. ज्योतिष, और 6. कल्प।

व्याकरण की सहायता से ही हम वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों के साथ-साथ भास, कालिदास, माघ, श्रीहर्ष, भवभूति, बाण एवं जगन्नाथ प्रभृति विद्वानों की कृतियों का रसास्वादन करते हैं।

संस्कृत वाड्मय (वैदिक एवं लौकिक) की रक्षा करना व्याकरण का प्रथम प्रयोजन है, जैसा कि महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में कहा है—
“रक्षोहागमलघ्वसन्देहा: प्रयोजनम्”।

व्याकरण ऐसी शक्ति प्रदान करता है जिसके द्वारा सारे श्रुत और अश्रुत शब्दों तथा पठित और अपठित वाड्मय का रहस्य अल्पकाल में ही समझा जा सकता है। शब्दों का असंदिग्ध ज्ञान व्याकरण से ही सम्भव है। धनवान् शब्द शुद्ध है या धनमान् बुद्धिमती शब्द शुद्ध है या बुद्धिवती इस प्रकार के सन्देह को वैयाकरण ही दूर कर सकता है, क्योंकि वह जानता है कि अशुद्ध पद का प्रयोग अनिष्ट का कारण बन जाता है।

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।

स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥

(पाणिनीय शिक्षा)

व्याकरणशास्त्र के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए किसी ने ठीक ही कहा है—

यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठ पुत्र! व्याकरणम्।

स्वजनः श्वजनो माभूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत्॥

संस्कृत व्याकरण की परम्परा

संस्कृत व्याकरण की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितनी वैदिक संहिता। तैत्तिरीय संहिता में उल्लेख है कि इन्द्र ने संस्कृत भाषा का प्रथम व्याकरण रचा। पतञ्जलि के महाभाष्य में सङ्केत मिलता है कि इन्द्र के पहले भी व्याकरणशास्त्र का अस्तित्व था। इन्द्र ने बृहस्पति से व्याकरण-विद्या का अध्ययन किया था।

“बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाचा।”

ऐन्द्र व्याकरण की अविच्छिन्न परम्परा का उल्लेख ऋक्तन्त्र में भी सुलभ है—
“ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्यः
ऋषयः ब्राह्मणेभ्यश्चा”

इससे प्रतीत होता है कि ऐन्द्र सम्प्रदाय व्याकरण का एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय था। इसके समकक्ष व्याकरणशास्त्र का एक दूसरा माहेश्वर सम्प्रदाय भी था जिसके प्रवर्तक महेश्वर थे जिसकी आधारशिला पर पाणिनि ने व्याकरण के भव्य प्रासाद का निर्माण किया।

पाणिनि ने अष्टाध्यायी में आपिशलि, काशकृत्स्न, शाकल्य, स्फोटायन एवं शाकटायन आदि दस वैयाकरणों का नामोल्लेख किया है। इन्होंने अपने से पूर्ववर्ती सभी वैयाकरणों के ग्राह्य विचारों और विवेचनों से परिपूर्ण तत्त्वों को अपने ग्रन्थ में अपनाया है।

पाणिनि का समय सप्तम ई.पू. और पञ्चम ई.पू. शताब्दी के मध्य माना जाता है। इस विषय में विद्वानों का मतैक्य नहीं है। ये उत्तर-पश्चिम भारत में स्थित शालातुर ग्राम के निवासी थे। इनकी माता का नाम दाक्षी था।

सर्वे सर्वपदादेशा दाक्षीपुत्रस्य पाणिने: (वाक्यपदीय)

ये उपर्वष या वर्ष आचार्य के शिष्य थे। ऐसा माना जाता है कि पाणिनि की तपस्या से प्रसन्न होकर महेश्वर ने उन्हें 14 माहेश्वर सूत्रों का उपदेश दिया। उन्होंने के आधार पर पाणिनि ने अत्यन्त संक्षिप्त (सूत्र) शैली में सुदृढ़ व्याकरण लिखा है। यह ग्रन्थ आठ अध्यायों में विभाजित है। अतः इसका नाम अष्टाध्यायी है। प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। प्रत्येक पाद में सूत्र हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग 4000 सूत्र हैं। समस्त सूत्र अध्याय, पाद और सूत्राङ्गों में विभक्त हैं। प्रथम अध्याय में व्याकरण सम्बन्धी संज्ञाओं तथा परिभाषाओं का विवेचन है। द्वितीय अध्याय में समास और कारक के नियम हैं। तृतीय और अष्टम अध्याय में कृदन्त प्रकरण हैं। चतुर्थ तथा पञ्चम अध्याय में स्त्री प्रत्यय और तद्वित का विवेचन है। षष्ठ तथा सप्तम अध्याय में सन्धि, आदेश और स्वर-प्रक्रिया से

सम्बन्धित सूत्र रखे गए हैं। ऐसी किंवदन्ती है कि इनकी मृत्यु व्याघ्र (व्याघ्रो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः — पञ्चतन्त्र) के आक्रमण द्वारा त्रयोदशी तिथि को हुई थी।

द्वितीय वैयाकरण कात्यायन हैं, जिन्हें वररुचि भी कहा जाता है। इनका समय 400 ई.पू. से 300 ई.पू. के मध्य माना जाता है। ये दाक्षिणात्य थे। इन्होंने पाणिनि द्वारा रचित लगभग 1250 सूत्रों की आलोचनात्मक व्याख्या की है, जो वार्तिक के नाम से प्रसिद्ध है। वार्तिकों की संख्या प्रायः 4000 है।

पाणिनि की व्याकरण परम्परा का परिवर्तन एवं परिवर्धन करने वाले महान् वैयाकरण पतञ्जलि हैं। इनका समय दूसरी शताब्दी ई.पू. है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ महाभाष्य है। कात्यायन के वार्तिकों की प्रश्नोत्तर-शैली में समीक्षा करते हुए पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी पर भाष्य लिखा है। अष्टाध्यायी के अध्याय, पाद और सूत्रक्रम में ही पतञ्जलि ने अपने भाष्य का क्रम रखा है। इसका विभाजन आहिकों में है। प्रथम पस्पशाहिक में व्याकरण की आवश्यकता आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण विवेचन है। वार्तिकों की समीक्षा तथा शङ्खाओं के समाधान के साथ उपयोगी वार्तिकों को सहर्ष स्वीकार तथा अनुपयुक्त आलोचनाओं का खण्डन किया है। इस ग्रन्थ में तत्कालीन सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का प्रचुर एवं मनोरम परिचय प्राप्त होता है। महाभाष्य पर कैथ्यट की प्रदीप और नागेश की उद्योत टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। व्याकरणशास्त्र में पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि को त्रिमुनि (मुनित्रय) संज्ञा से अभिहित किया गया है।

काशिका और न्यास

पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि के पश्चात् व्याकरण नियमों को बोधगम्य बनाने के लिए विविध टीका-ग्रन्थों का युग प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में सातवीं ईसवी में जयादित्य और वामन ने अष्टाध्यायी पर एक टीका लिखी जो काशिका वृत्ति के नाम से प्रसिद्ध है। काशिका पर जिनेन्द्र बुद्धि ने न्यास और हरदत्त ने पदमञ्जरी नामक उपटीकाएँ लिखीं।

प्रक्रिया ग्रन्थ

टीकाओं और उपटीकाओं के बाद पाणिनीय सूत्रों की नवीन पद्धति की ओर वैयाकरणों का ध्यान आकर्षित हुआ। धर्मकीर्ति ने रूपावतार ग्रन्थ लिखा जिसमें अष्टाध्यायी के सूत्रों को विभिन्न प्रकरणों में विभक्त कर सम्पादित किया गया है। सन् 1350 ई. में विमल सरस्वती ने रूपमाला और 1400 ई. में पं. रामचन्द्र ने प्रक्रिया कौमुदी नामक ग्रन्थ की रचना की। 1630 ई. के लगभग भट्टोजी दीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी की रचना की। इस पर स्वयं भट्टोजी दीक्षित ने प्रौढ़मनोरमा नाम की टीका लिखी। इसी ग्रन्थ पर पण्डितराज जगन्नाथ ने मनोरमा कुचमर्दिनी नाम से व्याख्या प्रस्तुत की है। सिद्धान्त कौमुदी पर नागेशभट्ट ने लघुशब्देन्दुशेखर नामक प्रौढ़ ग्रन्थ लिखा। सिद्धान्त कौमुदी की दो अन्य प्रसिद्ध टीकाएँ - तत्त्वबोधिनी और बालमनोरमा हैं। आचार्य वरदराज ने सिद्धान्तकौमुदी को संक्षिप्त करते हुए लघुसिद्धान्त कौमुदी एवं मध्यसिद्धान्त कौमुदी की रचना की, जो व्याकरण के प्रारम्भिक छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ हैं।

उपर्युक्त समस्त ग्रन्थ प्रायः व्याकरण के व्युत्पत्ति पक्ष को लक्ष्य में रखकर लिखे गए हैं। व्याकरण के दार्शनिक पक्ष को लेकर लिखे गए ग्रन्थों में— भर्तृहरि का वाक्यपदीय, कौण्डभट्ट का वैयाकरणभूषणसार तथा नागेशभट्ट की लघुमञ्जूषा और स्फोटवाद प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा के आलोक में माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर पूर्व में प्रकाशित व्याकरणवीथि: पुस्तक का यह संशोधित संस्करण है। इसमें 12 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में ‘वर्ण विचार’, द्वितीय में ‘संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण’, तृतीय में ‘सन्धि’, चतुर्थ में ‘शब्दरूप सामान्य परिचय’ पंचम में ‘धातुरूप सामान्य परिचय’ षष्ठ में ‘उपसर्ग’, सप्तम में ‘अव्यय’, अष्टम में ‘प्रत्यय’, नवम में ‘समास परिचय’, दशम में ‘कारक और विभक्ति’ तथा एकादश अध्याय में ‘वाच्य परिवर्तन’ पर उपयोगी सामग्री दी गई है। इसके द्वादश अध्याय में ‘रचना प्रयोग’ (संस्कृत में

पत्र, अपठित अनुच्छेदों पर संस्कृत में प्रश्नोत्तर, अनुच्छेद लेखन तथा लघु निबंध) दिए गए हैं। पुस्तक के ‘परिशिष्ट’ भाग में ‘शब्दरूपाणि’ (अजन्त, हलन्त, सर्वनाम तथा संख्यावाची शब्द) एवं ‘धातुरूपाणि’ गणों के अनुसार पर्याप्त मात्रा में दी गई है, जिससे छात्रों को शब्द रूप तथा धातु रूप सम्बन्धी समस्या के लिए इधर-उधर भटकना न पड़े। इस तरह इस पुस्तक में संस्कृत व्याकरण के आधारभूत नियमों का परिचय देते हुए उपयोगी अभ्यासचारिका द्वारा छात्रों के व्याकरण ज्ञान को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है कि यह पुस्तक माध्यमिक स्तर के छात्रों की संस्कृत व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयों का समाधान करने में सफल होगी।

संपादक

पाठ्यपुस्तक समीक्षा कार्यगोष्ठी के सदस्य

आभा झा, टी.जी.टी. (संस्कृत), सर्वोदय बाल उ.मा. विद्यालय, जे-ब्लाक, साकेत, नयी दिल्ली

पतञ्जलि कुमार भाटिया, रीडर (संस्कृत), पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नेहरू नगर, नयी दिल्ली

पुरुषोत्तम मिश्र, टी.जी.टी. (संस्कृत), राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, जहाँगीर पुरी, दिल्ली

यदुनाथ प्रसाद दुबे, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, भवन्स मेहता कॉलेज, भरवारी, कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश

योगेश्वर दत्त शर्मा, रीडर (संस्कृत), (अवकाश प्राप्त) हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राजेश्वर मिश्र, रीडर, संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

रामनाथ झा, असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत), स्पेशल सेंटर फॉर संस्कृत स्टडीज, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

लता अरोरा, टी.जी.टी. (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर-IV, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली

हरिराम मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत), स्पेशल सेंटर फॉर संस्कृत स्टडीज, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय, भाषा शिक्षा विभाग

उर्मिल खुंगर, सिलेक्शन ग्रेड लेक्चरर (सेवानिवृत्त), संस्कृत

कमलाकान्त मिश्र, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), संस्कृत

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, प्रोफेसर, संस्कृत (समन्वयक एवं संपादक)

जतीन्द्र मोहन मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत (सह संपादक)

भारत का संविधान उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अधिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) “प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य” के स्थान पर प्रतिस्थापित।

2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) “राष्ट्र की एकता” के स्थान पर प्रतिस्थापित।

विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक्	<i>iii</i>
भूमिका	<i>v</i>
अध्याय	
प्रथम वर्ण विचार	1-8
द्वितीय संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण	9-12
तृतीय सन्धि	13-34
1. स्वर (अच्) सन्धि	13
2. व्यञ्जन (हल्) सन्धि	22
3. विसर्ग सन्धि	28
चतुर्थ शब्दरूप सामान्य परिचय	35-40
पंचम धातुरूप सामान्य परिचय	41-48
षष्ठ उपसर्ग	49-53
सप्तम अव्यय	54-60
अष्टम प्रत्यय	61-100
1. कृत् प्रत्यय	61
2. तद्वित प्रत्यय	89
3. स्त्री प्रत्यय	98
नवम समास परिचय	101-109
दशम कारक और विभक्ति	110-123
एकादश वाच्य परिवर्तन	124-128
द्वादश रचना प्रयोग	129-153
1. पत्रम्	129
2. दूरभाषवार्ता	133
3. अपठित गद्यांश	134

4. अनुच्छेदलेखनम्	141
5. निबन्धावली	143
परिशिष्ट	
I. शब्दरूपाणि	154-178
i. स्वरान्त शब्दरूप	154
ii. व्यञ्जनान्त शब्दरूप	160
iii. सर्वनाम	165
iv. संख्यावाची शब्द	173
II. धातुरूपाणि	179-228



0974CH01

प्रथम अध्याय

वर्ण विचार

भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। पाणिनि ने वर्णमाला को 14 सूत्रों में प्रस्तुत किया है। परंपरा के अनुसार महेश्वर ने अपने नृत्य की समाप्ति पर जो 14 बार डमरू बजाया, उससे ये 14 (ध्वनियाँ) सूत्र पाणिनि को प्राप्त हुए—

* नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।

उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम् ॥

ये सूत्र इस प्रकार हैं—

1. अइउण् (अ, इ, उ)
2. ऋलृक् (ऋ, लृ)
3. एओङ् (ए, ओ)
4. ऐऔच् (ऐ, औ)
5. हयवरट् (ह, य, व, र)
6. लण् (ल्)
7. जमङ्गणनम् (ज, म्, ङ्, ण्, न्)
8. झङ्गञ् (झ्, झ्)
9. घढधष् (घ्, ढ्, ध्)
10. जबगडदश् (ज्, ब्, ग्, ड्, द्)
11. खफछठथचटतव् (ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्)

* दशरूपक के अनुसार— नृत्त और नृत्य में भेद होता है। नृत्त भाव पर आश्रित होता है, जबकि नृत्य ताल एवं लय पर आश्रित होता है।

12. कपय् (क्, प्)
13. शष्षसर् (श्, ष्, स्)
14. हल् (ह्)

प्रत्येक सूत्र के अन्त में हल् वर्ण का प्रयोग प्रत्याहार बनाने के उद्देश्य से किया गया है (जैसे— अइउण् में 'ण्' हल् वर्ण है)। इन्हें प्रत्याहारों के अन्तर्गत आने वाले वर्णों के साथ सम्मिलित नहीं किया जाता।

प्रत्याहार

माहेश्वर सूत्रों के आधार पर विभिन्न प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है। प्रत्याहार दो वर्णों से बनता है, जैसे— अच्, इक्, यण्, अल्, हल्, इत्यादि। इन प्रत्याहारों में आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के मध्य आने वाले सभी वर्णों की गणना की जाती है। प्रत्याहार के अन्तर्गत आदि वर्ण तो परिगणित होता है, किन्तु अन्तिम वर्ण को छोड़ दिया जाता है। समझने के लिए कुछ प्रत्याहार आगे दिए जा रहे हैं—

यथा— अच् = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ — यहाँ प्रत्याहार के आदि वर्ण 'अ' का परिगणन किया गया है तथा अन्तिम वर्ण 'च्' को छोड़ दिया गया है।

(क) **हल्** (पाँचवें सूत्र के प्रथम वर्ण 'ह्' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

ह्, य्, व्, र्, ल्, ज्, म्, ड्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ङ्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष् तथा स्।

(ख) **इक्** (प्रथम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'इ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) इ, उ, ऋ तथा लृ।

(ग) **अक्** (प्रथम सूत्र के प्रथम वर्ण 'अ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) अ, इ, उ, ऋ तथा लृ।

(घ) **झल्** (अष्टम सूत्र के प्रथम वर्ण 'झ' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

झ्, भ्, घ्, ह्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स् तथा हैं।

- (ङ) **यण्** (पञ्चम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'य' से लेकर षष्ठि सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ण्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) य्, व्, र् तथा ल्।
- सन्धि आदि के नियमों को समझने के लिए प्रत्याहार ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।
 - वर्ण दो प्रकार के होते हैं— स्वर तथा व्यज्जन।

स्वर (अच्)— जो (वर्ण) किसी अन्य (वर्ण) की सहायता के बिना ही बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद होते हैं— हस्त, दीर्घ तथा प्लुत

1. **हस्त स्वर**— जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उसको हस्त स्वर कहते हैं। ये संख्या में पाँच हैं— अ, इ, उ, ऋ तथा ल्। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर**— जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगे उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या आठ है— आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ तथा औ। इनमें से 'ल्' ध्वनि का दीर्घ रूप 'लृ' केवल वेदों में प्राप्त होता है। अन्तिम चार वर्णों को संयुक्त वर्ण (स्वर) भी कहते हैं, क्योंकि ए, ऐ, ओ तथा औ दो स्वरों के मेल से बने हैं।

उदाहरण —

अ+इ=ए अ+ए=ऐ अ+उ=ओ अ+ओ=औ

3. **प्लुत स्वर**— जिस स्वर के उच्चारण में तीन या उससे अधिक मात्राओं का समय लगे उसे प्लुत कहते हैं। जब किसी व्यक्ति को दूर से पुकारते हैं तब सम्बोधन पद के अन्तिम वर्ण को तीन मात्रा का समय लगाकर बोलते हैं, उसे ही प्लुत स्वर कहते हैं। लिपि में प्लुत स्वर को 'ऽ' की संख्या से दिखाया जाता है, उदाहरण के लिए एहि कृष्णऽ अत्र गौश्चरति। 'ओऽम्' के ओकार का उच्चारण सर्वत्र प्लुत ही होता है।

सभी हस्त, दीर्घ एवं प्लुत स्वर वर्ण अनुनासिक एवं निरनुनासिक भेद से द्विविध हैं।

अनुनासिक—जिस स्वर के उच्चारण में मुख के साथ नासिका की भी सहायता ली जाती है, उसे अनुनासिक स्वर कहते हैं।

यथा— अँ. एँ इत्यादि समस्त स्वर वर्ण।

निरनुनासिक— जो स्वर केवल मुख से उच्चारित होता है, वह निरननासिक है।

व्यञ्जन (हल्)

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता, उन्हें व्यञ्जन या हल् कहते हैं। स्वर रहित व्यञ्जन को लिखने के लिए वर्ण के नीचे हल् चिह्न () लगाते हैं। सम्पूर्ण व्यञ्जन निम्न तालिका में दर्शाए गए हैं—

उदाहरण —

क् =	क् ख् ग् घ् ङ्	क वर्ग
च् =	च् छ् ज् झ् ञ्	च वर्ग
ट् =	ट् ठ् ड् ढ্	ट वर्ग
त् =	त् थ् द् ध্	त वर्ग
प् =	प् फ্ ब্ भ্	प वर्ग

व्याकरण सम्प्रदाय में इन पाँच वर्गों को क, च, ट, त, प नाम से जाना जाता है।

युरलव् (अन्तःस्थ)

श् ष् स् ह्

1. स्पर्श— उपर्युक्त 'क्' से 'म्' तक के 25 वर्णों को स्पर्श कहते हैं। इनके उच्चारण के समय जिहा मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती है। प्रत्येक वर्ग के अन्तिम वर्ण— ड्, ब्, प्, न् और म् को अनुनासिक भी कहा जाता है, क्योंकि इनका उच्चारण मुख के साथ नासिका से भी होता है।

2. **अन्तःस्थ**— य्, र्, ल् और व् वर्णों को अन्तःस्थ कहते हैं। इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।
3. **ऊष्म**— श्, ष्, स्, ह् वर्णों को ऊष्म कहते हैं।

अनुस्वार

इसका उच्चारण नासिका मात्र से होता है। यह सर्वथा स्वर के बाद ही आता है।

यथा— अहम् - अहं सामान्यतया 'म्' व्यञ्जन वर्ण से पहले अनुस्वार (‘) में परिवर्तित होता है।

1. **विसर्ग (ः)**— इसका उच्चारण किञ्चित् 'ह्' के सदृश किया जाता है; इसका भी प्रयोग स्वर के बाद ही होता है।
यथा— रामः, देवः, गुरुः।
2. **संयुक्त व्यञ्जन**— दो व्यञ्जनों के संयोग से बने वर्ण को संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं।

उदाहरण—

- i) क् + ष् = क्ष्
- ii) त् + र् = त्र्
- iii) ज् + ज् = झ्

उच्चारण स्थान

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ एवं नासिका को उच्चारण स्थान कहते हैं। वर्णों का उच्चारण करने के लिए फेफड़े से निकली निःश्वास वायु इन स्थानों का स्पर्श करती है। कुछ वर्णों का उच्चारण एक साथ दो स्थानों से भी होता है। वर्णों के उच्चारण स्थानों को अग्रिम तालिका से समझा जा सकता है—

स्थान	स्वर	व्यञ्जन			अयोगवाह	संज्ञा
		स्पर्श	अन्तःस्थ	ऊष्म		
कण्ठ	अ, आ	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	य्	ह्	:	कण्ठ्य
तालु	इ, ई	च्, छ्, झ्, झूँ	र्	श्		तालव्य
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट्, टूँ, ड्, डूँ	ल्	ष्		मूर्धन्य
दन्त	लृ	त्, थ्, द्, ध्, न्		स्	*	दन्त्य
ओष्ठ	उ, ऊ	प्, फ्, ब्, भ्, म्			×प, ×फ	ओष्ठ्य
नासिका	अनुनासिक स्वर	ङ्, ब्, ण्, न्, म्			उपधानीय	
कण्ठतालु	ए, ऐ		व्		•;	नासिक्य
कण्ठोष्ठ	ओ, औ				#	कण्ठतालव्य
दन्तोष्ठ						कण्ठोष्ठ्य
जिह्वामूल					×क, ×ख	दन्तोष्ठ्य
						जिह्वामूलीय

सम्बद्ध स्थानों के साथ नासिका से भी पञ्चम वर्णों का उच्चारण होता है।

प्रयत्न

फेफड़े से निकली निःश्वास वायु को मुख, नासिका तथा कण्ठ आदि स्थानों से स्पर्श करते हुए मनुष्य द्वारा अभीष्ट वर्णों के उच्चारणार्थ किए गए यन्त्र को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न के दो भेद होते हैं— आभ्यन्तर तथा बाह्य। वर्णों के उच्चारण काल में मुख के अन्दर मनुष्य की चेष्टापरक क्रिया को आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं—

स्पृष्ट—वर्णों के उच्चारण काल में जब जिह्वा के विभिन्न भागों द्वारा मुख के अन्दर के विभिन्न स्थानों को स्पर्श किया जाता है तो जिह्वा के इस प्रयत्न को स्पृष्ट प्रयत्न कहते हैं। 'क' से 'म्' तक सभी व्यञ्जन 'स्पृष्ट' प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

* विसर्ग का भेद उपधानीय (जब विसर्ग के बाद प, फ वर्ण रहते हैं, तब अर्ध विसर्ग उच्चारण होता है, उदाहरण—पुनः पुनः, तपः फलम्)

विसर्ग का भेद जिह्वामूलीय (जब विसर्ग के बाद क, ख वर्ण रहते हैं, तब अर्धविसर्ग उच्चारण होता है, उदाहरण—प्रातः कालः, दुःखम्)

ईषत् स्पृष्ट—वर्णों के उच्चारण काल में जब जिह्वा द्वारा उच्चारण स्थानों को थोड़ा ही स्पर्श किया जाता है, तो जिह्वा के इस प्रयत्न को ईषत् स्पृष्ट कहते हैं। य्, र्, ल्, तथा व्, ईषत् स्पृष्ट से उच्चारित होते हैं।

विवृत्—वर्ण विशेष के उच्चारण काल में जब मुख-विवर खुला रहता है, तो मुख के इस यत्न को विवृत कहते हैं। सभी स्वर 'विवृत' प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

ईषत् विवृत्—वर्णों के उच्चारण काल में जब मुख-विवर थोड़ा खुला रहता है, तो मुख के इस प्रयत्न को ईषत् विवृत कहते हैं। श्, ष्, स्, ह् ईषत् विवृत प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

संवृत्—वर्णों के उच्चारण काल में फेफड़े से निकलने वाले निःश्वास का मार्ग जब बन्द रहता है, तब इसे संवृत कहते हैं। इसका प्रयोग केवल हस्त 'अ' के उच्चारण में होता है।

बाह्य-प्रयत्न—वर्णों के उच्चारण का वह यत्न जो फेफड़े से कण्ठ तक होता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। मुख से बाह्य होने की अपेक्षा से इसे बाह्य कहा जाता है। इसके ग्यारह भेद हैं—

विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित। बाह्य प्रयत्नों के आधार पर वर्णों का विभाजन निम्न तालिका से समझा जा सकता है—

विवार, श्वास, अघोष	संवार, नाद, घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित
'ख्' प्रत्याहार के वर्ण = प्रत्येक वर्ण के प्रथम द्वितीय वर्ण एवं श्, ष्, स् "खरः विवारः श्वासः अघोषाश्च"	'हश्' प्रत्याहार के वर्ण = प्रत्येक वर्ण के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण, अन्तःस्थ एवं ह् "हशः संवारा नादा घोषाश्च"	वर्णों के प्रथम, तृतीय, पंचम वर्ण एवं अन्तःस्थ संज्ञक वर्ण	वर्णों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण एवं ऊम्ब संज्ञक वर्ण	सभी स्वर वर्ण

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितेषु प्रत्याहारेषु परिगणितान् वर्णान् लिखत—

- | | |
|----------------|---------------|
| i) इक् | ii) जश् |
| iii) ऐच् | iv) हश् |
| v) अट् | vi) झश् |

प्र. 2. अधोलिखितानां वर्णानाम् उच्चारणस्थानं लिखत—

- | |
|---------------------------------------|
| i) कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ड्) |
| ii) टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ह्, ण्) |
| iii) पवर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) |
| iv) इ, च्, य्, श् |

प्र. 3. उदाहरणमनुसृत्य वर्णान् पृथक्कृत्य लिखत—

यथा— गजः — ग् + अ + ज् + अ + :

- | | |
|-------------------|-------------------|
| i) कमलम् | ii) भोजनम् |
| iii) गच्छति | iv) अनुपतति |
| v) रावणः | |

प्र. 4. उदाहरणमनुसृत्य वर्णानां संयोजनं कुरुत—

यथा— अ + ह् + अ + म् = अहम्

- | |
|--|
| i) प् + उ + स् + त् + अ + क् + आ + न् + इ |
| ii) प् + अ + ठ् + इ + ष् + य् + आ + म् + इ |
| iii) ग् + ऋ + ह् + अ + म् |
| iv) श् + ओ + भ् + अ + न् + अ + म् |
| v) भ् + अ + व् + इ + त् + अ + व् + य् + अ + म् |

प्र. 5. संयुक्तवर्णान् पृथक्कृत्य पूरयत—

- | | |
|----------------------------|----------------------------|
| i) क्ष = क् + + | ii) त्र = + र् + |
| iii) श्र = + + अ | iv) झ = ज् + झ् + |
| v) ए = अ + | vi) ओ = + उ |



0974CH02

द्वितीय अध्याय

संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण

व्यावहारिक सुविधा के लिए प्रत्येक व्यक्ति या पदार्थ को किसी न किसी नाम से अभिहित किया जाता है। इसी नाम को संज्ञा भी कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में संज्ञाओं एवं परिभाषाओं का बहुत महत्व होता है। इनका प्रयोग लाघव के लिए किया गया है। संज्ञाओं एवं परिभाषाओं को समझने से व्याकरण-प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलती है। कुछ संज्ञाएँ एवं परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं—

आगम

किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्रवत् पास आकर बैठकर उससे संयुक्त हो जाता है, तब वह आगम कहलाता है (मित्रवदागमः), जैसे— वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। यहाँ वृक्ष के 'अ' एवं छाया के 'छ' के मध्य में 'च्' का आगम हुआ है।

आदेश

किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण उसके स्थान पर शत्रु की भाँति आ बैठता है तो वह आदेश कहलाता है (शत्रुवदादेशः), जैसे— यदि + अपि = यद्यपि, यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' आदेश हुआ है। यह आदेश पूर्व वर्ण के स्थान पर अथवा पर वर्ण के स्थान पर हो सकता है। पूर्व तथा पर दोनों वर्णों के स्थान पर दीर्घादि रूप में 'एकादेश' भी होता है।

उपधा

किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व (वर्ण) को उपधा कहते हैं, जैसे— चिन्त् में

'त्' अंतिम वर्ण है और उससे पूर्व 'न्' उपधा है (अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा)। जैसे महत् में अंतिम वर्ण 'त्' से पूर्ववर्ती 'ह' में विद्यमान 'अ' उपधा संज्ञक है।

पद

संज्ञा के साथ सु, औ, जस् आदि नाम पदों में आने वाले 21 प्रत्यय एवं तिप्, तस्, द्वि आदि क्रियापदों में आने वाले 18 प्रत्यय विभक्ति संज्ञक हैं। सु, औ, जस् (अः) आदि तथा धातुओं के साथ ति, तस् (तः) अन्ति आदि विभक्तियों के जुड़ने से सुबन्त और तिडन्त शब्दों की पद संज्ञा होती है (सुस्पिडन्तं पदम्), यथा— रामः, रामौ, रामा; तथा भवति, भवतः, भवन्ति। केवल पठ्, नम्, वद् तथा राम इत्यादि को पद नहीं कह सकते। संस्कृत भाषा में जिसकी पद संज्ञा नहीं होती उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है (अपदं न प्रयुञ्जीत)।

निष्ठा

क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं— 'क्तक्तवतू निष्ठा'। इनके योग से भूतकालिक क्रियापदों का निर्माण किया जाता है, जैसे— गतः, गतवान् आदि।

विकरण

धातु और तिड् प्रत्ययों के बीच में आने वाले शप् (अ) श्यन् (य) श्नु (नु), आदि प्रत्यय विकरण कहलाते हैं, यथा— भवति में भू + ति के मध्य में 'शप्' हुआ है (भू + अ + ति)। विकरण भेद से ही धातुएँ 10 विभिन्न गणों में विभक्त होती हैं।

संयोग

संस्कृत में 'संयोग' एक महत्वपूर्ण संज्ञा के रूप में प्राप्त होता है। यह एक पारिभाषिक शब्द है। महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में इसका अर्थ "हलोऽनन्तराः संयोगः" किया है। अर्थात् स्वर रहित व्यञ्जनों (हल्) के व्यवधान रहित सामीक्षा भाव को संयोग कहते हैं, यथा— महत्व में त्, त् तथा व् का संयोग है। इसी प्रकार—

- रामः उद्यानं गच्छति। उद्यानम् में 'द्' और 'य्' तथा गच्छति में 'च्' और 'छ्' का संयोग है।

- अयं रामस्य ग्रन्थः अस्ति। रामस्य में 'स्' और 'य्', ग्रन्थः में 'ग्' + 'र्' तथा 'न्' और 'थ्' तथा अस्ति में 'स्' और 'त्' का संयोग है।

संहिता

वर्णों के अत्यन्त सामीप्य अर्थात् व्यवधान रहित सामीप्य को संहिता कहते हैं (परः सन्निकर्षः संहिता)। वर्णों की संहिता की स्थिति में ही सन्धिकार्य होते हैं, जैसे— वाक् + ईशः में 'क्' + 'ई' में संहिता (अत्यन्त समीपता) के कारण सन्धि कार्य करने से 'वागीशः' पद बना है।

सम्प्रसारण

यण् (य्, व्, र्, ल्) के स्थान पर इक् (इ, उ,ऋ, लृ) के प्रयोग को सम्प्रसारण कहते हैं (इयणः सम्प्रसारणम्)। जैसे— यज्-इज् → इज्यते, वच्-उच् → उच्यते इत्यादि।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितपदेभ्यः आगमवर्णन्, आदेशवर्णन् वा स्पष्टीकृत्य पृथक् कुरुत—

यथा— वृक्ष + छाया - वृक्षछाया — च् (आगमः)

यदि + अपि - यद्यपि - य् (आदेशः)

- i) इति+ आदि - इत्यादि — (.....)
- ii) तरु+ छाया - तरुच्छाया — (.....)
- iii) अनु + छेदः - अनुच्छेदः — (.....)
- iv) अनु+ इच्छति - अन्विच्छति — (.....)

प्र. 2. अधोलिखिततालिकातः पदसंज्ञकपदानि पृथक् कृत्वा लिखत—
सः, पठति, हरि, दृश, हसामि, चल्, मुनी, चलति, ते।

प्र. 3. अधोलिखिततालिकायां प्रदत्तपदेषु संयोगस्य उदाहाणानि पृथक् कृत्वा लिखत—

महेशः, उष्णः, वागीशः, महत्त्वम्, सज्जनः, क्लेशः, पावकः।



0974CH03

तृतीय अध्याय

सन्धि

व्याकरण के संदर्भ में 'सन्धि' शब्द का अर्थ है वर्ण विकार। यह वर्ण विधि है। दो पदों या एक ही पद में दो वर्णों के परस्पर व्यवधानरहित सामीप्य अर्थात् संहिता में जो वर्ण विकार (परिवर्तन) होता है, उसे सन्धि कहते हैं, यथा— विद्या + आलयः = विद्यालयः। यहाँ पर विद्यु + आ + आ + लयः में आ + आ की अत्यन्त समीपता के कारण दो दीर्घ वर्णों के स्थान पर एक 'आ' वर्ण रूप दीर्घ एकादेश हो गया है। सन्धि के मुख्यतया तीन भेद होते हैं—

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि),
2. व्यंजन सन्धि (हल् सन्धि), एवं
3. विसर्ग सन्धि

1. स्वर (अच्) सन्धि

दो स्वर वर्णों की अत्यंत समीपता के कारण यथाप्राप्त वर्ण विकार को स्वर सन्धि कहते हैं। इसके निम्नलिखित भेद हैं—

- i) **दीर्घ सन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)**— यदि हस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा 'ऋ' स्वरों के पश्चात् हस्व या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ तथा ऋ हो जाते हैं।

अ/आ + आ/अ = आ

इ/ई + ई/इ = ई

उ/ऊ + ऊ/उ = ऊ

ऋ/ऋू + ऋू/ऋ = ऋू

उदाहरण—

पुस्तक + आलयः

=

पुस्तकालयः

देव + आशीषः

=

देवाशीषः

दैत्य + अरि:	=	दैत्यारि:
च + अपि	=	चापि
विद्या + अर्थी	=	विद्यार्थी
गिरि + इन्द्रः	=	गिरीन्द्रः
कपि + ईशः	=	कपीशः
मही + ईशः	=	महीशः
नदी + ईशः	=	नदीशः
लक्ष्मी + ईश्वरः	=	लक्ष्मीश्वरः
सु + उक्तिः	=	सूक्तिः
भानु + उदयः	=	भानूदयः
पितृ + ऋणम्	=	पितृणम्

- ii) **गुण* सन्धि (आद् गुणः)** — यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए दोनों के स्थान पर ए एकादेश हो जाता है। इसी तरह यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ओ' एकादेश हो जाते हैं। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद यदि 'ऋ' आए तो दोनों के स्थान पर 'अर्' एकादेश हो जाता है।

उदाहरण —

अ/आ + इ/ई	=	ए
उप + इन्द्रः	=	उपेन्द्रः
देव + इन्द्रः	=	देवेन्द्रः
गण + ईशः	=	गणेशः
महा + ईशः	=	महेशः
नर + ईशः	=	नरेशः
सुर + ईशः	=	सुरेशः

* अ, ए एवं ओ वर्णों को 'गुण' वर्ण कहा जाता है।

लता + इव	=	लतेव
गंगा + इति	=	गंगेति
अ/आ + उ/ऊ	=	ओ
भाग्य + उदयः	=	भाग्योदयः
सूर्य + उदयः	=	सूर्योदयः
नर + उत्तमः	=	नरोत्तमः
हित + उपदेशः	=	हितोपदेशः
महा + उत्सवः	=	महोत्सवः
गंगा + उदकम्	=	गंगोदकम्
यथा + उचितम्	=	यथोचितम्
गंगा + ऊर्मि:	=	गंगोर्मि:
महा + ऊरुः	=	महोरुः
नव + ऊढा	=	नवोढा
अ/आ + ऋ/ऋ	=	अर्
देव + ऋषि	=	देवर्षि:
ग्रीष्म + ऋतुः	=	ग्रीष्मर्तुः
वर्षा + ऋतु	=	वर्षर्तुः

- iii) **वृद्धि* सन्धि (वृद्धिरेचि)**— यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' एकादेश हो जाता है। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के स्थान पर 'औ' एकादेश हो जाता है।
- अ/आ + ए/ऐ = ऐ**

उदाहरण—

मम + एव	=	ममैव
एक + एकम्	=	एकैकम्
तव + एव	=	तवैव

* आ, ऐ एवं औ वर्णों को 'वृद्धि' वर्ण कहते हैं।

अद्य + एव	=	अद्यैव
लता + एव	=	लतैव
तथा + एव	=	तथैव
सदा + एव	=	सदैव
देव + ऐश्वर्यम्	=	देवैश्वर्यम्
आत्म + ऐक्यम्	=	आत्मैक्यम्
अ/आ + ओ/औ	=	औ
जल + ओघः	=	जलौघः
मम + ओषधिः	=	ममौषधिः
नव + ओषधिः	=	नवौषधिः
विद्या + औचित्यम्	=	विद्यौचित्यम्
आत्म + औत्सुक्यम्	=	आत्मौत्सुक्यम्

- iv) यण् संधि (इको यणचि) — इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के स्थान पर यण् (यु, व्, र्, ल्) हो जाता है। जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ तथा लृ के बाद कोई असमान स्वर आए तो 'इ' को यु, उ को व्, ऊ, ऋ को 'र्' तथा 'लृ' को 'ल्' आदेश हो जाता है।

उदाहरण—

यदि + अपि	=	यद्यपि
इति + आदि	=	इत्यादि
अति + आचारः	=	अत्याचारः
इति + अवदत्	=	इत्यवदत्
नदी + आवेगः	=	नद्यावेगः
सखी + ऐश्वर्यम्	=	सख्यैश्वर्यम्
सु + आगतम्	=	स्वागतम्
अनु + अयः	=	अन्वयः
अनु + एषणम्	=	अन्वेषणम्

मधु + अरि:	=	मध्वरि:
वधू + आगमनम्	=	वध्वागमनम्
पितृ + आदेशः	=	पित्रादेशः
पितृ + उपदेशः	=	पित्र्युपदेशः
मातृ + आज्ञा	=	मात्राज्ञा
लृ + आकृतिः	=	लाकृतिः

- v) **अयादि सन्धि (एचोऽयवायावः)**— जब ए, ऐ, ओ तथा औ के बाद कोई स्वर आए तो 'ए' को अय्, 'ऐ' को आय्, 'ओ' को अव् तथा 'औ' को आव् आदेश हो जाते हैं। इसे अयादिचतुष्टय के नाम से जाना जाता है।

उदाहरण—

ने + अनम्	=	नयनम्
शे + अनम्	=	शयनम्
नै + अकः	=	नायकः
भो + अनम्	=	भवनम्
भानो + ए	=	भानवे
पौ + अकः	=	पावकः
नौ + इकः	=	नाविकः
भौ + उकः	=	भावुकः

- vi) **पूर्वरूप सन्धि (एडः पदान्तादति)**— पूर्वरूप सन्धि को अयादि सन्धि का अपवाद कहा जा सकता है। पद के अन्त में स्थित ए, ओ के बाद यदि हस्त 'अ' आए तो 'ए+अ' दोनों के स्थान पर पूर्वरूप सन्धि 'ए' एकादेश तथा 'ओ+अ' दोनों के स्थान पर 'ओ' एकादेश हो जाता है। अर्थात् ए-ओ के पश्चात् आने वाला 'अ' अपना रूप ए-ओ में ही (विलीन कर) छुपा देता है। उस विलीन 'अ' का रूप लिपि में अवग्रह चिह्न (३) द्वारा अंकित किया जाता है, जैसे— हरे + अत्र में हरयत्र होना चाहिए था परन्तु 'अ'

'ए' में समा गया और रूप बना होइत्रा यहाँ उच्चारण के समय 'हरेत्र' ही कहा जाता है (अवग्रह का उच्चारण नहीं होता)।

उदाहरण—

ते + अपि	=	तेइपि
हरे + अव	=	हरेइव
वृक्षे + अपि	=	वृक्षेइपि
जले + अस्ति	=	जलेइस्ति
गोपालो (गोपालः) + अहम्	=	गोपालोइहम्
विष्णो + अव	=	विष्णोइव

प्रकृतिभाव

vii) 'प्लुतप्रगृह्णा अचि नित्यम्'—प्रकृतिभाव का अर्थ है सन्धि करने का निषेध करना, अर्थात् प्रकृत वर्णों में विकृति (परिवर्तन) न करके उन्हें ज्यों का त्यों बनाए रखना। वस्तुतः इसे सन्धि का भेद न कहकर सन्धि का अभाव ही कहना चाहिए क्योंकि सन्धि नियम के लागू होने की स्थिति में भी सन्धि कार्य नहीं होता। यदि कोई वर्ण प्लुत या प्रगृह्ण संज्ञक होता है और उसके बाद अच् आता है तो प्लुत एवं प्रगृह्ण वर्णों का सन्धि न होते हुए प्रकृति भाव होता है।

प्रगृह्ण संज्ञा

- (क) ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्
- (ख) अदसो मात्
- (क) ईदन्त, ऊदन्त तथा एदन्त द्विवचन रूपों की प्रगृह्ण संज्ञा होती है। अर्थात् ऐसे द्विवचन, जिनके अन्त में ई, ऊ अथवा ए होता है, उनकी प्रगृह्यसंज्ञा होती है तथा जिनकी प्रगृह्ण संज्ञा होती हैं, उनके बाद अच् होने पर किसी भी प्रकार की सन्धि नहीं होती।

यथा— कवी + इच्छतः, विष्णु + इमौ, बालिके + आगच्छतः, यहाँ पर कवी, विष्णु तथा बालिके ये क्रमशः ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त द्विवचन के रूप होने के कारण प्रगृह्य संज्ञक हैं, अतः यहाँ किसी प्रकार की सन्धि नहीं होती, इसलिए ये कवी इच्छतः, विष्णु इमौ, बालिके आगच्छतः ही रहेंगे, न कि कवीच्छतः इत्यादि।

- (ख) अदस् शब्द के 'म्' के बाद 'ई' या 'ऊ' आए तो वहाँ पर भी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

यथा— अमी + ईशाः, अमू + आसाते। यहाँ पर 'अमी' तथा 'अमू' प्रगृह्य संज्ञक हैं, अतः किसी भी प्रकार की सन्धि नहीं होगी।

- प्लुत वर्ण में प्रकृतिभाव का उदाहरण है, एहि कृष्णः अत्र गौश्चरति। यहाँ पर अ+अ में दीर्घ सन्धि नहीं हुई, क्योंकि सम्बोधन पद 'कृष्ण'
- में 'अ' प्लुत है।

- viii) **पररूप सन्धि (एडि पररूपम्)**— उपसर्ग के 'अ' के पश्चात् यदि 'ए' या 'ओ' आए तो उनका पररूप एकादेश हो जाता है। इस पररूप सन्धि को वृद्धि सन्धि का अपवाद कहा जा सकता है। पररूप कार्य से तात्पर्य है कि जब पूर्वपद का अन्तिम वर्ण अगले शब्द के आदि वर्ण के समान होकर उसमें मिल जाए, जैसे— प्र + एजते = प्रेजते में वृद्धि कार्य प्रैजते होना चाहिए था, लेकिन 'प्र' में स्थित 'अ' की स्थिति 'ए' में ही मिल गई अर्थात् अ+ए इन दोनों के स्थान पर 'ए' एकादेश हो गया है। यहाँ पर 'अ' की अपनी सत्ता ही नहीं बची। अतः प्र + एजते = प्रेजते, उप + ओषति = उपोषति हुआ।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितेषु समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत—

यथा— चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः/ चन्द्रौदयः / चन्द्रुदयः

उत्तरम्— चन्द्रोदयः

- i) मातृ + ऋणम् = मातर्णम् / मातृणम् / मातृणम् -
- ii) यदि + अपि = यद्यपि / यदपि / यदापि -
- iii) मत + ऐक्यम् = मतैक्यम् / मतैक्यम् / मत्येकम् -
- iv) भानु + उदयः = भान्वुदयः / भानुदयः / भानूदयः -
- v) भौ + उकः = भावकः / भाविकः / भावुकः -
- vi) विष्णो + इह = विष्णविह / विष्णवेह / विष्णोह -
- vii) सर्वे + अत्र = सर्वे अत्र / सर्वेऽत्र / सर्व अत्र -
- viii) गङ्गा + इव = गङ्गैव / गङ्गोव / गङ्गोव -

प्र. 2. अधोलिखितेषु सन्धिविच्छेदं रूपं पूरयित्वा सन्धेः नाम अपि लिखत—

यथा— अन्वेषणम् अनु + एषणम् - यण् सन्धि—

- i) तवैव — + एव —
- ii) नदीव — + नदी + —
- iii) केऽपि — + अपि —
- iv) अत्याचारः — + अति + —
- v) शयनम् — + अनम् —
- vi) यथोचितम् — + यथा + —

प्र. 3. यत्र प्रकृति भाव - सन्धिः अस्ति तत्पदं (✓) इति चिह्नेन चिह्नीकुरुत यत्र च नास्ति तत्पदं (×) इति चिह्नेन चिह्नीकुरुत—

- i) नदी एते ()
- ii) वृक्षे अपि ()
- iii) मुनी एतौ ()
- iv) साधू उपरि गच्छतः ()

- v) सखी एषा ()
- vi) मुनी इच्छतः ()
- vii) सभायाम् कवी आगतौ ()
- viii) नदी इयं वहति ()

प्र. 4. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

- i) कवीन्द्रः अद्य नवीनां कवितां श्रावयति।
..... +
- ii) कंसः सर्वेषु अत्याचारम् करोति स्म।
..... +
- iii) गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि सः पापेभ्यः विमुच्यते।
..... +
- iv) यथा रामः पठति तथैव श्यामः पठति।
..... +
- v) वानराः सर्वत्र वृक्षेऽपि कूर्दन्ति।
..... +

2. व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन के पश्चात् स्वर या दो व्यञ्जन वर्णों के परस्पर व्यवधानरहित सामीप्य की स्थिति में जो व्यञ्जन या हल् वर्ण का परिवर्तन हो जाता है, वह व्यञ्जन सन्धि कही जाती है।

i) श्चुत्व (स्तोः श्चुना श्चुः)

- 'स्' या 'त' वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) का 'श्' या 'च' वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, झृ) के साथ (आगे या पीछे) योग होने पर 'स्' का 'श्' तथा 'त' वर्ग का 'च' वर्ग में परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरण—

मनस् + चलति (स् + च् = श्च्)	=	मनश्चलति
रामस् + शेते (स् + श् = शश्)	=	रामशेते
मनस् + चञ्चलम् (स् + च् = श्च्)	=	मनश्चञ्चलम्
हरिस् + शेते (स् + श् = शश्)	=	हरिशेते

'त' वर्ग का 'च' वर्ग

उदाहरण—

सत् + चित् (त् + च् = च्च्)	=	सच्चित्
सत् + चरित्रम् (त् + च् = च्च्)	=	सच्चरित्रम्
उत् + चारणम् (त् + च् = च्च्)	=	उच्चारणम्
सत् + जनः (त्(द्) + ज् = ज्जः)	=	सज्जनः
उत् + ज्वलम् (त्(द्) + ज् = ज्ज्)	=	उज्ज्वलम्
जगत् + जननी (त्(द्) + ज् = ज्ज्)	=	जगज्जननी

ii) ष्टुत्व (ष्टुना ष्टुः)

- यदि 'स्' या 'त' वर्ग का 'ष्' या 'ट' वर्ग (ट, ठ, ड, ढ तथा ण) के साथ (आगे या पीछे) योग हो तो 'स्' का 'ष्' और 'त' वर्ग के स्थान पर 'ट' वर्ग हो जाता है।

उदाहरण— 'स' वर्ग का 'ष्' वर्ग

रामस् + षष्ठः (स् + ष् = ष्ण्)	=	रामषष्ठः
हरिस् + टीकते (स् + ट = ष्ट)	=	हरिष्टीकते
'त' वर्ग का 'ट' वर्ग		

उदाहरण—

तत् + टीका (त् + ट् = द्वृ)	=	तद्वीका
यत् + टीका (त् + ट् = द्वृ)	=	यद्वीका
उत् + डयनम् (त्(द्) + ड् = ड्ड)	=	उड्डयनम्
आकृष् + तः (ष् + त् = ष्ट)	=	आकृष्टः

iii) जश्त्व (झलां जशोऽन्ते)

- पद के अन्त में स्थित झल् के स्थान पर जश् हो जाता है। झलों में वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण तथा श्, ष्, स् तथा ह् कुल 24 वर्ण आते हैं। इस तरह झल् के स्थान पर जश् (ज, ब, ग, ड, द) होता है। वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। ष्, श्, स्, ह् में ष् के स्थान पर 'ड्' आता है। अन्य का उदाहरण प्रायः नहीं मिलता है।

उदाहरण—

वाक् + ईशः (क् + स्वर = तृतीय वर्ण ग् + स्वर) = वागीशः
जगत् + ईशः (त् + स्वर = तृतीय वर्ण द् + स्वर) = जगदीशः
सुप् + अन्तः (प् + स्वर = तृतीय वर्ण ब् + स्वर) = सुबन्तः
अच् + अन्तः (च् + स्वर = तृतीय वर्ण ज् + स्वर) = अजन्तः
दिक् + अम्बरः (क् + स्वर = तृतीय वर्ण ग् + स्वर) = दिगम्बरः
दिक् + गजः (क् + ग् = ग्ण) = दिग्गजः
सत् + धर्मः (त् + ध् = द्व्ध) = सद्धर्मः
अप् + जम् (प् + ज् = ब्ज्) = अब्जम्
चित् + रूपम् (त् + र् = द्व्र) = चिद्रूपम्

iv) चत्वर्व (खरि च)

- यदि वर्गों (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, तथा प वर्ग) के द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ वर्ण के बाद वर्ग का प्रथम या द्वितीय वर्ण या श्, ष्, स् आए तो पहले आने वाला वर्ण अपने ही वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है।

उदाहरण—

$$\text{सद्} + \text{कारः} (\text{द्} + \text{क्} = \text{त्क्}) = \text{सत्कारः}$$

$$\text{लभ्} + \text{स्यते} (\text{भ्} + \text{स्} = \text{प्स्}) = \text{लप्स्यते}$$

$$\text{दिग्} + \text{पालः} (\text{ग्} + \text{प्} = \text{क्प्}) = \text{दिक्पालः}$$

v) अनुस्वार (मोऽनुस्वारः)

- यदि किसी पद के अन्त में 'म्' हो तथा उसके बाद कोई व्यञ्जन आए तो 'म्' का अनुस्वार (‘) हो जाता है।

उदाहरण—

$$\text{हरिम्} + \text{वन्दे} = \text{हरिं वन्दे}$$

$$\text{अहम्} + \text{गच्छामि} = \text{अहं गच्छामि}$$

vi) परस्वर्ण (अनुस्वारस्य यथि परस्वर्णः)

- अनुस्वार के बाद कोई भी वर्गीय व्यञ्जन आए तो अनुस्वार के स्थान पर आगे वाले वर्ण के वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है। यह नियम पदान्त में कभी नहीं भी लगता है।

उदाहरण—

$$\text{पदान्त में -} \quad \text{संस्कृतं पठति}$$

$$\text{संस्कृतम्पठति}$$

$$\text{अं} + \text{कितः} (\text{ं} + \text{क्} = \text{ङ्क}) = \text{अङ्कितः}$$

$$\text{सं} + \text{कल्पः} (\text{ं} + \text{क्} = \text{ङ्क}) = \text{सङ्कल्पः}$$

$$\text{कुं} + \text{ठितः} (\text{ं} + \text{ठ} = \text{ण्ठ}) = \text{कुण्ठितः}$$

$$\text{अं} + \text{चितः} (\text{ं} + \text{च्} = \text{ञ्च}) = \text{अञ्चितः}$$

vii) लत्व (तोर्लि)

- यदि 'त्' वर्ग के बाद 'ल्' आए तो तवर्ग के वर्णों का 'ल्' हो जाता है। किन्तु 'न्' के बाद 'ल्' के आने पर अनुनासिक 'लँ' होता है। 'लँ' का आनुनासिक्य चिह्न पूर्व वर्ण पर पड़ता है।

उदाहरण—

उत् + लङ्घनम् (त् + ल् = ल्ल)	=	उल्लङ्घनम्
तत् + लीनः (त् + ल् = ल्ल)	=	तल्लीनः
उत् + लिखितम् (त् + ल् = ल्ल)	=	उल्लिखितम्
उत् + लेखः (त् + ल् = ल्ल)	=	उल्लेखः
महान् + लाभः (न + ल् = ल्ल)	=	महाल्लाभः
विद्वान् + लिखति (न् + ल् = ल्ल)	=	विद्वाल्लिखति

viii) छत्व (शश्छोऽटि)

- यदि 'श्' के पूर्व पदान्त में किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण हो या र् ल् व् अथवा ह् हो तो श् के स्थान पर 'छ्' हो जाता है।

उदाहरण—

एतत् + शोभनम् (त् + श् = च्छ्)	=	एतच्छोभनम्
तत् + श्रुत्वा (त् + श् = च्छ्)	=	तच्छ्रुत्वा

ix) 'च्' का आगम—(छे च)

- यदि हस्त स्वर के पश्चात् 'छ्' आए तो 'छ्' के पूर्व 'च्' का आगम होता है।

उदाहरण—

तरु + छाया (उ + छ् = उ + च् + छ्)	=	तरुच्छाया
अनु + छेदः (उ + छ् = उ + च् + छ्)	=	अनुच्छेदः
परि + छेदः (इ + छ् = इ + च् + छ्)	=	परिच्छेदः

x) 'र्' का लोप तथा पूर्व स्वर का दीर्घ होना (रो रि)

उदाहरण—

- यदि 'र्' के बाद 'र्' हो तो पहले 'र्' का लोप हो जाता है तथा उसका पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ हो जाता है।

उदाहरण—

$$\begin{array}{lll} \text{स्वर्} + \text{राज्यम्} (\text{र्} + \text{र्} = \text{आ} + \text{र्}) & = & \text{स्वाराज्यम्} \\ \text{निर्} + \text{रोगः} (\text{र्} + \text{र्} = \text{ई} + \text{र्}) & = & \text{नीरोगः} \\ \text{निर्} + \text{रसः} (\text{र्} + \text{र्} = \text{ई} + \text{र्}) & = & \text{नीरसः} \end{array}$$

xi) न् का ण् होना—

- यदि एक ही पद में क्र, र् या ष् के पश्चात् 'न्' आए तो 'न्' का 'ण्' हो जाता है।

उदाहरण— कृष्ण, विष्णु, स्वर्ण, वर्ण इत्यादि।

- अट् अर्थात् अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, लृ, ए, ओ, ऐ, हृ, यृ, वृ, कवर्ग, पवर्ग, आड् तथा नुम् इन वर्णों के व्यवधान में भी यह णत्व विधि प्रवृत्त हो जाती है।

उदाहरण—

$$\begin{array}{lll} \text{नरा} + \text{नाम्} & = & \text{नरणाम्} \\ \text{ऋषी} + \text{नाम्} & = & \text{ऋषीणाम्} \end{array}$$

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. समुचितं सन्धिविच्छेदस्थं पूर्यत—

- i) दिग्म्बरः — + अम्बरः (दिक् / दिग्)
- ii) मच्छ्रः — मत् + (छिरः / शिरः)
- iii) जगदीशः — + ईशः (जगत् / जगद्)
- iv) अयं गच्छति — + गच्छति (अयं / अयम्)
- v) नीरोगः — + रोगः (निर् / नीर्)
- vi) तल्लीनः — तत् + (लिनः / लीनः)

प्र. 2. समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत—

- i) सत् + जनः — सज्जनः / सत्जनः
- ii) तत् + श्रुत्वा — तच्श्रुत्वा / तच्छ्रुत्वा
- iii) विद्वान् + लिखति — विद्वाँलिलिखति / विद्वाँलिलिखति
- iv) सम् + कल्पः — सम्कल्पः / सङ्कल्पः
- v) उत् + लेखः — उल्लेखः / उच्लेखः

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानां यथापेक्षं सन्धिम् अथवा सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

- i) सर्वे जगच्छिवानि कार्याणि कुर्वन्तु।
- ii) यत्पाठे उत् + लिखितम् तत् सर्वं पठता
- iii) नीरोगः जनः सुखी भवति।
- vi) कोकिलः पं + चमे स्वरे गायति।
- v) सः तस्त्वायायाम् पठति।
- vi) मानी मानम् + न त्यजति।

3. विसर्ग सन्धि

विसर्ग (:) के पश्चात् स्वर या व्यञ्जन वर्ण के आने पर विसर्ग के स्थान पर होने वाले परिवर्तन को विसर्ग सन्धि कहते हैं।

- i) **सत्त्व (विसर्जनीयस्य सः)**— यदि विसर्ग (:) के बाद खर् प्रत्याहार के वर्ण (अर्थात् प्रत्येक वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स्) हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। परन्तु यदि विसर्ग (:) के बाद श् हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर श् आयेगा तथा यदि ट् या ठ् हो तो विसर्ग (:) का 'ष्' हो जाता है।

उदाहरण—

नमः + ते	=	(: + ते = स्ते)	नमस्ते
बालकः + तरति	=	(: + त = स्त)	बालकस्तरति
इतः + ततः	=	(: + त = स्त)	इतस्ततः
निः + चलः	=	(: + च = श्च)	निश्चलः
शिरः + छेदः	=	(: + छे = श्छे)	शिरश्छेदः
धनुः + टङ्कारः	=	(: + ट = ष्ट)	धनुष्टङ्कारः

- ii) **षत्त्व**— यदि विसर्ग (:) के पूर्व 'इ' या 'उ' हो तथा बाद में क्, ख् या प्, फ् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर ष् हो जाता है।

उदाहरण—

निः + कपटः = (: + क = ष्क) निष्कपटः

निः + फलः = (: + फ = ष्फ) निष्फलः

दुः + कर्म = (: + क = ष्क) दुष्कर्म

यदि नमः और पुरः के बाद क्, ख् या प्, फ् आए तो विसर्ग (:) का स् हो जाता है।

नमः + कारः (: + क = स्का) नमस्कारः

पुरः + कारः (: + क = स्का) पुरस्कारः

iii) विसर्ग का रूत्व-उत्त्व, गुण तथा पूर्वरूप (अतो रोरप्लुतादप्लुते)—
यदि विसर्ग (:) से पहले हस्त 'अ' हो तथा उसके पश्चात् भी हस्त 'अ'
हो तो विसर्ग को 'रु' आदेश, 'रु' के स्थान पर 'उ' आदेश, उसके बाद
अ + उ के स्थान पर गुण 'ओ' तथा ओ + अ के स्थान पर पूर्वरूप
एकादेश करने पर 'ओ' ही रहता है। 'ओ' के बाद 'अ' की स्थिति
अवग्रह के चिह्न (ऽ) के द्वारा दिखाई जाती है।

उदाहरण—

बालः + अयम्

विसर्ग को उ आदेश \Rightarrow बाल् + अ + : + अयम् = बाल्

अ + उ + अयम्

अ + उ को ओ आदेश \Rightarrow बाल् + अ + उ + अयम् =

बाल् + ओ + अयम्

ओ + अ को ॐ परिवर्तितरूप \Rightarrow बालो + अयम् = बालोऽयम्

सः + अवदत् = सोऽवदत्

नृपः + अवदत् = नृपोऽवदत्

प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः

(हशि च)—यदि विसर्ग (:) से पहले अ हो तथा बाद में वर्गों के तृतीय,
चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व् या ह्, हो तो विसर्ग के स्थान पर
र्, पुनः र् आदेश का उ, तदनन्तर अ + उ को गुण होकर 'ओ' हो जाता है।

उदाहरण—

तपः + वनम् = तप् + अ + (:) + वनम्

= तप् + अ + र् + वनम्

= तप् + अ + उ + वनम् (र् के स्थान पर उ)

= तप् + ओ + वनम् (अ + उ = ओ)

= तपोवनम्

मनः + रथः = मनोरथः

बालः + गच्छति = बालो गच्छति

- iv) रुत्व (: = र्)— यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में कोई स्वर या घोष व्यञ्जन हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर र् हो जाता है।

उदाहरण—

मुनिः + अयम्	=	मुन् + इ + : + अयम्
	=	मुन् + इ + र् + अयम्
	=	मुनिरयम्
हरिः + आगच्छति	=	हरिरागच्छति
गुरुः + जयति	=	गुरुर्जयति

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत—

- i) इतः + ततः — इतस्ततः / इतशतः
- ii) दुः + कर्म — दुश्कर्म / दुष्कर्म
- iii) शिवः + अवदत् — शिवावदत् / शिवोऽवदत्
- iv) मुनिः + आगच्छति — मुनिरागच्छति / मुनिरगच्छत
- v) मनः + रथः — मनरथः / मनोरथः
- vi) छात्रः + अयम् — छात्रोऽयम् / छात्रायम्
- vii) प्रथमः + नाम — प्रथमो नाम / प्रथमोऽनाम
- viii) कपि + चलति — कपिर्चलति / कपिश्चलति

प्र. 2. सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

- i) कीटोऽपि — + अपि।
- ii) भोजो नाम — + नाम।
- iii) वर्षयोरुपरान्तम् — वर्षयोः + ।
- iv) शिविर्जयति — + जयति ।
- v) कैश्चित् — कैः + ।
- vi) महापुरुषैरपि — + अपि।
- vii) नमस्कारः — नमः + ।
- viii) धनुष्टङ्कारः — + टङ्कारः ।

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

- i) पितुरिच्छा वर्तते।
..... +
- ii) छात्रः तपोवनम् गच्छति।
..... +
- iii) अध्यापकः उत्तमं छात्रं पुरस्करोति।
..... +

- iv) मन्दबुद्धिः सेवकः स्वामिनः मनस्तापस्य कारणमभवत्
..... +
- v) निष्कपटः जनः शोभते
..... +
- vi) बालो गच्छति
..... +

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितेषु संयोगं कृत्वा पदनिर्माणं कुरुत—

- i) त् + र् + आयते =
- ii) उ + ष् + ण् + अम् =
- iii) म् + ल् + आनम् =
- iv) ग् + ल् + आनि: =
- v) नि + ष् + क + र् + ष् + अः =

प्र. 2. रिक्तस्थानानि पूरयत—

- i) क्लेशः = + + एशः।
- ii) स्वभावः = स् + + अभावः।
- iii) कर्म = क् + अ + र् + + अ।
- iv) उच्छ्वासः = उ + + + + आसः।
- v) उल्लासः = उ + + + आसः।

प्र. 3. अधोलिखितानि यथापेक्षितं योजयत—

- i) जननीजनकविहीनम् अनाथम् पश्यामि =
- ii) सीता पुस्तकम् अपठत् =
- iii) कुरु न त्वम् अनर्थम् =
- iv) बालकम् अनाथम् पालय =
- v) सर्वम् अहर्निशं मानय =

प्र. 4. सन्धिविच्छेदस्त्रपं पूरयत—

- i) वृक्षच्छायायाम् = + छायायाम्
- ii) नाववतु = + अवतु
- iii) वागर्थाविव = वाक् + + इव
- iv) कोऽत्र = + अत्र

- v) वेत्तासि = वेत्ता +
- vi) महोदयः = महा +
- vii) सर्वैरत्र = + अत्र
- viii) अभ्युदयः = अभि +
- ix) तदर्थम् = तत् +
- x) शरच्चन्द्रः = + चन्द्रः

प्र. 5. सधिं कृत्वा लिखत—

- i) जगत् + जननी =
- ii) महा + ऐश्वर्यम् =
- iii) न + अधीतम् =
- iv) अहः + अहः =
- v) जीवति + अनाथः + अपि =
- vi) गृहे + अपि =
- vii) जगत् + माता =
- viii) महान् + लिखति =
- ix) द्वौ + एतौ =
- x) यत् + भविष्यः + विनश्यति =



D974CH04

चतुर्थ अध्याय

शब्दरूप सामान्य परिचय

वाक्य की सबसे छोटी इकाई को शब्द कहते हैं। शब्दों के अनेक रूप (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) होते हैं। व्याकरण की भाषा में क्रियापदों को छोड़कर वाक्य के अन्य पदों को नाम कहा जाता है। इस प्रकार किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव (क्रिया) आदि का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। संस्कृत भाषा में प्रयोग करने के लिए इन शब्दों को 'पद' बनाया जाता है। संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों को पद बनाने हेतु इनमें प्रथमा, द्वितीया आदि विभक्तियाँ लगाई जाती हैं। इन शब्दरूपों (पदों) का प्रयोग (पुलिलङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में भिन्न-भिन्न रूपों में) होता है। इन्हें सामान्यतया शब्दरूप कहा जाता है।

संज्ञा आदि शब्दों में जुड़ने वाली विभक्तियाँ सात होती हैं। इन विभक्तियों के तीनों वचनों (एक, द्वि, बहु) में बनने वाले रूपों के लिए जिन विभक्ति-प्रत्ययों की पाणिनि द्वारा कल्पना की गई है, वे 'सुप्' कहलाते हैं। इनका परिचय इस प्रकार है—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु (स् = :)	औ	जस् (अस्)
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अस्)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस् (भिः)
चतुर्थी	डे (ए)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
पञ्चमी	डसि (अस्)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
षष्ठी	डस् (अस्)	ओस् (ओः)	आम्
सप्तमी	डि (इ)	ओस् (ओः)	सुप् (सु)

ये प्रत्यय शब्दों के साथ जुड़कर अनेक रूप बनाते हैं।

इन विभक्तियों के अतिरिक्त सम्बोधन के लिए भी प्रथमा विभक्ति के ही प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, किन्तु सम्बोधन एकवचन में प्रथमा एकवचन से रूपों में अन्तर होता है। रूप निर्देश से रूपभेद को स्पष्ट किया गया है—

शब्दों के विभिन्न रूपों में भेद होने के कारण 'संज्ञा' आदि शब्दों को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

1. संज्ञा शब्द
2. सर्वनाम शब्द
3. संख्यावाचक शब्द

संज्ञा शब्दों के अन्त में 'स्वर' अथवा व्यञ्जन होने के कारण इन्हें पुनः दो वर्गों में रखा जा सकता है—

स्वरान्त (अजन्त)

स्वरान्त (अजन्त) अर्थात् जिन शब्दों के अन्त में अ, आ, इ, ई आदि स्वर होते हैं, उन्हें स्वरान्त कहा जाता है। इनका वर्गीकरण इस प्रकार है—

अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त, ऋकारान्त, एकारान्त, ओकारान्त तथा औकारान्त आदि।

यथा—बालक, गुरु, कवि, नदी, लता, पितृ, गो आदि।

व्यञ्जनान्त (हलन्त)

जिन शब्दों के अन्त में क्, च्, ठ्, त् आदि व्यञ्जन होते हैं, उन्हें व्यञ्जनान्त कहा जाता है। ड्, झ्, ण्, य् इन व्यञ्जनों को छोड़कर प्रायः सभी व्यञ्जनों से अन्त होने वाले शब्द पाए जाते हैं। इनमें भी च्, ज्, त्, द्, ध्, न्, श्, ष्, स् और ह् व्यञ्जनों से अन्त होने वाले शब्द अधिकतर प्रयुक्त होते हैं। अतः इनकी गणना चकारान्त, जकारान्त, तकारान्त, दकारान्त, धकारान्त, नकारान्त, पकारान्त, भकारान्त, रकारान्त, वकारान्त, शकारान्त, सकारान्त, हकारान्त आदि रूपों में की जाती है,

यथा—जलमुच्, भूत्, श्रीमत्, जगत्, राजन्, दिश्, पयस् आदि।

यहाँ अकारान्त पुँलिलङ्ग 'बालक', आकारान्त स्त्रीलिलङ्ग 'बालिका', अकारान्त नपुंसकलिलङ्ग 'फल' और नकारान्त पुँलिलङ्ग 'राजन्' शब्दों के विभिन्न विभक्तियों में रूप दिए जा रहे हैं—

1. अकारान्त पुँलिलङ्ग शब्द 'बालक'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ !	हे बालकाः !

वृक्ष, अध्यापक, छात्र, नर, देव आदि सभी अकारान्त पुँलिलङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होंगे।

2. आकारान्त स्त्रीलिलङ्ग शब्द 'बालिका'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिकाः
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिकाः
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभिः
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
पञ्चमी	बालिकायाः	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
षष्ठी	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके !	हे बालिके !	हे बालिकाः !

लता, बाला, विद्या आदि सभी आकारान्त स्त्रीलिलङ्ग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होंगे।

3. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'फल'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फलम् !	हे फले !	हे फलानि !

टिप्पणी— अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के तृतीया विभक्ति से सप्तमी विभक्ति तक के रूप अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूपों की भाँति ही होते हैं। अन्य अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों (मित्र, वन, अरण्य, मुख, कमल, पुष्प आदि) के रूप भी इसी प्रकार होंगे।

4. नकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'राजन्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य शब्दों के रूप परिशिष्ट में दिए गए हैं। अतः अधोलिखित स्वरान्त, व्यञ्जनान्त एवं सर्वनाम शब्दों के रूप परिशिष्ट में द्रष्टव्य हैं—

- (क) स्वरान्त—लता, मुनि, पति, भूपति, नदी, भानु, धेनु, मधु, पितृ, मातृ, गो, द्यौ, नौ और अक्षि।
- (ख) व्यञ्जनान्त—भवत्, आत्मन्, विद्वस्, चन्द्रमस्, वाच्, गच्छत्, (शत्रन्त), पुम्, पथिन्, गिर्, अहन् और पयस्।
- (ग) सर्वनाम—सर्व, यत्, तत्, एतत्, किम्, इदम् (सभी लिङ्गों में) अस्मद्, युष्मद्, अदस्, ईदृश्, कतिपय, उभ और कीदृश्।
- (घ) संख्याशब्द—एक, द्वि, त्रि, चतुर्, पञ्चन् आदि।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. कोष्ठके प्रदत्तपदानां समुचितविभक्तिप्रयोगेण वाक्यानि पूरयत—

- i) जलं पवित्रं वर्तते। (गङ्गा, षष्ठी, एकवचन)
- ii) इदं कार्यं कृतम्। (बालिका, तृतीया, बहुवचन)
- iii) प्रातः भानुः उदेति। (गग्न, सप्तमी, एकवचन)
- iv) दुर्घं मधुरं भवति। (धेनु, षष्ठी, एकवचन)
- v) नौकया तरति। (नदी, द्वितीया, एकवचन)
- vi) वर्चासि सम्माननीयानि। (विद्वस्, षष्ठी, बहुवचन)
- vii) सः उपगम्य किं करोति? (भवत्, पूँलिलङ्ग, द्वितीया, एकवचन)
- viii) बालकेन पुष्पं त्रोटितम्। (गच्छत्, तृतीया, एकवचन)
- ix) बालकेभ्यः आचार्यः पुस्तकानि आनयत्। (एतत्
पूँलिलङ्ग, चतुर्थी, बहुवचन)
- x) बालिकाः उद्याने क्रीडन्ति। (तत्, स्त्री, प्रथमा, बहुवचन)

प्र. 2. कोष्ठके प्रदत्तपदेभ्यः समुचितं पदं चित्वा वाक्यानि पूरयत—

- i) उत्तमकार्याणि कुर्मः। (वयम्/यूयम्/ते)
- ii) प्रकाशः ग्रीष्मकाले प्रचण्डः। (भानुना/भानोः/भानुम्)
- iii) शीतलता ग्रीष्मकाले सर्वेभ्यः रोचतो। (चन्द्रमसे/
चन्द्रमसा/चन्द्रमसः:)
- iv) बहवः गुणाः सन्ति। (मधु/मधुने/मधुनि)
- v) तपसः फलं लभन्तो। (मुनिः/मुनी/मुनयः)
- vi) उत्तमबालकाः सेवन्ते। (मातरम्/मात्रे/मातरि)
- vii) कार्ये कः क्षमः ? (अस्मात्/अस्य/अस्मिन्)
- viii) विद्या शोभते, नहि धनम्। (राज्ञः/राजसु/राजाम्)
- ix) बालकान् अत्र आहया। (सर्वेषाम्/सर्वैः/सर्वान्)
- x) सन्मार्गं प्रदर्शयन्ति। (साधुः/साधू/साधवः)



0974CH05

पञ्चम अध्याय

धातुरूप सामान्य परिचय

जिस शब्द द्वारा किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं और क्रियापद के मूलरूप को धातु कहा जाता है। उदाहरणार्थ— रामः पुस्तकं पठति। इस वाक्य में राम कर्ता है और उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। यहाँ 'पठ्' धातु के द्वारा पढ़ना क्रिया का होना प्रकट होता है। जिससे 'पठति' रूप बना है।

- संस्कृत साहित्य में विभिन्न अर्थों को बताने के लिए अनेक धातुएँ हैं। इनका विभाजन 10 गणों में किया गया है।
 1. भ्वादिगण
 2. अदादिगण
 3. जुहोत्यादिगण
 4. दिवादिगण
 5. स्वादिगण
 6. रुद्धादिगण
 7. तुदादिगण
 8. तनादिगण
 9. क्र्यादिगण
 10. चुरादिगण

गणों के नामकरण का आधार उस गण में आने वाली प्रथम धातु है, जैसे— 'भ्वादिगण' का आधार उसमें सर्वप्रथम आनेवाली 'भू' धातु है (भू + आदि)। 'चुरादिगण' का आधार सर्वप्रथम आने वाली 'चुर्' धातु है। इसी प्रकार अन्य गणों का नामकरण भी उनके प्रथम धातु पर ही आधारित है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक गण में तीन प्रकार की धातुएँ पाई जाती हैं—

- i) परस्मैपदी
- ii) आत्मनेपदी
- iii) उभयपदी

परस्मैपदी धातुओं के वर्तमानकाल में 'ति', 'तः', 'अन्ति' (पठति, पठतः, पठन्ति) रूप पाया जाता है और आत्मनेपदी धातुओं में 'ते', 'इते', 'अन्ते' (सेवते, सेवेते, सेवन्ते)। पठ्, लिख्, गम् आदि धातुओं का परस्मैपद में प्रयोग होता है, जब कि 'सेव्', 'मुद्', 'लभ्' आदि धातुओं का आत्मनेपद में प्रयोग किया जाता है। इनके अतिरिक्त कुछ धातुएँ ऐसी भी हैं जो उभयपदी हैं, जिनमें दोनों ही प्रकार के रूप पाए जाते हैं। इनमें 'कृ', 'ब्रू', 'पच्' आदि धातुएँ उल्लिखित की जा सकती हैं कृ (प.) करोति, (आ.) कुरुते। उभयपदी धातुओं का यदि क्रिया फल कर्तृगामी हो, तो आत्मनेपद एवं परगामी हो तो परस्मैपद का प्रयोग किया जाता है।

- काल एवं विधि आदि अर्थों के आधार पर संस्कृत व्याकरण में दस लकार पाए जाते हैं—
 1. लट् लकार
 2. लिट् लकार
 3. लुट् लकार
 4. लृट् लकार
 5. लेट् लकार
 6. लोट् लकार
 7. लड् लकार
 8. लिड् लकार (विधिलिड् + आशीर्लिड्)
 9. लुड् लकार
 10. लृड् लकार।

लट् लकार— वर्तमानकाल को व्यक्त करने के लिए लट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— रामः पाठं पठति।

छात्रः गुरुं सेवते।

लिट् लकार— लिट् लकार का प्रयोग ऐसी घटना का वर्णन करने के लिए होता है जो हमारी आँखों के सामने न घटी हो और ऐतिहासिक भी हो।

यथा— रामः रावणं जघान।

लुट् लकार— भविष्य काल की क्रिया को व्यक्त करने के लिए लुट् लकार का प्रयोग किया जाता है। किन्तु यह काल अद्यतन 'आज का' नहीं होना चाहिए।

यथा— श्वः प्रधानमंत्री रूसदेशं गन्ता।

लृट् लकार— सामान्य भविष्यत् काल की घटनाओं को व्यक्त करने के लिए लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— सः लेखं लेखिष्यति।

लेट् लकार— अनेक कालों तथा अनेक मनोभावों को प्रकट करने वाले इस लकार का प्रयोग वेद में ही पाया जाता है। लौकिक संस्कृत में इसका अभाव है।

लोट् लकार— आज्ञा देने के भाव को प्रकट करने के लिए लोट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— सः गृहकार्यं करोतु।

लङ् लकार— अनद्यतन भूतकाल की क्रिया को बताने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— रामः पाठम् अपठत्।

विधिलिङ्— 'चाहिए', 'करे' आदि विध्यात्मक भावों को प्रकट करने के लिए विधिलिङ् का प्रयोग किया जाता है।

यथा— सः लेखं लिखेत्।

लिङ् का एक भेद आशीर्लिङ् भी है, जिसका प्रयोग आशीर्वाद देने के लिए होता है।

यथा— त्वं चिरायुः भूयाः।

लुङ् लकार— सामान्य भूतकाल की क्रिया को व्यक्त करने के लिए लुङ्लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— पुरा राजा नलः अभूत्।

लूङ् लकार— भाषा में कभी ऐसी स्थिति भी आती है जब किसी एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया में सफलता नहीं मिलती। वैसी स्थिति में लुङ्लकार का प्रयोग होता है।

यथा— यदि वर्षा अभविष्यत् तर्हि दुर्भिक्षं नाभविष्यत्।

परस्मैपदी क्रियाओं में लगने वाले नौ प्रत्यय हैं जो निम्नलिखित हैं—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
-------	-------	---------	--------

प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
-------------	------	-----	----

मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
-------------	------	-----	---

उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्
-------------	------	-----	-----

आत्मनेपदी क्रियाओं में भी नौ प्रत्यय होते हैं—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
-------	-------	---------	--------

प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
-------------	---	-------	---

मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
-------------	------	-------	-------

उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्
-------------	-----	-----	-------

छात्रों की सुविधा के लिए माध्यमिक स्तर को दृष्टि में रखते हुए पाँच लकारों में प्रयोग होने वाले प्रत्यय यहाँ दिए जा रहे हैं। इनकी सहायता से छात्रों को धातुरूपों को याद रखने में सहायता मिलेगी।

लट् लकार (वर्तमानकाल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति	ते	इते
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ	इथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः	इ	वहे

लङ् लकार (भूतकाल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए.व.	द्वि. व.	ब. व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्	त	इताम्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त	था:	इथाम्
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम	इ	वहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व
प्रथम पुरुष	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यते	स्येते
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यसे	स्येथे
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्यावः	स्यामः	स्ये	स्यावहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व
प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्
मध्यम पुरुष	अ	तम्	त	स्व	इथाम्
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै

विधिलिङ् (चाहिए के योग में)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व
प्रथम पुरुष	इत्	इताम्	इयुः	ईत्	ईयाताम्
मध्यम पुरुष	इः	इतम्	इत	ईथा:	ईयाथाम्
उत्तम पुरुष	इयम्	इव	इम	ईय	ईवहि

परस्मैपदी पठ् और आत्मनेपदी सेव् धातुओं के सभी पुरुषों और वचनों में रूप इस प्रकार बनते हैं—

लट् लकार (वर्तमान काल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए.व.	द्वि.व.	ब.व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति	सेवते	सेवेते
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ	सेवसे	सेवेथे
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः	सेवे	सेवावहे

लङ् लकार (भूतकाल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए.व.	द्वि.व.	ब.व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्	असेवत	असेवेताम्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत	असेवथाः	असेवेथाम्
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम	असेवे	असेवावहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए.व.	द्वि.व.	ब.व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व
प्रथम पु.	पठिष्ठति	पठिष्ठतः	पठिष्ठन्ति	सेविष्ठते	सेविष्ठेते
मध्यम पु.	पठिष्ठसि	पठिष्ठथः	पठिष्ठथ	सेविष्ठसे	सेविष्ठेथे
उत्तम पु.	पठिष्ठामि	पठिष्ठावः	पठिष्ठामः	सेविष्ठे	सेविष्ठावहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए.व.	द्वि.व.	ब.व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु	सेवताम्	सेवेताम्
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत	सेवस्व	सेवेथाम्
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम	सेवै	सेवावहै

विधिलिङ् (चाहिए के योग में)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
ए.व.	द्वि.व.	ब.व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पु.	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः	सेवेत्	सेवेयाताम्
मध्यम पु.	पठेः	पठेतम्	पठेत्	सेवेथाः	सेवेयाथाम्
उत्तम पु.	पठेयम्	पठेव	पठेम्	सेवेय	सेवेवहि

पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य धातुओं के पाँचों लकारों (लट्, लोट्, लड्, विधिलिङ् और लृट्) सभी पुरुषों और वचनों के रूप परिशिष्ट में दिए गए हैं। उन धातुओं को वहाँ से पढ़ें और समझें।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. कोष्ठके प्रदत्तधातोः निर्दिष्टलकारे समुचितप्रयोगेण वाक्यानि पूरयत—

- i) बालका: पुस्तकानि | (पठ्-लट्)
- ii) पुस्तकानि पठित्वा ते विद्वांसः | (भू-लृट्)
- iii) यूयम् उद्याने कदा | (क्रीड्-लड्)
- iv) किम् आवाम् अद्य | (भ्रम्-लोट्)
- v) त्वम् ध्यानेन पाठं | (पठ्-विधिलिङ्)
- vi) साधवः तपः | (तप्-लट्)
- vii) वयम् उत्तमान् अङ्गकान् | (लभ्-लृट्)
- viii) नाटकं दृष्ट्वा सर्वे | (मुद्-लङ्)
- ix) पितरं वार्धक्ये पुत्रः अवश्यं | (सेव्-लोट्)
- x) हे प्रभो ! संसारे कोऽपि भिक्षां न | (याच्-विधिलिङ्)

प्र. 2. कोष्ठकात् समुचितं क्रियापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत—

- i) अद्य युवाम् विद्यालयं किमर्थं न ? (अगच्छताम्/ अगच्छतम्/अगच्छत)
- ii) पुरा जनाः संस्कृतभाषया | (भाषन्ते/भाषामहे/ अभाषन्त)
- iii) यूयम् कं पाठम् ? (अपठत्/ अपठत्/ अपठन्)
- iv) जीवाः सर्वेऽत्र भावयन्तः परस्परम् | (मोदताम्/ मोदेताम्/ मोदन्ताम्)
- v) कक्षायाम् सर्वे ध्यानेन | (पठतु/ पठताम्/ पठन्तु)
- vi) प्रभो मह्यम् बुद्धिम् | (यच्छ/ यच्छतम्/ यच्छत)
- vii) वयं सदैव सुधीरा: सुवीरा: च | (भवेव/ भवेम/ भवेयम्)
- viii) त्वं सायं कुत्र ? (गमिष्यसि/ गमिष्यथः/ गमिष्यथ)
- ix) विद्वान् सर्वत्र | (पूज्यन्ते/ पूज्येते/ पूज्यते)
- x) अद्यत्वे समाचारपत्रस्य महत्वं सर्वे | (जानाति/ जानन्ति/ जानासि)



D974CH06

षष्ठ अध्याय

उपसर्ग

धातु रूपों तथा धातुओं से निष्पन्न शब्दरूपों से पूर्व प्रयुक्त होकर उनके अर्थ का परिवर्तन करने वाले शब्दों को उपसर्ग कहते हैं—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।

प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥

उपसर्गों के जुड़ने से पद का अर्थ बदल जाता है, यथा— हार शब्द का अर्थ है— 'माला', परन्तु जब उसमें 'प्र' उपसर्ग लगता है तो शब्द बनता है 'प्रहार' और उसका अर्थ होता है— मारना। इसी प्रकार 'आ' उपसर्ग लगने पर 'आहार' बनता है, जिसका अर्थ है— भोजन। इसी प्रकार यदि 'हार' शब्द में 'सम्' उपसर्ग जुड़ता है तो 'संहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ है नष्ट करना, परन्तु इसी शब्द में 'वि' उपसर्ग लगने पर 'विहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है— घूमना-फिरना। इसी तरह 'परि' उपसर्ग जुड़कर 'परिहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है— सुधार करना/त्याग करना। इस प्रकार हमने देखा कि अलग-अलग उपसर्गों के जुड़ने से शब्दों के अर्थों में परिवर्तन आ जाता है। उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

उपसर्गप्रयोगेण शब्दनिर्माणम्—

- प्र — प्रभवति, प्रकर्षः, प्रयत्नः, प्रतिष्ठा
- परा — पराजयते, पराभवति,
- अप — अपहरति, अपकरोति,
- सम् — संस्करोति, सङ्च्छते,

एकस्य पदस्य वाक्यप्रयोगः

- | |
|----------------------------|
| गङ्गा हिमालयात् |
| प्रभवति। |
| सैनिकः शत्रून् पराजयते। |
| चौरः धनम् अपहरति। |
| अध्यापकः छात्रं संस्करोति। |

5. अनु — अनुगच्छति, अनुकरोति
 6. अव — अवगच्छति, अवतरति,
 7. निर् — निर्गच्छति, निराकरोति
 8. निस् — निष्कारणम्, निस्परति
 9. दुस् — दुस्त्याज्यः, दुष्प्रयोजनम्
 10. दुर् — दुर्बोध्यः, दुर्लभः
 11. वि — विजयते, विहरति
 12. आड् — आकण्ठम्, आजीवनम्
 13. नि — निगदति, निपतति
 14. अधि — अधिराजते, अधिशेषते
 15. अति — अतिवादः, अत्याचारः
 16. सु — सुपुत्रेण, सुशोभते
 17. उत् — उड्डयते, उत्पतिः
 18. अभि — अभिगच्छति, अभ्यागतः
 19. प्रति — प्रत्युपकारः, प्रत्यवदत्
 20. परि — परित्यजामि, परिवर्तनम्
 21. उप — उपगच्छति, उपहरति
 22. अपि — अपिदधाति
- शिष्यः गुरुम् अनुगच्छति।
 रामः भवन्तम् अवगच्छति।
 अवजानाति वा।
 प्राचार्यः कार्यालयात्
 निर्गच्छति।
 सर्पः बिलाद् निस्परति।
 स्वभावः दुस्त्याज्यः भवति।
 अयं गूढविषयः दुर्बोध्यः
 अस्ति।
 धर्मः सदा विजयते।
 आकण्ठं जलं पीतम्।
 पुत्रः पितरं निगदति।
 विद्वान् सर्वत्र अधिराजते।
 अतिवादो न कर्तव्यः।
 उद्याने पुष्पाणि सुशोभन्ते।
 पक्षिणः आकाशे उड्डयन्ते।
 अभ्यागतः सर्वैः सदा
 पूजनीयः।
 पुत्री मातरं प्रत्यवदत्।
 अहं दुष्टं परित्यजामि।
 शिष्यः अध्ययनार्थं गुरुम्
 उपगच्छति।
 द्वारपालः द्वारम् अपिदधाति
 (पिदधाति)।

किसी भी धातु में उपसर्ग जुड़ने से अर्थ-परिवर्तन होता जाता है, यथा—
 * $\sqrt{गम्}$ — जाना

आ + $\sqrt{गम्}$ \Rightarrow आगच्छति — आना

उप + $\sqrt{गम्}$ \Rightarrow उपगच्छति — पास जाना

अनु + $\sqrt{गम्}$ \Rightarrow अनुगच्छति — पीछे जाना

अव + $\sqrt{गम्}$ \Rightarrow अवगच्छति — समझना

यहाँ हमें यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जब हमें किसी उपसर्ग युक्त धातु का वाक्य में प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है, तब धातुरूप के सामान्य प्रयोग में ही पदनिर्माण करने के पश्चात् निर्मित पद में उपसर्ग को सन्धि-नियमों के अनुसार जोड़ना चाहिए, यथा—

लकार	धातुरूप	उपसर्ग + धातुरूप
लट् गम्	गच्छति	<u>अनुगच्छति</u>
लृट्	गमिष्यति	<u>अनुगमिष्यति</u>
लड्	अगच्छत्	<u>अनुअगच्छत्</u> - अन्वगच्छत्
(यण् सन्धि)		
लोट्	गच्छतु	<u>अनुगच्छतु</u>
विधिलिङ्	गच्छेत्	<u>अनुगच्छेत्</u>

* ' $\sqrt{ }'$ चिह्न धातु का संकेतक है। $\sqrt{गम्}$ अर्थात् 'गम्' धातु।

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. अधोलिखितेषु पदेषु उपसर्गान् धातून् च पृथक् कृत्वा लिखत—

	उपसर्ग	धातु	क्रियापद
i)	उत्तिष्ठतु
ii)	निरगच्छन्
iii)	निस्मरतु
iv)	संवदन्ति
v)	प्रत्यवदत्
vi)	सुशोभते
vii)	विशिष्यते
viii)	अन्वकरोत्
ix)	प्रसीदामि
x)	अवागच्छत्
xi)	उपविशामः
xii)	उत्थास्यामः
xiii)	उन्नयनम्
xiv)	अपाकुर्वन्
xv)	विजयते
xvi)	परितुष्यति

प्र.2. कोष्ठकात् शुद्धपदं चित्वा रिक्तस्थाने लिखत—

- i) हे प्रभो ! मयि । (प्रासीदतु/प्रसीदतु)
- ii) गुरुः शिष्यस्य अज्ञानम् । (उपहरति/अपहरति)
- iii) वानराः जनान् । (अनुकुर्वन्ति/अन्वकुर्वन्ति)
- iv) अहं संस्कृतम् । (अवजानामि/अवाजानामि)
- v) सत्यम् एव वदनीयम् । (आजीवनम्/आजीवनः)
- vi) अध्यापकः प्रश्नान् पृच्छति। छात्राः । (प्रतिवदन्ति/संवदन्ति)
- vii) कामात् क्रोधः । (पराभवति/उद्भवति)

- viii) सभायाम् विद्वांसः एव । (सुशोभन्ते/सुशोभन्ति)
 - ix) चौरः रात्रौ धनम् । (व्यहरत्/अहरत्)
 - x) माता पुत्रः च परस्परम् । (प्रतिवदतः/संवदतः)
 - xi) गुरुः आश्रमात् । (प्रविशति/निर्गच्छति)
 - xii) नागरिकाः एव स्वदेशम् । (उद्घयन्ति/उन्नयन्ति)
 - xiii) वयं चलचित्रं द्रष्टुम् अत्र । (अवागच्छाम/आगच्छाम)
 - xiv) माता पुत्रम् । (संस्करोति/समकरोति)
 - xv) नदी पर्वतात् । (प्रवहति/उद्भवति)
- प्र. 3.
- i) हारः, योगः इति शब्दाभ्यां सह अधोलिखितान् उपसर्गान् संयुज्य प्रत्येकं पदद्वयस्य निर्माणं कुरुता निर्मितैः पदैः च सार्थकवाक्यानि रचयत—
उपसर्गाः— आ, वि, प्र, सु, सम्।
 - ii) 'भू' हृ, इति एताभ्याम् धातुभ्यां प्राक् अधोलिखितान् उपसर्गान् संयुज्य प्रत्येकं पदद्वयस्य निर्माणं कुरुता निर्मितैः पदैः च सार्थकवाक्यानि रचयत—
उपसर्गाः— प्र, अनु, सम्, अप, दुर्।



0974CH07

सप्तम अध्याय

अव्यय

संस्कृत के वे शब्द जो सर्वदा एक जैसे ही रहते हैं (जिनमें विभक्ति, वचन तथा लिङ्ग के आधार पर कोई परवर्तन नहीं होता है)। उन्हें अव्यय कहते हैं—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

अव्यय

अचिरम्

यावत्

तावत्

सहसा

श्वः

ह्यः

शनैः शनैः

सम्प्रति/साम्प्रतम्/अधुना/इदानीम्

अत्र

अत्यन्तम्

अथ

अलम्

अद्य

अर्थ

शीघ्र ही

जब तक

तब तक

अचानक

आने वाला कल

बीता हुआ कल

धीरे-धीरे

इस समय

यहाँ

बहुत

आरम्भ या इसके बाद

निषेधार्थक (योगे तृतीया वि.)

पर्याप्त, समर्थ (योगे चतुर्थी विभक्ति)

आज

अथवा	या
अपि	भी
अन्यथा	नहीं तो
अतः	इसलिए
अतीव	बहुत अधिक
आम्	हाँ
इतस्ततः	इधर-उधर
इति	समाप्त, ऐसा
उच्चैः	जोर-जोर से, ऊँचे
एव	ही
एकदा	एक बार
एवम्	इस प्रकार, ऐसे
किम्	क्या
किन्तु	परन्तु, लेकिन
कदा	कब
कुतः	कहाँ से
कुत्र/ क्व/ क्वचित्	कहाँ
च	और
अभितः	दोनों ओर
परितः	चारों ओर
सर्वतः	सभी ओर
उभयतः	दोनों ओर
चेत्	यदि
चिरम्	देर से, देर तक
तत्र	वहाँ
इतः	इधर से, यहाँ से
ततः	उसके बाद, वहाँ से
तथापि	फिर भी

तदा, तदानीम्	तब
तर्हि	तो
तु	तो
तावत्	तब तक
तूष्णीम्	चुप
दिवा	दिन
न	नहीं
नीचैः	नीचे
नूनम्	निश्चय ही
नो चेत्	नहीं तो
पुनः	फिर
प्रातः	सवेरे
पश्चात्	बाद
प्रभृति	से, लेकर
परन्तु	किन्तु, लेकिन
पुरा	पुराने समय में, पहले
सायम्	शाम
श्वः	कल (आने वाला)
ह्यः	कल (बीता हुआ)
सह	साथ
स्वयम्	अपने आप
सहसा	अचानक
स्म	था, थी, थे
सर्वत्र	सब जगह
अथ किम्	और क्या
तथा	वैसे
परस्परम्	आपस में
बहिः	बाहर

बहुधा	अक्सर
बाढ़म्	हाँ
मा	नहीं
मुहुर्मुहुः, भूयः, वारं वारम्	बार-बार
यत्	कि
यत्र	जहाँ
यदि	अगर
यद्यपि	अगर
यावत्	जब तक
यतः	जहाँ से
यदा	जब
वा	या/ अथवा
विना	बिना
वृथा	व्यर्थ
शनैः	धीरे
सर्वदा, सदा, सदैव	नित्य
हि/ यतः/ यतोहि	क्योंकि
खलु	निश्चय ही
ईषत्	थोड़ा ही
जातु	कभी
धिक्	धिक्कार
नक्तम्	रात
प्रसह्य	बलात्
नमः	नमस्कार, प्रणाम
पुरः, पुरस्तात्, पुरतः:	सामने
वाक्येषु केषाज्जित् अव्ययपदानां प्रयोगान् पश्यत—	
कच्छपः शनैः शनैः चलति।	
अचिरं गृहं गच्छ।	

अहं श्वः वाराणसीं गमिष्यामि।
 ह्यः मम गृहे उत्सवः आसीत्।
 सहसा निर्णयः न करणीयः।
 इदानीम् अहं संस्कृत पठामि।
 यद्यपि अद्य अवकाशः अस्ति तथापि अहं कार्यमुक्तः नास्मि।
 अथ रामायणकथा आरभ्यते।
 अत्र आगच्छ।
 अहं कुत्रापि न गमिष्यामि।
 कुकुकुरः इतस्ततः भ्रमति।
 यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र अग्निः।
 अधुना गल्पं न करणीयम्।
 नक्तम् दधि न भुज्जीत।
 कक्षायां तूष्णीम् तिष्ठ।
 पुरा अशोकः राजा आसीत्।
 तौ परस्परम् आलपतः।
 अद्य प्रभृति अहं धूमपानं न करिष्यामि।
 शीघ्रं कार्य समाप्य अन्यथा विलम्बः भविष्यति।
 वृथा कलहम् मा कुरु।
 यदा अहं गमिष्यामि तदा सः अत्र आगमिष्यति।
 ईषत् हसित्वा सः तस्य उपहासं कृतवान्।
 अहं त्वाम् भूयोभूयः नमामि।
 सः मुहुर्मुहुः किम् पश्यति ?

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि यकार एवं तकार वाले, जैसे कि— यद्यपि तथापि, यथा-तथा, यदि-तर्हि, यत्र-तत्र, यावत्-तावत्, यदा-तदा इत्यादि अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग प्रायशः एक साथ ही करना चाहिए, अन्यथा वाक्य अपूर्ण ही रहता है।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. समुचितैः अव्ययैः (मञ्जूषातः गृहीत्वा) रिक्तस्थानानि पूरयत—

- i) सः वनं गतवान्।
- ii) सः गच्छति ?
- iii) गजः चलति।
- iv) सः स्वपिति।
- v) सिंहः गर्जति।
- vi) सः विजेष्यते।
- vii) परिश्रमं कुरु, अनुत्तीर्णः भविष्यसि।
- viii) गृहात् मा गच्छ।
- ix) सः माम् उद्देजयति।
- x) कोलाहलं कुरु।

मञ्जूषा

मा, बहिः, मुहुर्मुहुः, अन्यथा, एकदा,
शनैः, शनैः, चिरम्, नूनम्, उच्चैः, कुत्र

प्र. 2. अधोलिखितेषु वाक्येषु अव्ययपदं चित्वा लिखत—

- i) यावत् परीक्षाकालः नायाति तावत् परिश्रमं कुरु।
- ii) अस्माभिः सर्वदा सत्यं वक्तव्यम्।
- iii) कालः वृथा न यापनीयः।
- iv) अहं सम्प्रति गृहं गन्तुम् इच्छामि।
- v) त्वं कुतः समायातः ?
- vi) अहं श्वः ग्रामं गमिष्यामि।
- vii) तौ परस्परम् आलपतः।
- viii) अद्यप्रभृति अहं धूमपानं न करिष्यामि।
- ix) धनं विना जीवनं वृथा भवति।
- x) अथ रामायणकथा आरभ्यते।

प्र. 3. कोष्ठकेभ्यः शुद्धम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत्—

- i) अहम् ग्रमणाय गमिष्यामि (श्वः/ह्यः)
- ii) त्वम् कस्य गच्छसि ? (परितः/पुरतः)
- iii) विद्यालयम् उद्यानम् अस्ति (परितः/ एव)
- iv) सः यदा आगमिष्यति अहं गमिष्यामि (तदैव/तथैव)
- v) परिश्रमं कुरु अनुत्तीर्णः भविष्यसि (सर्वदा/ अन्यथा)
- vi) त्वं कुत्र गच्छसि ? (जातु / साम्रतम्)
- vii) यूयम् ध्यानेन पठत । (बाढम् / नूनम्)
- viii) श्यामः पठति श्यामा न । (एव/ विना)
- ix) छात्राः पुस्तकम् न शोभन्ते । (यदि / विना)
- x) यथा वप्स्यसि फलं प्राप्स्यसि (तदा / तथा)



0974CH08

अष्टम अध्याय

प्रत्यय

किसी भी धातु या शब्द के पश्चात् जुड़ने वाले शब्दांशों को प्रत्यय कहा जाता है।

- धातुओं में जुड़ने वाले प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं। ये प्रत्यय तिङ्ग् प्रत्ययों से भिन्न होते हैं।
- संज्ञा शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं।
- पुँलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए शब्दों में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों को स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

1. कृत् प्रत्यय

जिन प्रत्ययों को धातुओं में जोड़कर संज्ञा, विशेषण या अव्यय आदि पद बनाए जाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं।

- i) अव्यय बनाने के लिए धातुओं में 'क्त्वा', 'ल्यप्', 'तुमन्' प्रत्ययों का योग किया जाता है।
 - ii) धातु से विशेषण बनाने के लिए 'शतृ', 'शानच्', 'तव्यत्', 'अनीयर्', 'यत्' आदि प्रत्ययों का योग किया जाता है।
 - iii) भूतकालिक क्रिया के प्रयोग के लिए 'क्त', 'क्तवतु' एवं 'करना चाहिए'— इस अर्थ के लिए क्रिया के वाचक 'तव्यत्', 'अनीयर्' और 'यत्' प्रत्ययों का प्रयोग करते हैं।
 - iv) धातु से संज्ञा बनाने हेतु 'तृच्', 'क्तिन्', 'ण्वल्', 'ल्युट्' आदि प्रत्ययों का योग किया जाता है।
- कठिपय प्रमुख कृत् प्रत्ययों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

कृत्वा प्रत्यय

वाक्य में मुख्य क्रिया से पूर्व किए गए कार्य में पूर्वकालिक क्रिया को व्यक्त करने के लिए धातु में कृत्वा प्रत्यय का योग किया जाता है।

यथा— मयूरः मेघं दृष्ट्वा नृत्यति। यहाँ दृष्ट्वा में 'दृश्' धातु से 'कृत्वा' प्रत्यय का योग किया गया है। यह क्रिया नर्तन क्रिया की पूर्वकालिक क्रिया है।
उदाहरण—

कृ + कृत्वा	= कृत्वा	= करके, कार्य कृत्वा गृहं गच्छ।
गम् + कृत्वा	= गत्वा	= जाकर, आपणं गत्वा फलम् आनय।
नम् + कृत्वा	= नत्वा	= नमन करके, सरस्वतीं देवीं नत्वा पाठं पठ।
पा + कृत्वा	= पीत्वा	= पीकर, दुधं पीत्वा शयनं कुरु।
श्रु + कृत्वा	= श्रुत्वा	= सुनकर, वार्ता श्रुत्वा आगतोऽस्मि।
दृश् + कृत्वा	= दृष्ट्वा	= देखकर, बहिः दृष्ट्वा आगच्छामि।
हन् + कृत्वा	= हत्वा	= मारकर, रामः रावणं हत्वा सीतां प्राप्नोत्।
प्रच्छ + कृत्वा	= पृष्ट्वा	= पूछकर, गुरुं पृष्ट्वा आगच्छामि।
त्यज् + कृत्वा	= त्यकृत्वा	= त्यागकर, सीतां वने त्यकृत्वा लक्ष्मणः आगतः।
स्पृश् + कृत्वा	= स्पृष्ट्वा	= छूकर, मम मित्रम् मां स्पृष्ट्वा गतः।
ज्ञा + कृत्वा	= ज्ञात्वा	= जानकर, परीक्षाफलं ज्ञात्वा सः अति प्रसन्नः अस्ति।
पठ् + कृत्वा	= पठित्वा	= पढ़कर, अहं पुस्तकं पठित्वा ज्ञानं प्राप्स्यामि।
पत् + कृत्वा	= पतित्वा	= गिरकर, अश्वः पतित्वा उत्थितः।
पूज् + कृत्वा	= पूजयित्वा	= पूजकर, देवीं पूजयित्वा मेलापकं गमिष्यामि।

'कृत्वा' प्रत्ययान्त शब्दों का भी अव्यय के रूप में प्रयोग होता है, क्योंकि ये अव्यय होते हैं। इनके रूप में परिवर्तन नहीं होता है।

ल्यप् प्रत्यय

पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में 'ल्यप्' प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। जहाँ पर धातु से पूर्व कोई उपसर्ग लगा होता है, वहाँ 'कृत्वा' के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय का

प्रयोग किया जाता है। 'ल्यप्' प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय के रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं। इनके रूप में भी परिवर्तन नहीं होता है।

उदाहरण—

प्र + नम् + ल्यप्	= प्रणम्य	= प्रणाम करके, गुरुं प्रणम्य सः पठति।
वि + ज्ञा + ल्यप्	= विज्ञाय	= जानकर, वार्ता विज्ञाय त्वम् आगच्छ।
आ + गम् + ल्यप्	= आगत्य	= आकर, गृहात् आगत्य सः पाटलिपुत्रं गतवान्।
आ + दा + ल्यप्	= आदाय	= लाकर, किम् आदाय सः समायातः।
वि + स्मृ + ल्यप्	= विस्मृत्य	= भूलकर, पाठं विस्मृत्य सः किंकर्तव्यविमूढः अभवत्।
वि + जि + ल्यप्	= विजित्य	= जीतकर, शत्रून् विजित्य राजा प्रसन्नः अभवत्।
उत् + डी + ल्यप्	= उड्डीय	= उड़कर, खगा: उड्डीय प्रसन्नाः भवन्ति।
आ + नी + ल्यप्	= आनीय	= लाकर, शिष्यः शुल्कम् आनीय गुरवे दत्तवान्।
उप + कृ + ल्यप्	= उपकृत्य	= उपकार करके, सज्जनाः उपकृत्य विस्मरन्ति।
प्र + आप् + ल्यप्	= प्राप्य	= प्राप्त करके, छात्रः परीक्षाफलं प्राप्य प्रसन्नः जातः।
प्र + दा + ल्यप्	= प्रदाय	= देकर, निर्धनेभ्यः धनं प्रदाय धनिकः गतः।
सं + स्पृश् + ल्यप्	= संस्पृश्य	= स्पर्श करके, पितुः चरणं संस्पृश्य सः आशीर्वादं प्राप्तवान्।
उत् + तृ + ल्यप्	= उत्तीर्य	= उत्तीर्ण करके, दशमकक्षाम् उत्तीर्य सः उच्चविद्यालये प्रवेशमलभत।

तुमुन् (तुम्)—(निमित्तार्थक) 'के लिए' अर्थात् क्रिया को करने के लिए इस अर्थ में धातु के साथ तुमुन् प्रत्यय लगता है।

- जब दो क्रिया पदों का कर्ता एक होता है तथा एक क्रिया दूसरी क्रिया का प्रयोजन या निमित्त होती है तो निमित्तार्थक क्रिया पद में तुमन् प्रत्यय होता है।

यथा— सुरेशः पठितुं विद्यालयं गच्छति। वाक्य में 'पढ़ना' और 'जाना' दो क्रिया पद हैं, जिनमें पढ़ना क्रिया प्रयोजन है जिसके लिए सुरेश विद्यालय जाता है। अतः पठितुं में तुमन् प्रत्यय है।

- समय, वेला आदि कालवाची शब्दों के योग में भी धातुओं से तुमन् प्रत्यय होता है।

यथा— स्नातुं वेलाऽस्ति।

पठितुं समयोऽस्ति।

- तुमन् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। इनका रूप भी नहीं बदलता है।

उदाहरण—

गम् + तुमन् = गन्तुम् = जाने के लिए, सः गृहं गन्तुम् उद्यतः अस्ति।

हन् + तुमन् = हन्तुम् = मारने के लिए, मृगं हन्तुं सिंहः समुद्यतः अस्ति।

पा + तुमन् = पातुम् = पीने के लिए, जलं पातुं सः नर्दीं गतवान्।

स्ना + तुमन् = स्नातुम् = स्नान के लिए, सः स्नातुं तरणतालमगच्छत्।

दा + तुमन् = दातुम् = देने के लिए, उत्तमः जनः ज्ञानं दातुम् इच्छुकः भवति।

प्रच्छ + तुमन् = प्रष्टुम् = पूछने के लिए, छात्रः प्रश्नं प्रष्टुं समुत्सुकः भवति।

द्रश् + तुमन् = द्रष्टुम् = देखने के लिए, चित्रं द्रष्टुं बालकः आगच्छत्।

हस् + तुमन् = हसितुम् = हँसने के लिए, अहं हसितुम् इच्छामि।

खाद् + तुमन्	= खादितुम्	= खाने के लिए, बालकः आप्रं खादितुम् इच्छति।
क्रीड् + तुमन्	= क्रीडितुम्	= खेलने के लिए, शिशुः कन्दुकेन क्रीडितुम् इच्छति।
भाष् + तुमन्	= भाषितुम्	= भाषण के लिए, सः भाषितुम् उत्थितः।
जीव् + तुमन्	= जीवितुम्	= जीने के लिए, सर्वे जीवितुम् अभिलषन्ति।
कथ् + तुमन्	= कथयितुम्	= कहने के लिए, कथां कथयितुं सः आगच्छत्।

- शक् (सकना), इष् (चाहना) इत्यादि धातुओं के साथ भी पूर्व क्रिया में तुमन् प्रत्यय का प्रयोग होता है, जैसे— मैं पढ़ सकती हूँ/सकता हूँ या मैं पढ़ना चाहती हूँ/चाहता हूँ, इन वाक्यों में (पढ़ना और सकना) (पढ़ना और चाहना) ये दो-दो क्रियाएँ हैं, अतः पढ़ना क्रिया में तुमन् प्रत्यय का प्रयोग होता है,

यथा— अहं पठितुं शक्नोमि
 अहं पठितुम् इच्छामि।
 बालकः तर्तुं शक्नोति।
 सा गातुं शक्नोति।
 त्वं किं कर्तुं शक्नोषि।
 ते चलितुं न शक्नुवन्ति।
 वयं धावितुं न शक्नुमः।

- तुमन् का प्रयोग करते हुए इच्छुक अर्थ वाले संज्ञा पद भी बनाए जा सकते हैं, यथा— गन्तुकामः, पठितुकामः, बद्धुकामः, चलितुकामः, लेखितुकामा, हसितुकामा, वक्तुकामा इत्यादि।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. प्रत्ययं संयुज्य वियुज्य वा लिखत—

- i) दृश् + कृत्वा =
- ii) प्रणम्य =
- iii) उपविश्य =
- iv) सोढुम् =
- v) सह् + कृत्वा =
- vi) आ + नी + ल्यप् =

प्र. 2. अधोलिखितवाक्येषु कोष्ठके प्रदत्तधातुषु कृत्वा/ल्यप्/तुमुन् प्रत्यययोगेन
निष्पन्नपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत—

यथा— सः पुस्तकम् आदाय (आ + दा + ल्यप्) गच्छति।

सः पुस्तकं दत्त्वा (दा + कृत्वा) क्रीडति।

- i) रामः कन्दुकम् (आ + नी + ल्यप्) क्रीडति।
- ii) श्यामः कन्दुकम् (नी + कृत्वा) गच्छति।
- iii) रामः कन्दुकम् (प्रह् + तुमुन्) श्यामम् अनुधावति।
- iv) श्यामः (वि + हस् + ल्यप्) कन्दुकम् ददाति।
- v) रामः कन्दुकम् (प्र + आप् + ल्यप्) पुनः प्रसन्नः भवति।

प्र. 3. उदाहरणमनुसृत्य स्थूलपदेषु धातून् प्रत्ययान् च वियुज्य लिखत—

यथा— बालकः गुरु नत्वा गच्छति। नम् + कृत्वा

- i) सः अत्र आगत्य पठति।
- ii) त्वं कुत्र गत्वा क्रीडसि।
- iii) बालकः विहस्य वदति।
- iv) त्वं पुस्तकं क्रेतुम् गच्छसि।
- v) छात्रः पठितुं विद्यालयं गच्छति।
- vi) नायकः निर्देशकं द्रष्टु गच्छति।

प्र. 4. कृत्वाप्रत्ययस्य प्रयोगेण वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका उद्यानं गच्छति। तत्र क्रीडिष्यति।

बालिका उद्यानं गत्वा तत्र क्रीडिष्यति।

- i) अहं विद्यालयं गच्छामि। अहं पठिष्यामि।
- ii) सीता पुस्तकं पठति। सा ज्ञानं प्राप्स्यति।
- iii) सः आपर्णं गच्छति। सः पुस्तकं क्रेष्यति।
- iv) रमेशः पुस्तकालयमगच्छत्। सः समाचारपत्रं पठति।
- v) देवदत्तः पाकशालामगच्छत्। सः भोजनं करोति।

प्र. 5. तुमन् प्रत्ययस्य योगेन वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका क्रीडिष्यति। सा उद्यानं गच्छति।

बालिका क्रीडितुम् उद्यानं गच्छति।

- i) अहम् पठिष्यामि। अहं पुस्तकं क्रीणामि।
- ii) बालिका परीक्षायाम् उत्तमानि अड़कानि प्राप्स्यति। सा परिश्रमेण पठति।
- iii) निशा क्रीडिष्यति। सा आपणात् कन्दुकमानयति।
- iv) माता भोजनं पचति। सा शाकमानयत्।
- v) आचार्यः पाठयति। सः कक्षामगच्छत्।

शतृ-शानच् प्रत्यय

- एक कार्य को करते हुए जब (साथ ही साथ) अन्य कार्य भी किया जा रहा हो तो करता हुआ/करती हुई, चलता हुआ/चलती हुई, पढ़ता हुआ/पढ़ती हुई इत्यादि अर्थों को बताने के लिए परस्मैषदी धातुओं में शतृ प्रत्यय तथा आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
- शतृ के 'श्' और 'ऋ' का लोप होकर धातु में 'अत्' जुड़ता है। तथा 'शानच्' के 'श्' का और 'च्' का लोप होकर 'आन' के पहले 'म्' का आगम हो जाता है। इस प्रकार धातु के साथ 'मान' जुड़ता है।
- शतृ-शानच् प्रत्ययों से बने हुए शब्द विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं। अतः इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उदाहरण—

	पुं.	स्त्री.	नपुं.
पठ् + शतृ (अत्)	पठन्	पठन्ती	पठत्
लिख् + शतृ	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
हस् + शतृ	हसन्	हसन्ती	हसत्
सेव् + शानच् (मान)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
मुद् + शानच्	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
वृत् + शानच्	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्

- वाक्य में प्रयोग करते हुए शतृ-शानच् प्रत्ययान्त शब्दों में उसी लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन का प्रयोग होता है, जो विशेष्य का होता है।

यथा—पिता गच्छन्तं पुत्रं भोजनाय कथयति।

इस वाक्य में पिता किस प्रकार के पुत्र को भोजन के लिए कह रहा है। इसके उत्तर में 'जाते हुए पुत्र' को है। अतः 'पुत्रम्' के विशेषण रूप में 'गच्छत्' शब्द में भी द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होकर 'गच्छन्तम्' पद बना।

इसी प्रकार अन्य वाक्य भी समझे जा सकते हैं।

यथा— विद्यालयं गच्छन्तीभिः बालाभिः मार्गे कपोताः दृष्टाः।
 माता सेवमानाय पुत्राय आशीः ददाति।
 मोदमानस्य जनस्य प्रसन्नतायाः किं कारणमस्ति?
 सः उच्चैः पश्यन् पतति।
 चलन्ती बालिका मार्गे पृच्छति।
 सा कं पश्यन्ती गच्छति?

		पुं.	स्त्री.	नपुं.
गम् + शतृ = गच्छत्	जाता हुआ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
दृश् + शतृ = पश्यत्	देखता हुआ	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
दा + शतृ = ददत्	देता हुआ	यच्छन्	यच्छन्ती	यच्छत्
पा + शतृ = पिबत्	पीता हुआ	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
भू + शतृ = भवत्	होता हुआ	भवन्	भवन्ती	भवत्
पच् + शतृ = पचत्	पकाता हुआ	पचन्	पचन्ती	पचत्
प्रच्छ + शतृ=पृच्छत्	पूछता हुआ	पृच्छन्	पृच्छन्ती	पृच्छत्
नी + शतृ = नयत्	ले जाता हुआ	नयन्	नयन्ती	नयत्
नृत् + शतृ = नृत्यत्	नाचता हुआ	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्
चुर् + शतृ = चोरयत्	चुराता हुआ	चोरयन्	चोरयन्ती	चोरयत्
गण् + शतृ = गणयत्	गिनता हुआ	गणयन्	गणयन्ती	गणयत्
मिल् + शतृ=मिलत्	मिलता हुआ	मिलन्	मिलन्ती	मिलत्
यज् + शतृ = यजत्	यजन करता हुआ	यजन्	यजन्ती	यजत्
पाल् + शतृ= पालयत्	पालन करता हुआ	पालयन्	पालयन्ती	पालयत्
गृह् + शतृ = गृह्णत्	ग्रहण करता हुआ	गृह्णन्	गृह्णन्ती	गृह्णत्

शानच् (आन, मान)

उदाहरण—

पुं. स्त्री. नपुं.

यज् + शानच् = यजमान	यजन करता हुआ	यजमानः यजमाना यजमानम्
लभ् + शानच् = लभमान	प्राप्त करता हुआ	लभमानः लभमाना लभमानम्
सह + शानच् = सहमान	सहन करता हुआ	सहमानः सहमाना सहमानम्
जन् + शानच् = जायमान	पैदा होता हुआ	जायमानः जायमाना जायमानम्
शीड् + शानच् = शयान	सोता हुआ	शयानः शयाना शयानम्
वृध् + शानच् = वर्धमान	बढ़ता हुआ	वर्धमानः वर्धमाना वर्धमानम्

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. प्रत्ययान् संयुज्य यथानिर्दिष्टं लिखत—

- i) पठ् + शतृ (पु.)
- ii) लिख् + शतृ (स्त्री.)
- iii) सेव् + शानच् (स्त्री.)
- iv) सह् + शानच् (पु.)
- v) वृत् + शानच् (पु.)
- vi) हस् + शतृ (स्त्री.)

प्र. 2. यथानिर्दिष्टं परिवर्तनं कृत्वा वाक्याग्रे पुनः लिखत—

यथा— लिखन् बालकः पठति (स्त्रीलिङ्ग)

लिखन्ती बालिका पठति।

- i) क्रीडन् बालकः पठति। (स्त्रीलिङ्गे)
- ii) उपविशन् छात्रः हसति। (स्त्रीलिङ्गे)
- iii) धावन्ती बालिका क्रन्दति। (पुँलिङ्गे)
- iv) सः चलन् खादति। (स्त्रीलिङ्गे)
- v) अहम् नृत्यन् न गायामि। (स्त्रीलिङ्गे)
- vi) त्वम् याचमाना न शोभसो। (पुँलिङ्गे)
- vii) ते गच्छन्तः वार्ता कुर्वन्ति। (स्त्रीलिङ्गे)
- viii) ते धावन्त्यौ भ्रमतः। (पुँलिङ्गे)

प्र. 3. शतृप्रत्ययान्तस्य गच्छत्, गच्छन्ती शब्दयोः रूपाणि दृष्ट्वा पठत्, लिखत्, पठन्ती, लिखन्ती च इत्यादीनां शब्दानां रूपलेखनस्य अभ्यासं कुरुत—

उदाहरण—

(क) गच्छत् (पुँलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः

चतुर्थी	गच्छते	गच्छदभ्याम्	गच्छदभ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छदभ्याम्	गच्छदभ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः!

(ख) गच्छन्ती (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्यः
द्वितीया	गच्छन्तीम्	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तीः
तृतीया	गच्छन्त्या	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभिः
चतुर्थी	गच्छन्त्यै	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
पञ्चमी	गच्छन्त्याः	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
षष्ठी	गच्छन्त्याः	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
सप्तमी	गच्छन्त्याम्	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीषु
सम्बोधन	हे गच्छन्ति!	हे गच्छन्त्यौ!	हे गच्छन्त्यः!

प्र. 4. कोष्ठके प्रदत्तशब्दानाम् उचितप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत—

- i) बालिकायाः पुस्तकम् कुत्र अस्ति ? (पठन्ती)
- ii) शिष्याम् आचार्या किञ्चिद् वदति। (हसन्ती)
- iii) छात्रैः हस्यते। (गच्छत्)
- iv) कलिकानाम् सौन्दर्यं अपूर्वं वर्तते। (विकसन्ती)
- v) बालकाय वस्त्रं दीयते। (याचत्)

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य शतृशानचत्रत्ययौ प्रयुज्य वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका गच्छति/सा क्रीडति।

- गच्छन्ती बालिका क्रीडति।
- i) बालकः पठति। सः पाठं स्मरति।
- ii) शिशुः चलति। सः हसति।
- iii) रमा पठति। सा लिखति।
- iv) साधुः उपदेशति। / सः ज्ञानवार्ता करोति।
- v) याचकः याचते। सः मार्गे चलति।

भूतकालिक क्त (त) क्तवतु

- भूतकालिक क्रिया के अर्थ में धातु से 'क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्यय का योग किया जाता है। 'क्त' प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म अर्थ में, अकर्मक धातुओं से भाव अर्थ में तथा 'क्तवतु' प्रत्यय कर्ता अर्थ में होता है। गत्यर्थक तथा अकर्मक धातुओं से कर्ता अर्थ में 'क्त' प्रत्यय होता है।

कुछ धातुओं के क्त-क्तवतु प्रत्यययुक्त पद निम्नलिखित हैं—

क्त प्रत्यय

उदाहरण—

	पुं.	स्त्री.	नपुं.
गम् + क्त	गतः	गता	गतम्
कृ + क्त	कृतः	कृता	कृतम्
पा + क्त	पीतः	पीता	पीतम्
श्रु + क्त	श्रुतः	श्रुता	श्रुतम्
क्री + क्त	क्रीतः	क्रीता	क्रीतम्
भक्ष + क्त	भक्षितः	भक्षिता	भक्षितम्
इष् + क्त	इष्टः	इष्टा	इष्टम्
सेव् + क्त	सेवितः	सेविता	सेवितम्
दृश् + क्त	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्
त्रस् + क्त	त्रस्तः	त्रस्ता	त्रस्तम्

क्तवतु प्रत्यय

उदाहरण—

	पुं.	स्त्री.	नपुं.
गम् + क्तवतु	गतवान्	गतवती	गतवत्
कृ + क्तवतु	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
पा + क्तवतु	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
श्रु + क्तवतु	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्

क्री + क्तवतु	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
भक्ष् + क्तवतु	भक्षितवान्	भक्षितवती	भक्षितवत्
इष् + क्तवतु	इष्टवान्	इष्टवती	इष्टवत्
सेव् + क्तवतु	सेवितवान्	सेवितवती	सेवितवत्
दृश् + क्तवतु	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्
क्षिप् + क्तवतु	क्षिप्तवान्	क्षिप्तवती	क्षिप्तवत्
ग्रह् + क्तवतु	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
चिन्त् + क्तवतु	चिन्तितवान्	चिन्तितवती	चिन्तितवत्
चुर् + क्तवतु	चोरितवान्	चोरितवती	चोरितवत्
ज्ञा + क्तवतु	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्

- क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भी तीनों लिङ्गों में चलते हैं।
- भूतकाल की क्रिया के लिए क्तवतु प्रत्ययों के प्रयोग का छात्रोपयोगी लाभ यह है कि वाक्य में क्रिया को पुरुषानुसार नहीं बदलना पड़ता—

यथा— रामः अगच्छत्	—	रामः गतवान्
रमा अगच्छत्	—	रमा गतवती
अहम् अगच्छम्	—	अहम् गतवान् / गतवती
त्वम् अगच्छः	—	त्वम् गतवान् / गतवती

- क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुँलिङ्ग में भवत्, स्त्रीलिङ्ग में नदी तथा नपुंसकलिङ्ग में जगत् के समान चलते हैं।

पुं.	—	गतवान् गन्तवन्तौ गतवन्तः (इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)
स्त्री.	—	गतवती गतवत्यौ गतवत्यः (इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)
नपुं.	—	गतवत् गतवती गतवन्ति (इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

यथा—

छात्रः गतवान्। छात्रा गतवती। मित्रम् गतवत्।

छात्रौ गतवन्तौ। छात्रे गतवत्यौ। मित्रे गतवती।

बालाः गतवन्तः। बालिकाः गतवत्यः। मित्राणि गतवन्ति।

- क्त प्रत्यययुक्त क्रिया के प्रयोग में अर्थात् कर्मवाच्य में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया के लिङ्ग वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।

यथा— रामेण घटः पूरितः।

रमया घटः पूरितः।

तेन पुस्तकं पठितम्।

तया पुस्तकानि पठितानि।

मित्रेण भोजनं कृतम्।

छात्रैः कथा पठिता।

आचार्यैः छात्राः पाठिताः।

- क्त प्रत्यययुक्त शब्दों का प्रयोग जब भूतकालिक विशेषण के रूप में होता है तब क्त प्रत्ययान्त शब्द में लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन का प्रयोग विशेष्य के अनुसार होता है।

यथा— छात्रः पठितं पाठं गृहे पुनः पुनः पठति।

छात्रः कक्षायां पठितान् पाठान् गृहे स्मरति।

बालः पठितं हास्यकथां स्मृत्वा हसति।

आचार्यः पठितानां पाठानां पुनरावृतिं कर्तुं कथयति।

- जाना, चलना इत्यादि अर्थ की धातुओं, अकर्मक धातुओं तथा शिलष्ट, शी, स्था, आस, सह इत्यादि धातुओं से क्त प्रत्यय कर्तृवाच्य में भी होता है, अर्थात् इन धातुओं का वाक्य में अकर्मक प्रयोग होने पर क्त प्रत्यय का प्रयोग होते हुए भी कर्ता में प्रथमा का प्रयोग भी किया जा सकता है।

यथा— तेन गतम् / सः गतः।

तेन सुप्तम् / सः सुप्तः।

सः ग्रामं प्राप्तः।

सः गृहं गतः।

सः वृक्षमारुढः।

हरिः वैकुण्ठमधिष्ठितः।

- कृत प्रत्यययुक्त क्रिया के प्रयोग में कर्ता प्रायः तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया, लिङ्‌ग एवं वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. क्त-क्तवतुप्रत्ययसंयोजने पदानि रचयित्वा वाक्यपूर्ति कुरुत—

- i) बालकेन (हस् + क्त)
- ii) बालकः (हस् + क्तवतु)
- iii) शिक्षकेण छात्रः पठनाय (कथ् + क्त)
- iv) शिक्षकाः छात्रान् पठनाय (कथ् + क्तवतु)
- v) पुत्री पितरम् पुस्तकम् (याच् + क्तवतु)
- vi) माता सुतायै भोजनं (दा + क्तवतु)
- vii) मम जनकेन भिक्षुकाय रूप्यकाणि (दा + क्त)
- viii) छात्रेण ऋषेः ज्ञानोपदेशः (श्रु + क्त)

प्र. 2. स्तम्भयोः यथोचितं योजयत—

अ	ब
अहम् जलम्	पठितानि
सा पुस्तकम्	पचितवन्तः
त्वम् पाठम्	पीतवान् / पीतवती
मया पुस्तकानि	पठितवती
यूयम् भोजनं	लिखितवान्

प्र. 3. उदाहरणमनुसृत्य भूतकालिकक्रियाणां स्थाने क्तवतुप्रत्ययप्रयोगेण वाक्यपरिवर्तनं कुरुत—

यथा— अध्यापकः उद्धण्डं छात्रम् अदण्डयत्।

- अध्यापकः उद्धण्डं छात्रं दण्डितवान्।
- i) छात्रः कक्षायाम् उच्चैः अहसत्।
- ii) माता भोजनम् अपचत्।
- iii) काकः घटे पाषाणखण्डानि अक्षिपत्।
- iv) छात्राः बसयानस्य प्रतीक्षायाम् अतिष्ठन्।
- v) कन्या: उद्याने अक्रीडन्।

प्र. 4. उदाहरणमनुसृत्य भूतकालिकक्रियाणां स्थाने वाक्यपरिवर्तनं कुरुत—

यथा— अध्यापकः छात्रम् पठनाय अकथयत्।

अध्यापकेन छात्रः पठनाय कथितः।

- i) वानरः मकराय जम्बूफलानि अयच्छत्।
- ii) मकरः वानरं गृहं चलितुम् अकथयत्।
- iii) नकुलः सर्पम् अमारयत्।
- iv) श्यामः लेखम् अलिखत्।
- v) रमा कथाम् अपठत्।

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य अशुद्धवाक्यानि शुद्धीकृत्य लिखत—

यथा— बालकेन जलं पीतवान्

i) बालकः जलं पीतवान्।

ii) बालकेन जलं पीतम्।

- i) मोहनेन पुस्तकं नीतवान्। i)
- ii) गीता पाठं पठितम्। i)
- ii)
- iii) आचार्येण शिष्य उपदिष्टवान्। i)
- ii)
- iv) कन्या गृहे क्रीडितम्। i)
- ii)
- v) सः भोजनम् कृतम्। i)
- ii)

तव्यत् (तव्य) तथा अनीयर् (अनीय)

'चाहिए' या 'योग्य' के अर्थों में धातु में 'तव्यत्' (तव्य) तथा 'अनीयर्' (अनीय) प्रत्ययों का योग किया जाता है।

गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्
पठ् + तव्यत्	=	पठितव्यम्
हस् + तव्यत्	=	हसितव्यम्
रक्ष् + तव्यत्	=	रक्षितव्यम्
जि + तव्यत्	=	जेतव्यम्
दा + तव्यत्	=	दातव्यम्
कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्
चुर् + तव्यत्	=	चोरयितव्यम्
दृश् + तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्
स्मृ + तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्
गम् + अनीयर्	=	गमनीयम्
पठ् + अनीयर्	=	पठनीयम्
हस् + अनीयर्	=	हसनीयम्
रक्ष् + अनीयर्	=	रक्षणीयम्
जि + अनीयर्	=	जयनीयम्
दा + अनीयर्	=	दानीयम्
कृ + अनीयर्	=	करणीयम्
चुर् + अनीयर्	=	चोरणीयम्
दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयम्
स्मृ + अनीयर्	=	स्मरणीयम्
स्ना + अनीयर्	=	स्नानीयम्
श्रु + अनीयर्	=	श्रवणीयम्
लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयम्

- वाक्य में तत्व्यत् तथा अनीयर् प्रत्ययों से युक्त शब्दों के योग में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। अर्थात् इनका सकर्मक धातुओं के योग में कर्मवाच्य में अथवा अकर्मक धातुओं के योग में भाव में ही प्रयोग किया जाता है।
- सकर्मक धातुओं से तत्व्यत् प्रत्यय लगने पर बने शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

यथा— मया ग्रन्थः पठितव्यः ।

मया कथा पठितव्या ।

मया पुस्तकं पठितव्यम् ।

- इन प्रत्ययों में कर्ता में तृतीया एवं कर्म में प्रथमा का प्रयोग होता है तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

यथा— बालकेन पाठः पठितव्यः ।

बालकेन कथा पठितव्या ।

बालकेन पुस्तकम् पठितव्यम् ।

- क्रिया के रूप में इन प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' के अर्थ में तथा विशेषण के रूप में इन प्रत्ययों का प्रयोग 'योग्य' के अर्थ में होता है।

यथा— छात्रेण पठितव्यः पाठः पठितव्यः ।

इस वाक्य में 'पाठः' से पूर्व प्रयुक्त 'पठितव्यः' विशेषण के रूप में है तथा पश्चात् प्रयुक्त पठितव्यः क्रिया रूप में है, अतः इसका अर्थ हुआ— छात्र के द्वारा पढ़ने योग्य पाठ को पढ़ा जाना चाहिए।

एवमेव श्रावणीया कथा श्रावयितव्या।

सुनाने योग्य कहानी सुनानी चाहिए।

यत्-ण्यत्-क्यप् प्रत्यय

इन तीनों प्रत्ययों का 'य' ही शेष रहता है तथा तीनों एक ही अर्थ 'चाहिए' अथवा 'योग्य' के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। परन्तु इनके प्रयोग स्थल भिन्न-भिन्न होते हैं।

यत्— अधिकांशतः: अजन्त धातुओं के साथ 'यत्' प्रत्यय प्रयुक्त होता है और धातु के 'इकार' को 'ए' और उसको 'अय्' आदेश तथा 'उकार' को 'ओ' और उसको 'अव्' हो जाता है।

उदाहरण—

	पुं.	स्त्री.	नपुं.
जि+ यत्	जेयः	जेया	जेयम्
गै+ यत्	गेयः	गेया	गेयम्
चि+यत्	चेयः	चेया	चेयम्
श्रु+ यत्	श्रव्यः	श्रव्या	श्रव्यम्
दा+ यत्	देयः	देया	देयम्
भू+ यत्	भव्यः	भव्या	भव्यम्
नी+ यत्	नेयः	नेया	नेयम्
स्था+यत्	स्थेयः	स्थेया	स्थेयम्

ण्यत्— अधिकांशतः क्रकारान्त तथा हलन्त धातुओं से परे 'चाहिए' तथा 'योग्य' अर्थ को बताने के लिए 'ण्यत्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है और ण्यत् से पूर्व 'ऋ' की वृद्धि हो जाती है। हलन्त धातु की उपधा में यदि 'अ' हो तो उसे वृद्धि करने पर दीर्घ 'आ' हो जाता है। यदि उपधा में इ, उ या ऋ हो तो क्रमशः ए, और ओ 'अर्' हो जाते हैं। इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उदाहरण—

	पुं.	स्त्री.	नपुं.
स्मृ+ण्यत् (य)	स्मार्यः	स्मार्या	स्मार्यम्
लिख्+ण्यत् (य)	लेख्यः	लेख्या	लेख्यम्
पठ्+ण्यत् (य)	पाठ्यः	पाठ्या	पाठ्यम्
त्यज्+ण्यत् (य)	त्याज्यः	त्याज्या	त्याज्यम्
वच्+ण्यत् (य)	वाच्यः	वाच्या	वाच्यम्
कृ+ण्यत् (य)	कार्यः	कार्या	कार्यम्
हृ+ण्यत् (य)	हार्यः	हार्या	हार्यम्
सेव् + ण्यत् (य)	सेव्यः	सेव्या	सेव्यम्
चुर् + ण्यत् (य)	चौर्यः	चौर्या	चौर्यम्
ग्रह् + ण्यत् (यि)	ग्राह्यः	ग्राह्या	ग्राह्यम्

क्यप्— √इ (जाना), √स्तु (स्तुति करना), √शास् (कहना), √वृ (वरण करना), √दृ (आदर करना) आदि कुछ धातुओं से 'क्यप्' प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय के योग से धातु में 'गुण' या वृद्धि नहीं होती तथा हस्त स्वरान्त धातु के बाद 'त्' आगम होता है।

उदाहरण—

इ + क्यप् = इत्य (जिस के पास जाना चाहिए)

शास् + क्यप् = शिष्य (जिसे उपदेश देना/कहना चाहिए)

स्तु + क्यप् = स्तुत्य (स्तुति के योग्य)

वृ + क्यप् = वृत्य (वरण करने/चुनने योग्य) इत्यादि।

अभ्यासकार्यम्

- प्र. 1.** कोष्ठके दत्तान् प्रकृतिप्रत्ययान् संयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—
- रामस्य चरित्रं सर्वैः (अनु + कृ + अनीयर्)
 - बालैः कन्दुकम् (क्रीड + तव्यत्)
 - अस्माभिः गुरुपदेशः (श्रु + तव्यत्)
 - मया नौका (आ + रुह् + अनीयर्)
 - कः अत्र आगत्य (लिख् + तव्यत्) लेखं लेखिष्यति ?
- प्र. 2.** कृ—कर्तव्यम्, करणीयम् इति उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितैः धातुभिः द्वे द्वे पदे रचयत—
- गम्
 - स्मृ
 - नी
 - दृश्
 - दा
- प्र. 3.** स्तम्भौ यथोचितं योजयत—
- | अ | ब |
|-----------|------------|
| दुधम् | रक्षणीया: |
| पुस्तकानि | आरोहणीया |
| ईश्वरः | पातव्यम् |
| नौका | अधेतव्याः |
| वृक्षाः | पठितव्यानि |
| कथा | स्मरणीयः |
| ग्रन्थाः | लेखितव्याः |
| लेखाः | श्रवणीया |

प्र. 4. यथास्थानं प्रकृतिप्रत्ययोगं विभागं वा कुरुत—

- | | | |
|-------|--------------------|-------|
| i) | पेयम् | |
| ii) | दा + यत् | |
| iii) | सेव्यम् | |
| iv) | कृ + ण्यत् | |
| v) | कर्तव्यः | |
| vi) | प्र + आप् + तव्यत् | |
| vii) | स्मरणीयः | |
| viii) | हस् + अनीयर् | |
| ix) | लेखनीयम् | |
| x) | प्रच्छ् + तव्यत् | |

प्र. 5. शुद्धपदेन वाक्यपूर्ति कुरुत—

- | | | |
|------|------------------|-----------------------|
| i) | जलम् | (पातव्यम्/पीतव्यम्) |
| ii) | पाठः | (पठितव्यः/पठितव्यम्) |
| iii) | शत्रुः | (जेतव्यः/जितव्यः) |
| iv) | असत्यवचनम् | (त्याज्यम्/त्याज्यः) |
| v) | अपेयं जलम् | (त्याग्यम्/त्याग्यम्) |
| vi) | धनम् | (लभ्यम्/लभियम्) |

णिनि (इन्)

- कर्ता अर्थ में ग्रह् आदि धातुओं से 'णिनि' (इन्) प्रत्यय का योग किया जाता है।

ग्रह् + णिनि	=	ग्राहिन्	=	ग्राही
स्था + णिनि	=	स्थायिन्	=	स्थायी
शाल + णिनि	=	शालिन्	=	शाली
दा + णिनि	=	दायिन्	=	दायी

कर्तृवाचक (ण्वुल् तथा तृच्)

- कर्ता अर्थ में किसी भी धातु से 'ण्वुल्' (वु) तथा 'तृच्' (तृ) प्रत्ययों का योग किया जाता है। 'वु' का अक हो जाता है। ण्वुल् के लगाने पर धातु के अंत में स्थित स्वर की वृद्धि होती है तथा उपधा स्थित लघु वर्ण का गुण होता है।

उदाहरण—

पच् + ण्वुल् (अक)	=	पाचकः
श्रु + ण्वुल् (अक)	=	श्रावकः
पठ् + ण्वुल् (अक)	=	पाठकः
नृत् + ण्वुल् (अक)	=	नर्तकः
लिख् + ण्वुल् (अक)	=	लेखकः
सिच् + ण्वुल् (अक)	=	सेचकः
प्र + आप् + ण्वुल् (अक)	=	प्रापकः
त्रस् + ण्वुल् (अक)	=	त्रासकः
नी + ण्वुल् (अक)	=	नायकः
ग्रह् + ण्वुल् (अक)	=	ग्राहकः
हन् + तृच् = हन्तृ	=	हन्ता
जि + तृच् = जेतृ	=	जेता
श्रु + तृच् = श्रोतृ	=	श्रोता

नी + तृच् = नेतृ	=	नेता
दा + तृच् = दातृ	=	दाता
कृ + तृच् = कर्तृ	=	कर्ता
कथ् + तृच् = कथयितृ	=	कथयिता
वच् + तृच् = वक्तृ	=	वक्ता

क्रितन् (ति)

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु के साथ 'क्रित्न्' (ति) प्रत्यय का प्रयोग होता है। क्रित्न् प्रत्ययान्त शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग होते हैं। इनके रूप 'मति' शब्द के रूपों की भाँति चलते हैं।

श्रु + क्रित्न्	=	श्रुतिः
भी + क्रित्न्	=	भीतिः
कृ + क्रित्न्	=	कृतिः
भज् + क्रित्न्	=	भक्तिः
दृश् + क्रित्न्	=	दृष्टिः
मन् + क्रित्न्	=	मतिः
बुध् + क्रित्न्	=	बुद्धिः
वच् + क्रित्न्	=	उक्तिः
प्र + आप् + क्रित्न्	=	प्राप्तिः
स्तु + क्रित्न्	=	स्तुतिः

ल्युट् (यु = अन)

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु से 'ल्युट्' (यु = अन) प्रत्यय का योग किया जाता है। इस प्रत्यय के (यु = अन) को धातु के साथ जोड़ा जाता है।
- ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द प्रायः नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, क्योंकि ल्युट् प्रत्यय का अर्थ 'भाव' होता है। इनके रूप 'फल' शब्द के रूपों की तरह चलते हैं।

उदाहरण—

भू + ल्युट् (यु = अन)	=	भवनम्
-----------------------	---	-------

पा + ल्युट् (यु = अन)	=	पानम्
शु + ल्युट् (यु = अन)	=	श्रवणम्
गम् + ल्युट् (यु = अन)	=	गमनम्
पठ + ल्युट् (यु = अन)	=	पठनम्
लिख् + ल्युट् (यु = अन)	=	लेखनम्
दा + ल्युट् (यु = अन)	=	दानम्
भज् + ल्युट् (यु = अन)	=	भजनम्
हन् + ल्युट् (यु = अन)	=	हननम्
ग्रह् + ल्युट् (यु = अन)	=	ग्रहणम्
यज् + ल्युट् (यु = अन)	=	यजनम्
गण + ल्युट् (यु = अन)	=	गणनम्
पाल् + ल्युट् (यु = अन)	=	पालनम्
सेव् + ल्युट् (यु = अन)	=	सेवनम्

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. उदाहरणमनुसृत्य पदेषु प्रयुक्तान् प्रकृतिप्रत्ययान् लिखत—

उदाहरण—	पदम्	प्रकृतिः	प्रत्ययः
गतिः	गम्	क्तिन्	
i) हसनम्	
ii) पाठकः	
iii) खाद्यः	
iv) दृश्यः	
v) भक्तिः	
vi) सौभाग्यशालिन्	
(vii) नेता	
(viii) गायकः	

प्र. 2. अधोलिखितप्रत्ययानां प्रयोगेण पञ्च, पञ्च पदानि रचयित्वा स्वपुस्तिकासु लिखत—तृच्, क्तिन्, ण्वुल्, ल्युट्, यत्।

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु कः प्रत्ययः प्रयुक्तः इति कोष्ठकेभ्यः चित्वा लिखत—

i)	सज्जनानाम् उक्तिः पालनीया (ल्युट्/क्तिन्)
ii)	सेचकः क्षेत्रं सिज्चति (ल्युट्/ण्वुल्)
iii)	श्रावकः कथां श्रावयति (ल्युट्/ण्वुल्)
iv)	भक्तः भक्तिं करोति (ण्वुल्/क्तिन्)

प्र. 4. शुद्धरूपं चित्वा लिखत—

i)	गम् + क्तिन् — गतिः / गमतिः
ii)	दा + तृच् — दातृ / दानी
iii)	नी + ण्वुल् — नाविकः / नायकः
iv)	नृत् + ल्युट् — नर्तकः / नर्तनम्
v)	दृश् + ल्युट् — दृश्यम् / दर्शनम्

2. तद्वित प्रत्यय

- संज्ञा, विशेषण तथा कृदन्त आदि (प्रातिपदिक) शब्दों के साथ लगकर अर्थ परिवर्तन करने वाले प्रत्ययों को तद्वित प्रत्यय कहते हैं।
- तद्वित प्रत्ययान्त शब्दों में कारक विभक्तियाँ लगती हैं। विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने वाले तद्वित प्रत्यय अनेक हैं। कतिपय प्रमुख तद्वित प्रत्ययों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

मतुप् (मत्)

'वाला' अर्थात् 'इसके पास है', इस अर्थ में स्वरान्त शब्दों से 'मतुप्' प्रत्यय का योग किया जाता है। 'उप्' का लोप होकर शब्दों से केवल 'मत्' जुड़ता है।

उदाहरण—

शक्ति + मतुप्	=	शक्तिमत् (शक्तिमान्), शक्तिवाला
श्री + मतुप्	=	श्रीमत् (श्रीमान्), श्रीवाला
धी + मतुप्	=	धीमत् (धीमान्), बुद्धिवाला
बुद्धि + मतुप्	=	बुद्धिमत् (बुद्धिमान्), बुद्धिवाला
मधु + मतुप्	=	मधुमत् (मधुमान्), मधुवाला
इक्षु + मतुप्	=	इक्षुमत् (इक्षुमान्), गन्नेवाला
कीर्ति + मतुप्	=	कीर्तिमत् (कीर्तिमान्), कीर्तिवाला

वतुप् (वत्)

- 'वाला' या 'इससे युक्त' अर्थ में अकारान्त तथा अनेक हलन्त शब्दों से 'वतुप्' (वत्) प्रत्यय होता है।
- 'शब्दान्त' या 'उपधा' में अ/आ या म् होने पर मतुप् के स्थान पर 'वतुप्' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

धन + वतुप्	=	धनवत् (धनवान्), धनवाला
बल + वतुप्	=	बलवत् (बलवान्), बलवाला

- रूप + वतुप् = रूपवत् (रूपवान्), रूपवाला
 विद्या + वतुप् = विद्यावत् (विद्यावान्), विद्यावाला
 गुण + वतुप् = गुणवत् (गुणवान्), गुणवाला
 लक्ष्मी + वतुप् = लक्ष्मीवत् (लक्ष्मीमान्), लक्ष्मीवाला
- मतुप्, वतुप् प्रत्ययों से युक्त शब्दों के रूप पूँलिङ्ग में 'भवत्', स्त्रीलिङ्ग में 'नदी' तथा नपुंसकलिङ्ग में 'जगत्' शब्द के समान चलते हैं।

इनि (इन्)

- 'वाला' या 'युक्त' अर्थ में अकारान्त शब्दों से 'इनि' (इन्) प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरण—

- रथ + इनि = रथिन् (रथी), रथवाला या रथ से युक्त
 दण्ड + इनि = दण्डिन् (दण्डी), दण्डवाला या दण्ड से युक्त
 बल + इनि = बलिन् (बली), बलवाला या बल से युक्त
 गुण + इनि = गुणिन् (गुणी), गुणवाला या गुण से युक्त
 धन + इनि = धनिन् (धनी), धनवाला या धन से युक्त
- वाक्यों में इनि प्रत्यय युक्त शब्दों का आवश्यकतानुसार शब्दरूप बनाकर प्रयोग किया जाता है।

यथा— गुणी जनः शोभते। (प्रथमा, एकवचन)

गुणिनः सर्वत्र पूज्यन्ते। (प्रथमा, बहुवचन)

धनिनः अद्यत्वे अधिकं धनं लब्ध्य यतन्ते। (प्रथमा, बहुवचन)

बलिना पुरुषेण सर्वत्र बलस्य एव प्रयोगः क्रियते। (तृतीया, एकवचन)

तरप् (तर)

- दो में किसी एक को बेहतर बताने के लिए 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—

प्रशस्य + तरप्	= प्रशस्यतरः	चतुर + तरप्	= चतुरतरः
गुरु + तरप्	= गुरुतरः	दीर्घ + तरप्	= दीर्घतरः
लघु + तरप्	= लघुतरः	सुन्दर + तरप्	= सुन्दरतरः
पटु + तरप्	= पटुतरः	स्थिर + तरप्	= स्थिरतरः
कुशल + तरप्	= कुशलतरः	तीव्र + तरप्	= तीव्रतरः
उच्च + तरप्	= उच्चतरः	मधुर + तरप्	= मधुरतरः

यथा— रामलक्ष्मणयोः रामः प्रशस्यतरः आसीत्। अश्वगजयोः अश्वः तीव्रतरः। मोहनसोहनयोः मोहनः पटुतरः।

तमप् (तम)

- दो से अधिक में किसी एक की सर्वश्रेष्ठता प्रकट करने के लिए 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—

उच्च + तमप्	= उच्चतमः	मधुर + तमप्	= मधुरतमः
गुरु + तमप्	= गुरुतमः	दीर्घ + तमप्	= दीर्घतमः
लघु + तमप्	= लघुतमः	स्थिर + तमप्	= स्थिरतमः
पटु + तमप्	= पटुतमः	सुन्दर + तमप्	= सुन्दरतमः
कुशल + तमप्	= कुशलतमः	तीव्र + तमप्	= तीव्रतमः

यथा— कक्षायाः छात्रेषु मोहनः पटुतमः, पशुषु अश्वः धावने तीव्रतमः इत्यादि

मयट् (मय)

- प्रचुरता के अर्थ में 'मयट्' (मय) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
- वस्तुवाचक शब्दों से (खाद्य वस्तुओं को छोड़कर) विकार अर्थ में भी मयट् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—

शान्ति + मयट्	=	शान्तिमयः
आनन्द + मयट्	=	आनन्दमयः

सुख + मयट्	=	सुखमयः
तेजः + मयट्	=	तेजोमयः
मृत् + मयट्	=	मृण्मयः
स्वर्ण + मयट्	=	स्वर्णमयः
लौह + मयट्	=	लौहमयः

अण् (अ)

- अपत्य (पुत्र या पुत्री) अर्थ में शब्द से अण् प्रत्यय का योग किया जाता है। अण् प्रत्यय करने पर आदि स्वर की वृद्धि होती है।

उदाहरण—

वसुदेव + अण्	= वासुदेवः	मनु + अण्	= मानवः
वशिष्ठ + अण्	= वाशिष्ठः	पुत्र + अण्	= पौत्रः
विश्वामित्र + अण्	= वैश्वामित्रः	कुरु + अण्	= कौरवः
अश्वपति + अण्	= आश्वपतः	दनु + अण्	= दानवः
यदु + अण्	= यादवः	पण्डु + अण्	= पाण्डवः

यथा— वासुदेवः कृष्णः पूज्यः अस्ति।

- भाव में भी अण् प्रत्यय होता है—

कुशल + अण्	= कौशलम्
गुरु + अण्	= गौरवम्
शिशु + अण्	= शैशवम्
मृदु + अण्	= मार्दवम्
लघु + अण्	= लाघवम्

यथा— कर्मसु कौशलं शोभनम् अस्ति।

ठक् (इक)

- शब्दों से भाव अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। ठक् का 'इक' हो जाता है तथा शब्द के आदि स्वर की वृद्धि होती है।

उदाहरण—

वाच् + ठक्	= वाचिक
------------	---------

शरीर + ठक्	= शारीरिक
धर्म + ठक्	= धार्मिक
कर्म + ठक्	= कार्मिक
नगर + ठक्	= नागरिक
भूत + ठक्	= भौतिक
अध्यात्म + ठक्	= आध्यात्मिक

इतच् (इत)

- ‘सहित’ या ‘युक्त’ अर्थ में तारक आदि शब्दों से ‘इतच्’ प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरणम्—

तारक + इतच्	= तारकितः	बुभुक्षा + इतच्	= बुभुक्षितः
पिपासा + इतच्	= पिपासितः	कण्टक + इतच्	= कण्टकितः
कुसुम + इतच्	= कुसुमितः	गर्व + इतच्	= गर्वितः
क्षुधा + इतच्	= क्षुधितः	व्याधि + इतच्	= व्याधितः
अंकुर + इतच्	= अंकुरितः	उत्कण्ठा + इतच्	= उत्कण्ठितः
हर्ष + इतच्	= हर्षितः	तरंग + इतच्	= तरंगितः
दीक्षा + इतच्	= दीक्षितः		

यथा— बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।

क्षुधितः बालकः इतस्ततः भ्रमति।

पिपासितः काकः जलम् अन्वेषयति।

त्व तथा तल्

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्दों से ‘त्व’ और ‘तल्’ (ता) प्रत्ययों का योग किया जाता है।

उदाहरण—

मूर्ख + त्व	= मूर्खत्वम्	मूर्ख + तल्	= मूर्खता
विद्वस् + त्व	= विद्वत्वम्	विद्वस् + तल्	= विद्वत्ता

महत् + त्व	= महत्त्वम्
पवित्र + त्व	= पवित्रत्वम्
पशु + त्व	= पशुत्वम्
गुरु + त्व	= गुरुत्वम्
लघु + त्व	= लघुत्वम्
मित्र + त्व	= मित्रत्वम्

महत् + तल्	= महत्ता
पवित्र + तल्	= पवित्रता
पशु + तल्	= पशुता
गुरु + तल्	= गुरुता
लघु + तल्	= लघुता
मित्र + तल्	= मित्रता

- 'त्व' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' शब्द की तरह चलते हैं।
- 'ता' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'रमा' शब्द की तरह चलते हैं।

यत्

- शरीर के अवयववाची शब्दों से 'होने वाला' इस अर्थ में 'यत्' प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरण—

कण्ठ + यत्	= कण्ठे भवम्	कण्ठ्यम्
दन्त + यत्	= दन्ते भवम्	दन्त्यम्
ओष्ठ + यत्	= ओष्ठे भवम्	ओष्ठ्यम्

थाल् (था)

- किम् आदि सर्वनामों से 'प्रकार' अर्थ में 'थाल्' प्रत्यय का योग किया जाता है। थाल् का 'था' शेष रहता है।

उदाहरण—

यद् + थाल्	=	यथा
तद् + थाल्	=	तथा
सर्व + थाल्	=	सर्वथा
उभय + थाल्	=	उभयथा

तसिल्

- प्रयाग + तसिल् = प्रयागतः— पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में 'तसिल्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। तसिल् का केवल 'तस्' भाग बचता है। तसिल् प्रत्यय जोड़ने पर जो शब्द बनते हैं, वे अव्यय होते हैं। जब कोई वस्तु या व्यक्ति किसी स्थान से अलग होते हैं तो उस स्थान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— देवदत्तः 'प्रयागात् काशीं गच्छति' वाक्य में देवदत्त, प्रयाग से अलग हो रहा है। अतः प्रयाग में पञ्चमी हुई है। प्रयागात् के स्थान पर प्रयागतः (तसिल् प्रत्ययान्त) का भी प्रयोग हो सकता है।

यथा—

पञ्चमी पदानि तसिल् पदानि

ग्रामात्	ग्रामतः	ग्रामतः वनं दूरे नास्ति।
वृक्षात्	वृक्षतः	वृक्षतः पत्राणि पतन्ति।
वाराणस्या:	वाराणसीतः	वाराणसीतः प्रयागः पश्चिमे वर्तते।
नवदिल्ल्याः	नवदिल्लीतः	नवदिल्लीतः हरिद्वारनगरम् उत्तरे वर्तते।
तस्मात्	ततः	ततः आगच्छति।
एतस्मात्	इतः	इतः गच्छति।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. निम्नलिखितप्रयोगान् ध्यानेन पठित्वा स्थूलपदेषु प्रकृति-प्रत्ययानां विभागं कुरुत—

- i) कालिदासः कीर्तिमान् आसीत्
- ii) एतौ बालकौ बलवन्तौ स्तः।
- iii) एते जनाः गुणवन्तः सन्ति।
- iv) धनी सर्वत्र समादरं प्राप्नोति।
- v) बलिनौ अन्यायं न सहतः।
- vi) गुणिनः आत्मश्लाघान् न कुर्वन्ति।
- vii) पिता आकाशात् श्रेष्ठतरः।
- viii) धरित्री मातुः अपि गंभीरतरा।
- ix) कदलीफलम् आम्रात् मधुरतमम्।
- x) हिमालयः भारतस्य उच्चतमः पर्वतः अस्ति।

प्र. 2. प्रत्ययं संयुज्य पदनिर्माणं कुरुत—

- i) श्री + मतुप्
ii) शक्ति + वतुप्
iii) धन + वतुप्
iv) बल + वतुप्
v) गुरु + तल्
vi) सुन्दर + मयट्
vii) पटु + तमप्
viii) मृत् + मयट्
ix) वसुदेव + अण्
x) धर्म + ठक्
xi) मित्र + तल्
xii) विद्वस् + त्व

प्र. 3. कोष्ठके दत्तैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत—

- i) धर्मेन्द्रः बालाभ्याम्। (प्रशस्यतरः/प्रशस्यतमः)
- ii)राजः दशरथस्य राजगुरुः आसीत्। (वाशिष्ठः/वशिष्ठः)

- iii) बालिकासु माया (चतुरतरा / चतुरतमा)
- iv) पाण्डवानाम् दर्शनीयम् आसीत् (युद्धकौशलम्/युद्ध कुशलम्)
- v) आभूषणम् बहुमूल्यं भवति। (स्वर्णमयः / स्वर्णमयम्)
- vi) रावणः आसीत् । (दानवः / दनुजः)
- vii) जनः औषधिं सेवते। (व्याधितः / व्याधिः)
- viii) बालिकासु चंद्रकला वदति (मधुरतरम्/मधुरतमम्)
- ix) बालकेषु विजयस्य टड्कणगतिः (तीव्रतरा / तीव्रतमा)

प्र. 4. विशेष्यविशेषणे परस्परं योजयत—

- | | | | |
|------|------------|---|---------|
| i) | कीर्तिमान् | — | मञ्जूषा |
| ii) | उत्तम् | — | पुरुषः |
| iii) | उच्चतमः | — | कार्यम् |
| iv) | लौहमयी | — | पर्वतः |

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत—

यथा— धीमान् = धी + मतुप्

- | | | | |
|-------|----------|-------|-------|
| i) | मधुरतमः | | |
| ii) | तीव्रतरः | | |
| iii) | वासुदेवः | | |
| iv) | कार्मिकः | | |
| v) | दन्त्यम् | | |
| vi) | मृण्मयः | | |
| vii) | पिपासितः | | |
| viii) | लघुता | | |
| ix) | वीरतमः | | |
| x) | नदीतः | | |

**प्र. 6. अधोलिखितेषु शब्देषु तसिल्प्रत्ययं संयुज्य वाक्यरचनां कुरुत—
पर्वतः, नगरम्, भूमि:, भानुः, नदी।**

प्र. 7. कोष्ठकेषु प्रदत्तेषु शब्देषु तसिल्प्रत्ययं संयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

- i) छात्रः आगच्छति । (विद्यालय)
- ii) देवदत्तः काशीं गच्छति। (मथुरा)
- iii) वयं जलम् आहराम्। (नदी)
- iv) सः गतः। (देवालय)

3. स्त्री प्रत्यय

पुँलिलङ्ग शब्दों में जिन प्रत्ययों को लगाकर स्त्रीलिलङ्ग या स्त्रीवाचक शब्द बनाए जाते हैं, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

1. आ (टाप्, डाप्, चाप्)
2. ई (डीप्, डीष्, डीन्)

आ (टाप्, डाप्, चाप्)

- अकारान्त पुँलिलङ्ग शब्दों से स्त्रीलिलङ्ग शब्द बनाने के लिए टाप् 'आ' प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण—

अश्व + टाप् (आ)	=	अश्वा
सुत + टाप् (आ)	=	सुता
सरल + टाप् (आ)	=	सरला
प्रथम + टाप् (आ)	=	प्रथमा

- यदि पुँलिलङ्ग शब्द के अन्त में 'अक' हो तो 'आ' प्रत्यय लगने पर 'इक' हो जाता है।

उदाहरण—

बालक + आ	=	बालिका
मूषक + आ	=	मूषिका
शिक्षक + आ	=	शिक्षिका
साधक + आ	=	साधिका
गायक + आ	=	गायिका
नायक + आ	=	नायिका

ई (डीप्, डीष्, डीन्)

- क्रकारान्त एवं नकारान्त पुँलिलङ्ग शब्दों को स्त्रीलिलङ्ग शब्द में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण—

कर्तृ + ई	=	कर्त्री
-----------	---	---------

दातृ + ई	=	दात्री
धातृ + ई	=	धात्री
तपस्विन् + ई	=	तपस्विनी
गुणिन् + ई	=	गुणिनी

- अकारान्त पुँलिलिङ्ग शब्दों तथा कतिपय जातिवाचक शब्दों में भी 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिलिङ्ग शब्द बनाया जाता है।

उदाहरण—

नद + ई	=	नदी
देव + ई	=	देवी
भयड़कर + ई	=	भयड़करी
गोप + ई	=	गोपी
महिष + ई	=	महिषी
शूकर + ई	=	शूकरी
ब्राह्मण + ई	=	ब्राह्मणी
मृग + ई	=	मृगी

- द्विगु समास का अन्तिम शब्द यदि अकारान्त है तो 'ई' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

त्रिलोक + ई	=	त्रिलोकी
पंचवट + ई	=	पंचवटी

- शतृ प्रत्ययान्त शब्दों को स्त्रीलिलिङ्ग में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

गच्छत् + ई	=	गच्छन्ती
वदत् + ई	=	वदन्ती
दर्शयत् + ई	=	दर्शयन्ती

- इसके अतिरिक्त भी 'ई' प्रत्यय के योग से स्त्रीलिलिङ्ग शब्द बनाए जाते हैं।

उदाहरण—

श्रीमत् + ई	=	श्रीमती
-------------	---	---------

भवत् + ई = भवती

गतवत् + ई = गतवती

- जाया अर्थ में पुँलिलङ्ग शब्दों से (डीष्) (ई) प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण—

इन्द्र + डीष् = इन्द्राणी

वरुण + डीष् = वरुणानी

भव + डीष् = भवानी

मातुल + डीष् = मातुलानी

रुद्र + डीष् = रुद्राणी

- कुछ शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिए 'आ' और 'ई' दोनों प्रत्यय लगाए जाते हैं।

उदाहरण—

आचार्य-आचार्या (जो स्वयं पढ़ती है) आचार्याणी (आचार्य की पत्नी),
उपाध्याय-उपाध्याया-उपाध्यायानी एवमेव क्षत्रिय-क्षत्रिया-क्षत्रियाणी

ति प्रत्यय

- युवन् शब्द से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ति' प्रत्यय लगाया जाता है।
युवन् + ति = युवतिः

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. निर्देशानुसारं लिङ्गपरिवर्तनं कुरुत—

- बालक (स्त्री.)
- आराध्या (पु.)
- प्रथमा (पु.)
- साधक (स्त्री.)
- आचार्या (पु.)
- धातृ (स्त्री.)



0974CH09

नवम अध्याय

समास परिचय

'समसनम्' इति समासः। इस प्रकार 'समास' शब्द का अर्थ है— संक्षेपण। अर्थात् दो या दो से अधिक पदों में प्रयुक्त विभक्तियों, समुच्चय बोधक 'च' आदि को हटाकर एक पद बनाना। यथा— गायने कुशला = गायनकुशला। इसी तरह राजः पुरुषः = राजपुरुषः पदों में विभक्ति-लोप, सीता च रामश्च = सीतारामौ में समुच्चय बोधक 'च' का लोप हुआ है। इसी प्रकार विद्या एवं धनं यस्य सः = विद्याधनः पद में कुछ पदों का लोप कर संक्षेपण किया द्वारा गायनकुशला, राजपुरुषः, सीतारामौ तथा विद्याधनः पद बनाए गए हैं।

कहीं-कहीं पदों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं भी होता है।

यथा— खेचरः, युधिष्ठिरः, वनेचरः आदि ऐसे समासों को अलुक् समास कहते हैं। पदों की प्रधानता के आधार पर समास के मुख्यतः चार भेद होते हैं— (1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष (3) द्वन्द्व तथा (4) बहुव्रीहि। तत्पुरुष के दो उपभेद भी हैं— कर्मधारय एवं द्विगु। इस प्रकार सामान्य रूप से समास के छः भेद हैं।

1. अव्ययीभाव

इस समास में पहला पद अव्यय होने के साथ ही साथ प्रधान भी होता है। समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है तथा नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, यथा—

यथाशक्ति	=	शक्तिम् अनतिक्रम्य
निर्विघ्नम्	=	विघ्नानाम् अभावः
उपगड्गाम्	=	गड्गायाः समीपम्
अनुरूपम्	=	रूपस्य योग्यम्

प्रत्येकम्	=	एकम् एकम् इति
प्रतिगृहम्	=	गृहं गृहम् इति
निर्मक्षिकम्	=	मक्षिकाणाम् अभावः
उपनदम्	=	नद्याः समीपम्
प्रत्यक्षम्	=	अक्षणोः प्रति
परोक्षम्	=	अक्षणोः परम्

2. तत्पुरुष समास

इस समास में प्रायेण उत्तर पद की प्रधानता होती है। इसके दोनों पदों में अलग-अलग विभक्तियाँ होती हैं। कहीं-कहीं पर दोनों पदों में समान विभक्ति भी होती है। ऐसी स्थिति में पूर्वपद की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है। इसमें द्वितीया से सप्तमी तक की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है।

उदाहरण—

शरणम् आगतः	=	शरणागतः	} द्वितीया तत्पुरुष
शरणं प्राप्तः	=	शरणप्राप्तः	
सुखं प्राप्तः	=	सुखप्राप्तः	} तृतीया तत्पुरुष
पित्रा युक्त	=	पितृयुक्तः	
सर्पेण दष्टः	=	सर्पदष्टः	} चतुर्थी तत्पुरुष
शरेण विद्धः	=	शरविद्धः	
अनिना दग्धः	=	अनिनदग्धः	} चतुर्थी तत्पुरुष
धनेन हीनः	=	धनहीनः	
विद्यया हीनः	=	विद्याहीनः	
भूताय बलिः	=	भूतबलिः	
दानाय पात्रम्	=	दानपात्रम्	
यूपाय दारु	=	यूपदारु	
स्नानाय इदम्	=	स्नानार्थम्	
तस्मै इदम्	=	तदर्थम्	

चौरात् भयम्	=	चौरभयम्		पञ्चमी तत्पुरुष
रोगात् मुक्तः	=	रोगमुक्तः		
अश्वात् पतिः	=	अश्वपतिः		
स्वर्गात् पतिः	=	स्वर्गपतिः		
सिंहात् भीतः	=	सिंहभीतः		
राज्ञः पुरुषः	=	राजपुरुषः		षष्ठी तत्पुरुष
देवानां पतिः	=	देवपतिः		
नराणां पतिः	=	नरपतिः		
देवस्य पूजा	=	देवपूजा		
सुखस्य भोगः	=	सुखभोगः		
युद्धे निपुणः	=	युद्धनिपुणः		सप्तमी तत्पुरुष
कार्ये कुशलः	=	कार्यकुशलः		
शास्त्रे प्रवीणः	=	शास्त्रप्रवीणः		
जले मग्नः	=	जलमग्नः		
सभायां पण्डितः	=	सभापण्डितः		
न धार्मिकः	=	अधार्मिकः		नव् तत्पुरुष
न सुखम्	=	असुखम्		
न आदि:	=	अनादि:		
न सत्यम्	=	असत्यम्		

तत्पुरुष समास के दो और भी भेद हैं— (i) समानाधिकरण तत्पुरुष अर्थात् कर्मधारय समास (ii) द्विगु समास।

i) कर्मधारय समास

इसके दोनों पदों में विभक्ति समान होती है। इसके तीन स्वरूप होते हैं—

- (क) कभी-कभी विग्रह पदों में पूर्वपद विशेषण होता है तथा उत्तरपद विशेष्य होता है।
- (ख) कभी-कभी पूर्वपद उपमान होता है और उत्तरपद उपमेय होता है।

(ग) कभी-कभी दोनों पद विशेषण होते हैं।

उदाहरण—

नीलम् उत्पलम्	= नीलोत्पलम्	}	कर्मधारय (विशेषण-विशेष्य)
विशालः वृक्षः	= विशालवृक्षः		
मधुरं फलम्	= मधुरफलम्		
ज्येष्ठः पुत्रः	= ज्येष्ठपुत्रः		
कुत्सितः राजा	= कुराजा		
सुन्दरः पुरुषः	= सुपुरुषः		
महान् च असौ राजा	= महाराजः		
घन इव श्यामः	= घनश्यामः		
कमलम् इव मुखम्	= कमलमुखम्	}	कर्मधारय (उपमान-उपमेय)
चन्द्र इव मुखम्	= चन्द्रमुखम्		
नरः सिंह इव	= नरसिंहः		
शीतं च उष्णम्	= शीतोष्णम्		
रक्तश्च पीतः	= रक्तपीतः	}	कर्मधारय (उभयपद-विशेषण)
आदौ सुप्तः पश्चादुत्थितः	= सुप्तोत्थितः		

ii) द्विगु समास

जब कर्मधारय समास का पूर्वपद संख्यावाची हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं।

यह समास सामान्यतः (समूह) अर्थ में होता है। इसके विग्रह में प्रायेण षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। समस्त पद सामान्यतया नपुंसकलिङ्ग एक वचन में होता है।

उदाहरण—

सप्तानां दिनानां समाहारः	=	सप्तदिनम्
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	=	पञ्चपात्रम्
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	=	त्रिभुवनम्

पञ्चानां रात्रीणां समाहारः = पञ्चरात्रम्
 चतुर्णा युगानां समाहारः = चतुर्युगम्

- कभी-कभी द्विगु ईकारान्त स्त्रीलिङ्गी भी हो जाता है—

उदाहरण—

त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी
 पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी
 सप्तानां शतानां समाहारः = सप्तशती
 अष्टानां अध्यायानां समाहारः = अष्टाध्यायी

3. द्वन्द्व समास

जिस समस्त पद में दोनों पदों की प्रधानता होती है वहाँ द्वन्द्व समास होता है। इसके विग्रह में 'च' का प्रयोग होता है, जैसे— लवश्च कुशश्च = लवकुशौ। यहाँ जितनी प्रधानता 'लव' की है उतनी ही प्रधानता 'कुश' की भी है। द्वन्द्व समास के दो रूप माने गए हैं— (1) इतरेतर द्वन्द्व (2) समाहार द्वन्द्व

- इतरेतर द्वन्द्व— जिस समस्त पद में दोनों पदों का अर्थ अलग-अलग होता है, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। समस्त पद में संख्या के अनुसार द्विवचन या बहुवचन होता है, किन्तु लिङ्ग परिवर्तन परवर्ती या उत्तरवर्ती पद के अनुसार होता है।

उदाहरण—

पार्वती च परमेश्वरश्च	=	पार्वतीपरमेश्वरौ
रामश्च कृष्णश्च	=	रामकृष्णौ
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	=	धर्मर्थकाममोक्षाः
सीता च रामश्च	=	सीतारामौ
पुत्रश्च कन्या च	=	पुत्रकन्ये
राधा च कृष्णश्च	=	राधाकृष्णौ
धनञ्च जनश्च यौवनञ्च	=	धनजनयौवनानि

ii) समाहार द्वन्द्व— जहाँ अनेक वस्तुओं का संग्रह दिखाया जाता है अर्थात् समूह की प्रधानता रहती है, वहाँ समाहार द्वन्द्व समाप्त होता है।

उदाहरण—

आहारश्च निद्रा च भयं च इति, एतेषां समाहार = आहारनिद्राभयम्

पाणी च पादौ च = पाणिपादम्

यवाश्च चणकाश्च = यवचणकम्

पुत्रश्च पौत्रश्च = पुत्रपौत्रम्

द्वन्द्व समाप्त के सन्दर्भ में विशेष बातें—

- हस्त इकारान्त तथा हस्त उकारान्त पद को समस्त पद में पहले रखा जाता है।

यथा— वायुश्च सूर्यश्च = वायुसूर्यौ

- द्वन्द्व में स्वरादि और हस्त अकारान्त पद को पहले रखा जाता है।

यथा— ईशश्च कृष्णश्च = ईशकृष्णौ।

- कम स्वर वर्णों वाले पद को पहले रखा जाता है।

यथा— रामश्च केशवश्च = रामकेशवौ।

- हस्त स्वर वाले पद को पहले रखते हैं।

यथा— कुशश्च काशश्च = कुशकाशम्

- श्रेष्ठ या पूज्य पदों का प्रयोग पहले होता है।

यथा— माता च पिता च = मातापितरौ (पिता की अपेक्षा माता अधिक पूजनीय है)

4. बहुब्रीहि समाप्त

जिस समाप्त में पूर्व तथा उत्तर दोनों पद प्रधान न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है, उसे बहुब्रीहि समाप्त कहते हैं।

विग्रह करते समय इसमें 'यस्य सः' आदि लगाया जाता है।

उदाहरण—

महान्तौ बाहू यस्य सः	=	महाबाहुः (विष्णुः)
दश आननानि यस्य सः	=	दशाननः (रावणः)
पीतम् अम्बरम् यस्य सः	=	पीताम्बरः (कृष्णः)
चत्वारि मुखानि यस्य सः	=	चतुर्मुखः (ब्रह्मा)
चक्रं पाणौ यस्य सः	=	चक्रपाणिः (विष्णुः)
शूलं पाणौ यस्य सः	=	शूलपाणिः (शिवः)
चन्द्र इव मुखं यस्याः सा	=	चन्द्रमुखी (नारी)
पाषाणवत् हृदयं यस्य सः	=	पाषाणहृदयः (पुरुषः)
कमलम् इव नेत्रे यस्य सः	=	कमलनेत्रः (सुन्दर आँखों वाला)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	=	चन्द्रशेखरः (शिवः)

एकशेष

जहाँ अन्य पदों का लोप होकर एक ही पद शेष बचे, वहाँ एकशेष होता है। यह समास से भिन्न वृत्ति है।

उदाहरण— बालकश्च बालकश्च बालकश्च = बालकाः।

एकशेष में पुँलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग पदों में से पुँलिङ्ग पद ही शेष रहता है।

यथा— माता च पिता च = पितरौ

दुहिता च पुत्रश्च = पुत्रौ

अभ्यासकार्यम्

- प्र. 1. उदाहरणमनुसृत्य रिक्तस्थानानां पूर्तिः कोष्ठकात् समुचितैः समस्तपदैः
कुरुत—

उदाहरण— तौ लवक्षौ वाल्मीकेः आश्रमे पठतः । (लवक्षे/ लवक्षौ)

- i) जनः नित्यकर्म कृत्वा प्रातराशं करोति। (विशालवृक्षः/ सुप्तोद्धितः)

ii) त्रयाणां लोकानां समाहारः इति कथ्यते। (त्रिलोकी त्रिलोकम्)

iii) क्रषेः आश्रमः अस्ति। (प्रतिगृहम्/ उपगड्गम्)

iv) तव मलिनम् अस्ति। (पाणिपादः/ पाणिपादम्)

v) सैनिकः ब्रणयुक्तः जातः। (स्वर्घपतिः/ अश्वपतिः)

vi) जीवनस्य उद्देश्याः सन्ति। (धर्मार्थकाममोक्षः/ धर्मार्थकाममोक्षाः)

- प्र. 2. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानि आश्रित्य समस्तपदं विग्रहं वा
लिखत—

यथा— भिक्षुः प्रत्येकं गृहं गच्छति।

एकम् एकम् इति

- i) शरणम् आगतः तु सदैव रक्षणीयः।

ii) विद्यया हीनः छात्रः न शोभते।

iii) असत्यं तु त्याज्य भवति।

iv) रामः महाराजः आसीत्।

v) सीता च रामः च वनम् अगच्छताम्।

vi) तडागः नीलोत्पलैः सशोभते।

- प्र. 3. उदाहरणानि पठित्वा तदनुसारं विग्रहं समाप्तनामानि च लिखत।
उदाहरण—

ਪ੍ਰਾਚੀ ਨ ਪਾਵੈ

पाणी व पादा व रापा समाहरः— पाणिनाम् (समाहर इष्ट)

भाता व पिता व शत — भातापितरा (इतररत्न दृष्ट्य)

माता च पिता च इति — पितरा (एकशष्ठ)

i)	ब्राह्मणौ
ii)	सुखदुःखम्
iii)	शिरोग्रीवम्
iv)	रामलक्ष्मणभरताः
v)	अजौ
vi)	बालकाः
vii)	शास्त्रप्रवीणः
viii)	नरसिंहः
ix)	प्रत्यक्षम्
x)	दशाननः

प्र. 4. अधोलिखितवाक्येषु समस्तपदं चित्वा तस्य विग्रहं लिखत—

	समस्तपदम्	विग्रहम्
i)	विष्णुः पीताम्बरं धारयति।
ii)	भवतः कार्यं निर्विघ्नं समापयेत्।
iii)	दुर्गासप्तशती पठितव्या।
iv)	शरविद्धः हंसः भूमौ पतितः।
v)	वृद्धः पुत्रपौत्रम् दृष्टवा प्रसीदति।
vi)	विष्णुः चक्रपाणिः कथ्यते।



0974CH10

दशम अध्याय

कारक और विभक्ति

कारक

वाक्य में जिसके द्वारा क्रिया की सिद्धि हो, उसे कारक कहते हैं (क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्)।

किसी वाक्य में क्रिया के सम्पादन में सहायता करने वाले को कारक कहते हैं (क्रियां करोति निर्वर्तयतीति कारकम्)।

हे बालका! नृपस्य पुत्रः ययाति: स्वभवने कोषात् स्वहस्तेन याचकेभ्यः धनं ददाति

1. कः ददाति?	ययाति: (कर्ता)	प्रथमा विभक्ति
2. किं ददाति?	धनं (कर्म)	द्वितीया विभक्ति
3. केन ददाति?	हस्तेन (करण)	तृतीया विभक्ति
4. केभ्यः ददाति?	याचकेभ्यः (सम्प्रदान)	चतुर्थी विभक्ति
5. कस्मात् ददाति?	कोषात् (अपादान)	पञ्चमी विभक्ति
6. कुत्र ददाति?	स्वभवने (अधिकरण)	सप्तमी विभक्ति

यहाँ नृपतिः आदि पदों का क्रिया के साथ सम्बन्ध है। अतः ये कारक हैं। संस्कृत में सम्बन्ध तथा सम्बोधन को क्रिया से सीधे सम्बद्ध न होने के कारण कारक नहीं माना जाता है। इस वाक्य में नृपस्य पद का ययाति: (कर्ता से) सम्बन्ध है, किन्तु क्रिया ददाति से सीधा सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह हे बालका! का भी क्रिया से सीधा सम्बन्ध नहीं है।

- इस तरह कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण— ये छः कारक हैं।

1. **कर्ता**— क्रिया को स्वतन्त्र रूप से करने वाले को कर्ता कहते हैं।

यथा— गिरीशः पुस्तकं पठति। यहाँ 'पठति' क्रिया को करने वाला 'गिरीश' है। अतएव यह कर्ता कारक है।

2. **कर्म**— क्रिया के सम्पादन में कर्ता के सर्वाधिक अभीष्ट को कर्म कहते हैं।

यथा— गिरीशः पुस्तकं पठति। यहाँ पठन क्रिया के सम्पादन में कर्ता 'गिरीश' के लिए 'पुस्तक' सर्वाधिक अभीष्ट है, अतः कर्मकारक है।

3. **करण**— क्रिया की सिद्धि में कर्ता के प्रमुख सहायक को करण कहते हैं।

यथा— गौरी जलेन मुखं प्रक्षालयति। यहाँ 'प्रक्षालन' क्रिया का प्रमुख सहायक जल है। अतः 'जल' करण कारक है।

4. **सम्प्रदान कारक**— जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य क्रिया जाता है, वहाँ सम्प्रदान कारक होता है।

यथा— वागीशः मित्राय लेखनी ददाति। इस वाक्य में मित्र को लेखनी दी जा रही है, अतः 'मित्राय' सम्प्रदान कारक है। इसी तरह 'माता बालकाय फलम् आनयति' वाक्य में फल लाने का कार्य बालक के लिए हो रहा है, अतः 'बालकाय' सम्प्रदान कारक है।

5. **अपादान कारक**— जिससे कोई वस्तु अलग होती है, वह अपादान कारक होता है। 'वृक्षात्' पत्राणि पतन्ति। यहाँ पते (पत्राणि) वृक्ष से अलग हो रहे हैं, अतः 'वृक्षात्' अपादान कारक है।

6. **अधिकरण कारक**— क्रिया का आधार अधिकरण है।

यथा— मुनिः आसने तिष्ठति। इस वाक्य में तिष्ठति क्रिया का आधार 'आसने' है, अतः आसने अधिकरण कारक है।

7. **सम्बन्ध और सम्बोधन**— जहाँ एक व्यक्ति अथवा वस्तु का दूसरे व्यक्ति अथवा वस्तु से सम्बन्ध प्रकट हो, वहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग क्रिया जाता है।

यथा— रामस्य पुत्रः कुशः गच्छति। यहाँ रामस्य पद में षष्ठी विभक्ति है

जिसका पुत्र कुश से सीधा सम्बन्ध है। अतः ‘रामस्य’ में सम्बन्धवाचक षष्ठी है। सोहनस्य पुस्तकम् अस्ति। यहाँ सोहन का पुस्तक से सीधा सम्बन्ध है, अतः ‘सोहनस्य’ में सम्बन्ध कारक है।

जिसे पुकारा जाए या सम्बोधित किया जाए, उसे सम्बोधन कहते हैं। जैसे— हे बालक! कोलाहलं मा कुरु। इस वाक्य में ‘बालक’ को सम्बोधित किया गया है, अतः सम्बोधन है। क्रिया से सीधा सम्बन्ध न रखने के कारण सम्बन्ध तथा सम्बोधन को संस्कृत में कारक नहीं माना जाता है।

विभक्ति

शब्दों में लगने वाली विभक्तियाँ सात हैं। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी तथा सप्तमी। इनके तीनों वचनों में अलग-अलग प्रत्यय लगते हैं। ये प्रत्यय 21 हैं, जिन्हें सुप् नाम से जाना जाता है। सुप् प्रत्ययों के लग जाने पर ही शब्द पद बनकर प्रयोग योग्य होते हैं तथा सुबन्त कहलाते हैं।

ये विभक्तियाँ दो तरह से प्रयोग की जाती हैं। कारक विभक्ति के रूप में तथा उपपद विभक्ति के रूप में।

- क्रिया के आधार पर (संज्ञादि शब्दों में) लगने वाली विभक्ति को कारक विभक्ति कहते हैं।
- अन्य पदों के आधार पर लगने वाली विभक्ति को उपपद विभक्ति कहते हैं।

प्रथमा विभक्ति (कर्ता)

- कर्तृवाच्य के कर्ता में और कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति लगती है।

यथा— मोहनः दुधं पिबति। यहाँ दूध पीने की क्रिया को करने वाला ‘मोहन’ है। अतः ‘मोहनः’ में प्रथमा विभक्ति है।

रामः पुस्तकं पठति। इस वाक्य में पुस्तक पठन की क्रिया को करने वाला ‘राम’ है, जो प्रधान होने के कारण कर्ता है।

सोहनेन ग्रन्थः पढ़यतो। यह वाक्य कर्मवाच्य है, जिसमें कर्म (ग्रन्थ का पढ़ना) प्रधान है, अतः ‘ग्रन्थः’ में प्रथमा विभक्ति हुई।

- किसी शब्द के अर्थ, लिङ्ग एवं परिमाण को प्रकट करने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा— मोहनः, पुरुषः, लघुः, लता

- इति के योग में प्रथमा विभक्ति होती है।

यथा— वयम् इमं कालिदास इति नाम्ना जानीमः।

द्वितीया विभक्ति

- वाक्य में कर्ता के सर्वाधिक अभीष्ट अर्थात् कर्म में द्वितीया विभक्ति लगती है।

वैष्णवी चित्रं पश्यति, इस वाक्य में वैष्णवी को चित्र देखना सर्वाधिक अभीष्ट है, अतः चित्र 'कर्म' संज्ञा है और उस में द्वितीया विभक्ति है। इसी प्रकार बालः मोदकं वाञ्छति। यहाँ पर बालक को मोदक अभीष्ट है, अतः वह कर्मसंज्ञक है।

- कर्तृवाच्य के वाक्यों के कर्म में द्वितीया विभक्ति लगती है।

यथा— वैष्णवी चित्रं रचयति, यहाँ 'चित्र' की रचना करना ही कर्ता का कर्म है, अतः चित्र में द्वितीया विभक्ति है।

अभितः (सामने), परितः (चारों तरफ), समया (पास), निकषा (पास), हा (खेद), प्रति (के ओर), उभयतः (दोनों तरफ), सर्वतः (सर्वत्र), धिक् (धिक्), उपरि (ऊपर), अधः (नीचे), विना (बिना), अन्तरा (बिना), अन्तरेण (बिना) के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

- ग्रामम् अभितः वृक्षाः सन्ति।
- नगरं परितः मार्गाः सन्ति।
- विद्यालयं समया उद्यानम् अस्ति।
- नदीं निकषा शीतलः समीरः वहति।
- हा! बालघातिनम्।
- अहं मित्रं प्रति किमपि न कथयिष्यामि।
- मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
- आश्रमं सर्वतः वनानि सन्ति।
- धिङ् मूर्खम्।

- x) मम गृहम् उपरि वायुयानं गच्छति।
 xi) भूमिम् अधः जन्तवः सन्ति।
 xii) पुत्रं विना माता दुःखिता अभवत्।
 xiii) परिश्रमम् अन्तरा सुखं नास्ति।
 xiv) हास्यम् अन्तरेण जीवनं निरर्थकम्।

अधि उपसर्ग पूर्वक शीड् स्था, आस्, वस् धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है—

- i) राजकुमारः पर्यद्कम् अधिशेतो।
 ii) विष्णुः वैकुण्ठम् अधितिष्ठति।
 iii) प्राचार्यः उच्चासनम् अध्यास्तो।
 iv) मुनिः वनम् अधिवसति।

व्यवधान रहित कालवाची एवं मार्गवाची शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है—

- i) छात्रः द्वादशवर्षाणि अपठत्।
 ii) छात्रः मासं पुस्तकम् अपठत्।
 iii) मथुरानगरम् इतः क्रोशं वर्तते।
 iv) विद्यालयात् क्रोशद्वयं पर्वतः वर्तते।

निम्नलिखित के योग में द्वितीया विभक्ति होती है—

सेव् (सेवा करना)	—	पुत्रः पितरं सेवते।
आ + रुह् (चढ़ना)	—	बालकः वृक्षम् आरोहति।
(अनु) (पीछे)	—	पुत्रः पितरम् अनुगच्छति।
निन्द् (निन्दा करना)	—	दुष्टः सज्जनं निन्दति।
रक्ष् (रक्षा करना)	—	रक्षकाः ग्रामं रक्षन्ति।
गम् (जाना)	—	बालिकाः नगरं गच्छन्ति।
दुह् (दुहना)	—	राधा गां पयः दोग्धि।
याच् (मार्गना)	—	पुत्री मातरं धनं याचते।
पच् (पकाना)	—	सः तण्डुलान् ओदनं पचति।

दण्ड् (दण्ड देना)	—	राजा चौरं शतं दण्डयति।
प्रच्छ् (पूछना)	—	शिष्यः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।
नी (ले जाना)	—	कृषकः अजां ग्रामं नयति।
चि (चुनना)	—	मालाकारः पादपं पुष्पाणि चिनोति।
ब्रू (बोलना)	—	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते (वदति)।
शास् (शिक्षा देना)	—	गुरुः शिष्यं शास्ति।
जि (जीतना)	—	पाण्डवाः कौरवान् अजयन्।
मथ् (मथना)	—	गोपी दधि नवनीतं मथ्नाति।
मुष् (चुराना)	—	चौरः धनं मुष्णाति।

दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, ह, कृष्, वह् ये धातुएँ द्विकर्मक होती हैं। इनके दोनों ही कर्मों में द्वितीया विभक्ति होती है। उपर्युक्त उदाहरणों में अधिकांश में दो कर्मों का प्रयोग किया गया है। कुछ में (जि, शास्, मुष्) एक ही कर्म का प्रयोग किया गया है। पर यदि वहाँ दूसरे कर्म का प्रयोग होगा तो भी दोनों में द्वितीया विभक्ति ही लगेगी।

तृतीया विभक्ति

- जिसकी सहायता से कार्य किया जाता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है। रचना कलमेन पत्रं लिखति। वाक्य में पत्र का लेखन कलम की सहायता से किया जा रहा है, अतः पत्र लेखन में सहायक होने के कारण 'कलम' में तृतीया विभक्ति है। रामः रावणं 'बाणेन' हतवान्। इस वाक्य में रावण को मारने में 'बाण' प्रमुख साधन है। अतः 'बाणेन' में तृतीया विभक्ति है।
- अधोलिखित शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है—

सह (साथ)	—	सोहनः रामेण सह गच्छति।
सार्धम् (साथ)	—	गोपालः रामपालेन सार्धम् क्रीडति।
सदृशम् (समान)	—	सीतायाः मुखं चन्द्रेण सदृशम् अस्ति।
समम् (साथ)	—	भोजनेन समं जलं पिब।

समः (समान) — भोजः पराक्रमे विक्रमेण समः आसीत्।

अलम् (बस) — अलं विवादेन।

विना (बिना) — रामेण विना सीता दुःखिता अभवत्।

- जिस अड्ग में कोई विकार प्रदर्शित करना हो, उस अड्गवाची शब्द में तृतीया विभक्ति होती है—

i) देवदत्तः नेत्रेण काणः अस्ति।

ii) अश्वः पादेन खञ्जः अस्ति।

- फल प्राप्ति या कार्य की पूर्णता के अर्थ में समय की निरन्तरता का बोध कराने वाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है—

i) रामः सप्ताहेन पुस्तकं समाप्तवान्।

ii) बालः सप्तभिः दिवसैः नीरोगः जातः।

- पृथक्, विना तथा नाना के योग में द्वितीया, तृतीया या पञ्चमी विभक्तियों में से कोई भी एक लगती है—

i) जलं जलेन जलात् वा विना न कोऽपि जीवितुं शक्नोति।

ii) ईश्वरम् ईश्वरेण ईश्वरात् वा पृथक् न कोऽपि अस्मान् रक्षितुं समर्थः।

iii) विद्यां विद्यया विद्यायाः वा नाना न सुखम्।

चतुर्थी विभक्ति

- सम्प्रदान कारक के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
- 'दा' धातु के योग में जिसे दिया जा रहा है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

यथा— पिता पुत्राय पुस्तकं यच्छति।

राजा भिक्षुकाय वस्त्रं ददाति।

अधोलिखित शब्दों या धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है—

रुच् (अच्छा लगना) — बालकाय मोदकं रोचते।

क्रुध् (क्रोध करना) — स्वामी सेवकाय क्रुध्यति।

कुप् (क्रोध करना)	— माता पुत्राय कुप्यति।
द्रुह् (द्रोह करना)	— मन्दमतिः छात्रः योग्याय छात्राय द्रुह्यति।
स्पृह् (चाहना)	— आभूषणेभ्यः स्पृहयति नारी।
ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना)	— दुर्योधनः अर्जुनाय ईर्ष्यति।
असूय् (निन्दा करना)	— धनहीनः धनिकाय असूयति।
नमः (नमस्कार)	— गुरवे नमः।
स्वस्ति (कल्याण हो)	— स्वस्ति प्राणिभ्यः।
स्वधा (पितरों को जल देना)	— पितृभ्यः स्वधा।
स्वाहा (समर्पित)	— अग्नये स्वाहा।
नि + विद् (निवेदन करना)	— सः गुरवे निवेदयति।

पञ्चमी विभक्ति

- अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
- जिसे नियम पूर्वक पढ़ा जाए उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।
यथा— अहं गुरोः संस्कृतं पठामि।
- जहाँ से कोई वस्तु उत्पन्न होती है उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।
 - i) गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।
 - ii) बीजात् जायते वृक्षः।
- जहाँ से कोई व्यक्ति या वस्तु अलग होती है वहाँ पञ्चमी विभक्ति होती है—
 - i) मोहनः विद्यालयात् आगच्छति।
 - ii) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
- भी, त्रा तथा त्रस् धातुओं के योग में (भय हेतु में) पञ्चमी विभक्ति होती है—
 - i) रामः पापात् विभेति।

ii) रक्षकः चौरात् त्रायते।

iii) गोकुलः दुर्जनात् त्रस्तः।

निम्न अव्ययों के योग से पञ्चमी विभक्ति होती है—

ऋते (विना)	— ईश्वरात् ऋते न कोऽपि मम रक्षकः।
प्रभृति (से लेकर, शुरू करके)	— ततः प्रभृति सः नित्यं विद्यालयं गच्छति।
पृथक् (अलग)	— ईश्वरात् पृथक् नास्ति कोऽपि रक्षकः।
दूरम् (दूर)	— प्राथमिकविद्यालयः ग्रामात् दूरम् अस्ति।
बहिः (बाहर)	— मूषकः बिलात् बहिः आगच्छत्।
आरभ्य (आरम्भ करके)	— सोमवासरात् आरभ्य वृष्टिः जायते।
आरात् (निकट)	— ग्रामात् आरात् नदी अस्ति।
अनन्तरम् (बाद)	— त्वम् पठनात् अनन्तरं क्रीडाक्षेत्रं गच्छ।
प्रमाद (उपेक्षा, आलस्य)	— पठनात् मा प्रमादः।
अन्य (दूसरा)	— ईश्वरात् अन्यः कोऽपि पालकः नास्ति ?
पूर्व (पहले)	— विद्यालयगमनात् पूर्वं गृहकार्यं कुरु।
बहिः (बाहर)	— मूषकः बिलात् बहिः आगच्छत्।
प्राक्	— सोमवासरात् प्राक् रविवासरः भवति।

षष्ठी विभक्ति

- सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है

i) रामस्य पुस्तकम्

ii) कृष्णस्य ग्रामः

iii) मृत्तिकायाः घटः

निम्नलिखित शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है—

कृते (लिए)	— बालकस्य कृते जलम् आनय।
हेतुः (कारण)	— कस्य हेतोः अयम् उत्सवः ?
समक्षम् (सामने)	— गुरोः समक्षम् असत्यं मा वद।
मध्ये (बीच में)	— हंसानां मध्ये बकः न शोभते।

- अन्तः (अन्दर) — अतिथिः गृहस्य अन्तः प्राविशत्।
 दूरम् (दूर) — किं दूरं व्यवसायिनाम्।
 अनादरम् (अनादर) — कस्यापि अनादरम् मा कुरु।
- कतिपय (तसिल) तस् प्रत्ययान्त पदों के साथ षष्ठी होती है।
 यथा— ग्रामस्य पूर्वतः नदी वहति।
 - अनेक में एक का निश्चय करने में षष्ठी एवं सप्तमी दोनों विभक्तियाँ होती हैं—
 - i) सोहनः वीराणां/वीरेषु वा महावीरः अस्ति।
 - ii) कवीनां / कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः।

अधः (नीचे) — वृक्षस्य अधः श्रमिकः शेते।
 उपरि (ऊपर) — भवनस्य उपरि पक्षिणः सन्ति।
 पुरः / पुरस्तात् (सामने) — गृहस्य पुरः/ पुरस्तात् निम्बवृक्षः अस्ति।

सप्तमी विभक्ति

अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है—

- i) वृक्षे फलानि सन्ति।
 ii) सिंहः वने वसति।
- जिसके समस्त अवयवों में कोई वस्तु व्याप्त हो वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है—
 तिलेषु तैलं विद्यते।
 - जो कर्ता की इच्छा में विद्यमान हो, वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है—
 रामस्य पठने अनुरागः अस्ति।
 - जहाँ एक क्रिया के अनन्तर दूसरी क्रिया का होना पाया जाए वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है—
 - i) सूर्ये अस्तं गते पक्षिणः नीडं गताः।
 - ii) रामे वनं गते दशरथः प्राणान् अत्यजत्।
 - iii) रुदति बालके पिता कार्यालयं गतः।

- समूह में किसी एक की श्रेष्ठता के निर्धारण में सप्तमी / षष्ठी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है—
 - i) बालकेषु बालकानां वा रमेशः श्रेष्ठः।
 - ii) पक्षिषु पक्षिणां वा काकः चतुरः।
 - iii) वीरेषु वीराणां वा राणाप्रतापः श्रेष्ठः।
 - iv) पशुषु पशूनां वा सिंहो राजा भवति।
 - v) धावत्सु धावतां वा कपिलः श्रेष्ठः।
- निमित्त (कारण) अर्थ में सप्तमी विभक्ति होती है—
चर्मणि मृगं हन्ति—
- प्रवीणः (कुशल), चतुर शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभिक्त होती है—
प्रवीणः (कुशल) — वीणायां प्रवीणः।
चतुरः (चतुर) — रमा वार्तालापे चतुरा।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. कोष्ठकेषु मूलशब्दाः प्रदत्ताः। तेषु उचितविभक्तीः योजयित्वा रिक्तस्थानानानि पूरयत—

- i) बालकाः पृच्छन्ति। (अम्बा)
- ii) नस्ति समः शत्रुः। (क्रोध)
- iii) भीतः बालकः क्रन्दति। (चौर)
- iv) शिष्याः विद्यां गृह्णन्ति। (गुरु)
- v) अहं प्राक् आगमिष्यामि। (अध्यापक)
- vi) अस्माकम् बालिकाः कुशलाः सन्ति। (गायन)
- vii) माता स्निह्यति। (शिशु)
- viii) क्रोधः जायते। (काम)
- ix) नमः। (सरस्वती)
- x) अलम् । (विवाद)
- xi) भिक्षुकः याचते। (भिक्षा)
- xii) धिक् देशस्य । (शत्रु)
- xiii) वीरः न विरमति। (धर्मयुद्ध)
- xiv) दुर्योधनः जुगुप्सति स्मा। (पाण्डव)
- xv) अर्जुनः श्रेष्ठः धनुर्धरः। (भ्रातृ)
- xvi) पितरौ सर्वस्वं यच्छतः। (अस्मद्)
- xvii) किम् एतत् गीतं रोचते ? (युष्मद्)
- xviii) परितः वायुमण्डलम् अस्ति। (पृथ्वी)
- xix) बहिः छात्राः कोलाहलं कुर्वन्ति? (कक्षा)
- xx) अहम् पूर्व वन्दे। (शयन, ईश्वर)
- xxi) परिश्रमिणः स्पृहयन्ति। (सफलता)
- xxii) वाल्मीकिः रचयिता ? (रामायणम्)
- xxiii) विभाति सरः। (पंकज)

प्र. 2. कोष्ठकेभ्यः शुद्धम् उत्तरं चित्वा रिक्तस्थानपूर्ति कुरुत—

- i) सह सीता वनम् अगच्छत्। (रामस्य/रामेण)

- ii) माता स्निह्यति। (माम्/मयि)
- iii) मोदकं रोचते। (मोहनम्/मोहनाय)
- iv) सः धनं ददाति। (रमेशम्/रमेशाय)
- v) पत्राणि पतन्ति। (वृक्षेण/वृक्षात्)
- vi) अध्यापिका पुस्तकं यच्छति। (सुलेखाम्/सुलेखायै)
- vii) परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालयम्/विद्यालयस्य)
- viii) नमः। (गुरुवे/गुरुम्)

प्र. 3. उचितविभक्तिप्रयोगां कृत्वा अधोलिखितपदानां सहायतया वाक्यरचनां कुरुत—

- | | |
|--------------|-------------|
| i) समम् | ii) धिक् |
| iii) उभयतः | iv) विना |
| v) अन्धः | vi) बहिः |
| vii) प्रवीणः | viii) अलम् |
| ix) विभेति | x) श्रेष्ठः |

प्र. 4. 'क' स्तम्भे शब्दाः दत्ताः सन्ति, 'ख' स्तम्भे च विभक्तयः। कस्य योगे का विभक्तिः प्रयुज्यते इति योजयित्वा लिखत—

'क'	'ख'
i) 'रुच्' धातु योगे	(क) तृतीया
ii) 'सह' शब्द योगे	(ख) चतुर्थी
iii) 'नमः' शब्द योगे	(ग) पञ्चमी
iv) 'भी' 'त्रा' धातु योगे	(घ) चतुर्थी
v) 'दा' धातु योगे	(ङ) प्रथमा
vi) कर्तृवाच्यस्य कर्तीरि	(च) तृतीया
vii) कर्मवाच्यस्य कर्तीरि	(छ) चतुर्थी
viii) 'विना' योगे	(ज) तृतीया
ix) यस्मिन् अङ्गे विकारः भवति तस्मिन्	(झ) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
x) कर्मवाच्यस्य कर्मणि	(ज) प्रथमा

प्र. 5. 'स्थूलपदानां' स्थाने शुद्धपदं लिखत—

- i) अध्यापिकाया: परितः छात्राः सन्ति।
- ii) छात्रः आचार्याय प्रश्नम् पृच्छति।
- iii) सीता लेखन्याः लेखं लिखति।
- iv) गोपालः शिवस्य सह वार्ता करोति।
- v) चौरा: आरक्षिणा विभ्यति।
- vi) महापुरुषम् नमः।
- vii) त्वाम् किम् रोचते?
- viii) कवये कालिदासः श्रेष्ठः।
- ix) सा गृहकर्मणः निपुणः।
- x) अहम् रेलयानात् कालिकातां गमिष्यामि।



0974CH11

एकादश अध्याय

वाच्य परिवर्तन

अभिव्यक्ति या कथन के प्रकटीकरण की विधा को वाच्य कहते हैं। संस्कृत में वाच्य तीन तरह के होते हैं —

1. कर्तृवाच्य

इस वाच्य में कर्ता प्रधान होता है तथा क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त होती है। इसके कर्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा— रामः गृहं गच्छति।

इस वाक्य में 'राम' कर्ता और 'गृहम्' कर्म है। इसकी क्रिया 'गच्छति' कर्ता 'राम' के अनुसार एकवचन की है।

बालिका पाठम् पठितवती।

इस वाक्य में 'बालिका' कर्ता तथा 'पाठम्' कर्म तथा 'पठितवती' क्रिया है।

सैनिकः देशं रक्षति।

इस वाक्य में 'सैनिकः' कर्ता, 'देशम्' कर्म तथा 'रक्षति' क्रिया है।

2. कर्मवाच्य

कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है, अतः कर्म में प्रथमा तथा कर्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यहाँ क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार होता है। जिस लिङ्ग, पुरुष तथा वचन में कर्म होता है, उसी लिङ्ग, पुरुष तथा वचन में क्रिया का प्रयोग होता है।

यथा— रामेण गृहं गम्यते।

विद्यार्थिना पाठः पठ्यते।

मया चित्रे दृश्येते।

इन वाक्यों में क्रमशः गृहम्, पाठः तथा चित्रे कर्म हैं। अतः प्रथम दो वाक्यों में कर्म के एकवचन के अनुसार क्रिया भी एकवचन में तथा तीसरे में चित्रे में द्विवचन के कारण क्रिया भी द्विवचन में प्रयुक्त है।

3. भाववाच्य

भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। भाववाच्य में क्रिया का अर्थ या भाव ही प्रधान होता है, क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। भले ही कर्ता एकवचन में हो या बहुवचन में।

यथा— (मया / त्वया / युवाभ्याम् / आवाभ्यां / अस्माभिः / तैः) सुन्धते / आस्यते

वाच्य परिवर्तन के नियम— कर्तृवाच्य में वर्तमानकाल की क्रियाओं को यदि कर्मवाच्य में परिवर्तित किया जाता है तो क्रियाओं में इस प्रकार परिवर्तन होता है।

उदाहरण—

कर्तृवाच्य की क्रिया	—	कर्मवाच्य / भाववाच्य की क्रिया
पठति	—	पठ्यते
लिखति	—	लिख्यते
खादति	—	खाद्यते
भवति	—	भूयते
धावति	—	धाव्यते
हसति	—	हस्यते
करोति	—	क्रियते
क्रीणाति	—	क्रीयते
नयति	—	नीयते
गच्छति	—	गम्यते
उत्पत्तति	—	उत्पत्यते
रोदिति	—	रुद्यते

भूतकाल की क्रियाओं में कर्तृवाच्य में जहाँ 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग होता है, वहाँ कर्मवाच्य में 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग होता है— साथ ही साथ कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

यथा— सः फलानि खादितवान्। (कर्तृवाच्य)
 तेन फलानि खादितानि। (कर्मवाच्य)
 अहम् ग्रन्थान् पठितवान्। (कर्तृवाच्य)
 मया ग्रन्थाः पठिताः। (कर्मवाच्य)
 वयम् गुरुम् पूजितवन्तः। (कर्तृवाच्य)
 अस्माभिः गुरुः पूजितः। (कर्मवाच्य)

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. उदाहरणमनुसृत्य यथानिर्दिष्टं वाच्यपरिवर्तनं कुरुत—

- यथा— रामः गृहं गच्छति। (कर्तृवाच्य)
 रामेण गृहं गम्यते।
 कमलया पायसम् पक्वम्। (कर्मवाच्य)
 कमला पायसम् पक्ववती।
 छात्राः हसन्ति। (भाववाच्य)
 छात्रैः हस्यते।
 i) अहं कार्यं कृतवान्। (कर्मवाच्य)
 ii) त्वम् पुस्तकम् पठितवान्। (कर्मवाच्य)
 iii) सः गायति। (भाववाच्य)
 iv) युवाभ्यां सुलेखः लिखितः। (कर्तृवाच्य)
 v) ता: रुदन्ति। (भाववाच्य)
 vi) मोहनः कन्दुकम् क्रीडति। (कर्तृवाच्य)
 vii) छात्रैः दुग्धं पीतम्। (कर्तृवाच्य)
 viii) छात्रः हसति। (भाववाच्य)
 ix) मम भ्राता उद्याने भ्रमति। (भाववाच्य)
 x) सैनिकः युद्धक्षेत्रं गच्छति। (कर्मवाच्य)

प्र. 2. अधोलिखितवाक्येषु कर्तृपदे वाच्यानुसारं स्थितस्थानानि पूरयत—

यथा— राजेन्द्रः पाटलिपुत्रं गच्छति।

राजेन्द्रेण पाटलिपुत्रं गम्यते।

	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
i)	रोटिकां खादति।	तेन रोटिका खाद्यते।
ii)	छात्रः ग्रन्थं पठति।	ग्रन्थः पठ्यते।
iii)	राजभवनं गच्छति।	शकुन्तलया राजभवनं गम्यते।
iv)	दुष्यन्तः आखेटं करोति।	आखेटः क्रियते।
v)	गीतं गायति।	गायकेन गीतं गीयते।

प्र. 3. अधोलिखितवाक्यानां कर्मपदे परिवर्तनं कुरुत—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
i) अहं	पूजयामि मया देवः पूजयते।
ii) बालकः फलं खादितवान्।	बालकेन, खादितम्।
iii) त्वं गृहं गच्छसि।	त्वया गम्यते।
iv) सः, कथितवान्।	तेन साधुः कथितः।
v) यूयं कथां श्रुतवन्तः।	युष्माभिः श्रुता।

प्र. 4. अधोलिखितवाक्यानां क्रियापदे परिवर्तनं कुरुत—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
i) सः जलम् पिबति।	तेन जलम्,।
ii) कपोतः आकाशे,।	कपोतेन आकाशे उत्पत्यते।
iii) सुनीता आभूषणं धारयति।	सुनीतया आभूषणं,।
iv) नेता भाषणं करोति।	नेत्रा भाषणं,।
v) सः कथां,।	तेन कथा श्रुता।
vi) श्रमिकः कार्यं कृतवान्।	श्रमिकेण कार्यं,।
vii) पुत्रः मातरं,।	पुत्रेण माता पूजिता
viii) त्वम् आचार्यम् आदृतवान्।	त्वया आचार्यः,।

प्र. 5. अधोलिखितानां कथनानाम् उत्तरे त्रयः विकल्पाः दत्ताः। शुद्धविकल्पस्य समक्षे (✓) इति कुरुत—

- (क) कर्तृवाच्यस्य कर्तरि विभक्तिः भवति—
 i) प्रथमा () (ii) द्वितीया () (iii) तृतीया ()
- (ख) कर्तृवाच्यस्य कर्मणि विभक्तिः भवति—
 i) प्रथमा () (ii) द्वितीया () (iii) तृतीया ()
- (ग) कर्मवाच्यस्य कर्तरि विभक्तिः भवति—
 i) प्रथमा () (ii) द्वितीया () (iii) तृतीया ()
- (घ) कर्मवाच्यस्य कर्मणि विभक्तिः भवति—
 i) प्रथमा () (ii) द्वितीया () (iii) तृतीया ()
- (ड) भाववाच्यस्य कर्तरि विभक्तिः भवति—
 i) प्रथमा () (ii) द्वितीया () (iii) तृतीया ()



0974CH12

द्वादश अध्याय

रचना प्रयोग

1. पत्रम्

i) रुणताया: कारणात् अवकाशप्राप्तये प्रधानाचार्यं प्रति पत्रम्—
सेवायाम्

प्रधानाचार्य-महोदया:

केन्द्रीय-विद्यालयः

आर. के. पुरम्, सैक्टरः-द्वितीयः

नवदेहली - 110022

विषयः— अवकाशप्राप्तये निवेदनम्

मान्यवराः / महोदयाः,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् अहं शिरोवेदनया पीडितः अस्मि एतस्मात्कारणात्
अद्य विद्यालयम् आगन्तुमसमर्थः अस्मि। अतः प्रार्थये यत् दिनद्वयस्य अवकाशं
प्रदाय अनुग्रहं कुर्वन्तु भवन्तः।

धन्यवादाः

भवतां विनीतः शिष्यः

नरेन्द्रः

कक्षा 10

वर्गः 'ब'

दिनांकः :

ii) शुल्कक्षमापनार्थं प्रधानाचार्यं प्रति पत्रम्—

सेवायाम्

प्रधानाचार्य-महोदयाः

केन्द्रीय-विद्यालयः

आर. के. पुरम्, सैक्टर: चतुर्थः

नवदेहली - 110022

विषयः— शुल्कक्षमापनार्थं निवेदनम्

मान्यवराः / महोदयाः,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् अहं भवतः विद्यालये दशमकक्षायाः 'स' वर्गस्य छात्रः अस्मि। मम पिता एकस्मिन् विद्यालये द्वारपालः अस्ति। तस्य मासिकवेतनम् द्विसहस्ररूप्यकमात्रम् अस्ति। अस्माकं कुटुम्बे पञ्च सदस्याः सन्ति। अनेन वेतनेन कुटुम्बस्य निर्वाहः काठिन्येन भवति। अतः शुल्कक्षमापनार्थं प्रार्थये।

आशासे यत् मदीयाम् इमां प्रार्थनां स्वीकृत्य शुल्कक्षमापनद्वारा माम् उपकरिष्यन्ति श्रीमन्तः।

धन्यवादाः।

भवतां विनीतः शिष्यः

सुरेन्द्रः

कक्षा 10

वर्गः 'ब'

दिनाङ्कः

iii) पुस्तकानि प्रेषयितुं प्रकाशकं प्रति पत्रम्—

सेवायाम्

व्यवस्थापक-महोदयाः

आर्य बुक डिपो

करोलबाग

नवदेहली

महोदयः / महोदयाः,

सेवायाम् निवेदनमस्ति यत् अहम् अधोलिखितानि पुस्तकानि क्रेतुम्
इच्छामि। अतः यत् समुचितमुन्मोक्षं (कमीशनं) निष्कास्य एतानि पुस्तकानि
वी.पी. माध्यमेन प्रेषयन्तु भवन्तः। शीघ्रता प्रशंसनीया स्यात्।

पुस्तकानां नामानि

लेखकानां नामानि

प्रति

1. सरल संस्कृत व्याकरणम्
2. निबन्धसौरभम्
3. कथासागरः

डॉ. परमानंदगुप्तः

डॉ. अरुणेशकुमारः

डॉ. वागीशः

1

1

1

धन्यवादः

भावत्कः

अशोकः

61/जवाहरनगरम्

मण्डी

हिमाचल प्रदेश

दिनाङ्कः

iv) स्वभगिन्या: विवाहे आमन्त्रयितुं स्वमित्रं प्रति पत्रम्—

आर 688

न्यू राजेन्द्र नगरम्
दिल्लीतः

20.11.2012

प्रिय मित्र,
नमस्ते।

इदं ज्ञात्वा प्रसन्नो भविष्यसि यत् भगवत्कृपया मम भगिन्या: लतायाः
विवाहसंस्कारः अधोलिखितकार्यक्रमानुसारं सम्पत्स्यते। एतदर्थं सानुरोधं
निमन्त्रयामि। आशासे यत् यथासमयं आगत्य अस्मान् प्रीणयिष्यसि।

कार्यक्रमः

मंगलवासरे	26.11.2012	प्रातः सप्तवादने यज्ञः सायम् अष्टवादने वरयात्रीणां स्वागतम् प्रीतिभोजनम् च।
-----------	------------	---

बुधवासरे	27.11.2012	प्रातः पञ्चवादने लतायाः पतिगृहगमनम्।
----------	------------	---

स्वगृहे सर्वेभ्यः मम वन्दनं निवेदया।

दर्शनाभिलाषी
देवेन्द्रः

दिनाङ्कः

v) पितरौ प्रति परीक्षायाः परिणामसूचकं पत्रम्—

छात्रावासः

केन्द्रीय-विद्यालयः

देहलीछावनीतः

नवदेहली

वन्दनीयाः पितृचरणाः

सादरं प्रणम्यते यदहम् अत्र सम्यक् निवसामि। मम परीक्षाफलम् अधुना प्रकाशितम् नवमकक्षायाम् अहम् प्रथमश्रेण्याम् उत्तीर्णः। सर्वेषु छात्रेषु मम प्रथमं स्थानमस्ति। अधुना कानिचित् पुस्तकानि क्रेतव्यानि सन्ति। विद्यालयस्य शुल्कमपि देयमस्ति। अतः पञ्चसहस्रं रूप्यकाणि शीघ्रतया प्रेषयन्तु भवन्तः। अहं प्रत्यहं मातुः स्मरणं करोमि। अनुजः रमेशः कथम् अस्ति। भगिनी श्वेता प्रत्यहं पठनाय विद्यालयं गच्छति न वा। अहम् अवकाशे गृहम् आगमिष्यामि।

भवदाशीर्वचसां प्रतीक्षायाम् भवत्पुत्रः

भवभूतिः

कक्षा 10

वर्गः 'ब'

केन्द्रीय-विद्यालयः, दिल्ली

दिनाङ्कः

2. दूरभाषवार्ता

(दूरभाषयन्ते ध्वनिः भवति)

पिता — (यन्त्रमुत्थाप्य) कः वदति ?

रमेशः — पितः! अहम् रमेशः! प्रणमामि।

पिता — चिरञ्जीव वत्स! अपि कुशली ?

रमेशः — आम् पितः! भवताम् आशीर्वचोभिः सर्वं कुशलम्

अस्ति। एकः आवश्यकः प्रसङ्गः समुपस्थितः।

तदर्थम् अहम् भवन्तम् आकारितवान्।

पिता	—	वत्स! कथय कीदृशं ते प्रयोजनम्?
रमेशः	—	मम विद्यालयेन छात्राणाम् आगरानगरस्य दर्शनाय एका आमोदयात्रा आयोजयते। इयं यात्रा दिनद्वयाय भविष्यति। एतदर्थं कक्षायाः गुरुभ्यः एकसहस्ररूप्यकाणि देयानि सन्ति। कृपया एकसहस्ररूप्यकाणि शीघ्रं प्रेषयन्तु।
पिता	—	पुत्र! अहमद्यैव वित्तकोषं गत्वा एन.ई.एफ.टी द्वारा रूप्यकाणि प्रेषयिष्यामि। त्वया आमोदयात्रातः प्रत्यागत्य सूचना प्रेष्या।
रमेशः	—	अहम् आगरातः प्रत्यागत्य अवश्यमेवं सूचयिष्यामि। अधुना ध्वनियन्त्रं निदधानि।
पिता	—	आम् निधेहि ध्वनियन्त्रम्।
रमेशः	—	(पितरं प्रणम्य ध्वनियन्त्रम् आधारयन्त्रे निदधाति)

3. अपठित गद्यांश

- उत्साहः उदासीनता, निराशा चेति तिसः; मनसः अवस्थाः। शिशवः सदा उत्साहशीलाः इति विदितमेवा युवानः अपि प्रायेण उत्साहशीलाः। अनेके वृद्धाः अपि तथैवा वयसः उत्साहस्य च नास्ति सम्बन्धः। उत्साहः मानवस्य सहजः स्वभावः। सः मनसः शरीरस्य च विकासाय भवति। शिशुः उत्साहेन सर्वं ग्रहीतुं, सर्वैः सह खादितुं सर्वैः सह खेलितुं च प्रवतते। प्रतिबन्धे कृते रोदिति। उपहासे कृते क्रोधं प्रकटयति किन्तु निराशो न भवति।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

- | | |
|---------------------------------|---|
| i) शिशुः उपहासे कृते किं करोति? | 1 |
| ii) मनसः कति अवस्थाः सन्ति? | 1 |

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- | | |
|------------------------------|---|
| i) के के उत्साहशीलाः भवन्ति? | 2 |
|------------------------------|---|

III. यथानिर्देशम् उत्तरत— $\frac{1}{2} \times 2 = 1$

- i) 'अनेके वृद्धाः' अत्र विशेषणपदम् किम्?
- ii) 'ज्ञातमेव' इति अर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?
2. कस्मिंश्चित् प्रदेशे काचित् नदी प्रवहति स्मा। नदीतीरे कश्चन संन्यासी स्वशिष्यैः सह आश्रमं निर्माय वसति स्मा। एकदा संन्यासी शिष्यैः सह नद्याः अपरं तीरं गन्तुम् एकां नौकाम् आरूढवान्। वेगेन प्रवहन्त्यां नद्याम् अकस्मात् एका अपरा नौका शिलायाः घट्टनेन निमग्ना अभवत्। तेन तस्यां नौकायां स्थिताः सर्वे जनाः मरणं प्राप्तवन्तः। संन्यासी अकथयत्- तस्यां नौकायां स्थितेषु कश्चित् दुष्टः आसीत् इति मन्यो। अतः ते सर्वे मरणं प्राप्तवन्तः।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

- i) संन्यासी कुत्र वसति स्म?
- ii) अपरा नौका कस्याः घट्टनेन नद्यां निमग्ना अभवत्?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- i) संन्यासी नौकादुर्घटनायाः किं कारणं कथितवान्?

III. यथानिर्देशम् उत्तरत— $\frac{1}{2} \times 2 = 1$

- i) 'सज्जनः' इति पदस्य विपरीतार्थकपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।
- ii) 'आरूढवान्' इति क्रियायाः कर्तृपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।
3. प्रातः कालादारभ्य सायं पर्यन्तं मानवः अनेकानि कार्याणि करोति। एतेषु कार्येषु किं समीचीनं किं वा असमीचीनम् इति विषये शयनकाले अवश्यं चिन्तनीयम्। एतादृशेन आत्मावलोकनेन स्वकीये आचरणे अज्ञानेन अनवधानेन रागद्वेषाभ्यां वा यदि कश्चन प्रमादः सञ्जातः, अपचारः द्रोहो वा निष्पन्नः तर्हि तेषां परिमार्जनोपायः अवश्यम् आलोचनीयः। पश्चात्तापः अनुभवितव्यः। श्वः प्रभृतिः एतादृशं प्रमादं न करिष्यामि इति दृढसङ्कल्पः करणीयः।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

- I. एकपदेन उत्तरत—** 2
- किं समीचीनम् किं वा असमीचीनम् इति विषये कदा आलोचनीयम्?
 - यदि अपचारः द्रोहः वा निष्पन्नः तदा कः अवश्यम् आलोचनीयः?
- II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—**
- कः दृढसङ्कल्पः करणीयः? 2
- III. यथानिर्देशम् उत्तरत—**
- अनुच्छेदे के पदे परस्परं विपरीतार्थं प्रयुक्ते? 1
4. यः स्वदोषाणां कृते अनुतपति तस्य सत्पथगमनस्य द्वारम् उद्धाटितं भवति। अनुतापानलेन पापानि भस्मीभवन्ति, ग्लानिः नश्यति, चित्तं निर्मलं प्रसन्नं च भवति, सद्विचारः समुदेति। इत्थम् आत्मानुशीलनस्य महत्त्वं जीवने अनुभूयते। तेन कृतेषु कार्येषु त्रुट्यः न भवन्ति। अतः कृतदोषोऽपि जनः अनुतप्य सत्कर्मसम्पादनेन जीवने महान् भवितुम् अर्हति।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

- I. एकपदेन उत्तरत—**
- जीवने कस्य महत्त्वम् अनुभूयते? 1
 - कृतदोषः जनः केन महान् भवितुं शक्नोति? 1
- II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—**
- अनुतापानलेन किं किं भवति? 2
- III. यथानिर्देशम् उत्तरत—** $\frac{1}{2} \times 2 = 1$
- 'एवम्' इति अर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?
 - 'अनुभूयते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
5. कस्मिंश्चित् अरण्ये अनेके पशवः वसन्ति स्मा एकदा पशूनां राजा सिंहः रोगपीडितः अभवत्। एकं शृगालं विहाय सर्वे पशवः रोगपीडितं नृपं द्रष्टुमागताः। एकः उष्ट्रः नृपाय एतत् न्यवेदयत् यत् अहंकारिणं शृगालं

विहाय सर्वे भवनं द्रष्टुमागताः। एतच्छुत्वा सिंहः क्रोधितोऽभवत् स्वमित्रैः
एतज्ज्ञात्वा शृगालः शीघ्रमेव सिंहस्य समीपे प्राप्तः। क्रोधितेन सिंहेन
विलम्बेन आगमनकारणं पृष्ठः शृगालोऽवदत् यदहं तु सर्वप्रथममागन्तुम्
ऐच्छम् परं चिकित्सकात् औषधमपि आनेयमिति विचिन्त्य तत्रागच्छम्।
तच्छुत्वा प्रसन्नः सिंहः औषधविषये पृष्ठवान्। शृगालः अवदत् यतेन
औषधं तु न दत्तं परं कृपापरो भूत्वा चिकित्साक्रमम् उक्तम् यत् उष्ट्रस्य
रक्तपानेनैव रोगस्य शान्तिः भविष्यति। तदा सिंहः उष्ट्रमाहूतवान्। भक्त्या
आगतं च तं मारयित्वा तस्य रक्तं पीतवान्। एवं स्वपिशुनतायाः दुष्कलम्
उष्ट्रेण स्वयमेव प्राप्तम्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरं लिखत— $\frac{1}{2} \times 4 = 2$

- i) चिकित्सकेन किम् उक्तमासीत्?
- ii) शृगालः शीघ्रमेव कस्य समीपे प्राप्तः?
- iii) उष्ट्रेण कस्याः दुष्कलम् प्राप्तम्?
- iv) अनेके पशवः कुत्र वसन्ति स्म?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत— $1 \times 4 = 4$

- i) क्रोधितेन सिंहेन किं पृष्ठम्?
- ii) चिकित्सकेन कीदृशं चिकित्साक्रमम् उक्तम्?
- iii) कं विहाय सर्वे सिंहं द्रष्टुमागच्छन्?
- iv) सिंहः उष्ट्रमाहूय किं कृतवान्?

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

- | | |
|---|---|
| i) 'प्रसन्नः सिंहः' इति अत्र विशेष्यपदं किम्? | 1 |
| ii) 'त्यक्त्वा' इत्यर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? | 1 |
| iii) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। | 2 |
| 6. अमर्त्यसेनः इति नाम एव संस्कृतमयम्। अमर्त्यसेनवर्यस्य जन्म
शान्तिनिकेतने अभवत्। अस्य नाम गुरुदेवेन रवीन्द्रनाथवर्येण चितम्। | |

अस्य नाम निर्दिशन् सः उक्तवान् आसीत्—“अमर्त्यसेनः” इत्येषः शब्दः संस्कृतमूलः अतः एतस्य उच्चारणं स्पष्टं स्यात् यतः अर्थपरिवर्तनं न भवेत्। शान्तिनिर्केतने वसन् अमर्त्यसेनः बाल्ये संस्कृताभ्यासं कृतवान्। तस्य तीव्रः अभिलाषः अपि आसीत् यत् मातामहः क्षितीशमोहनसेन इव अहम् अपि प्रसिद्धः संस्कृतविद्वान् भवेयम् इति।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरं लिखत—

$1 \times 4 = 4$

- i) अमर्त्यसेनस्य मातामहस्य नाम किम् आसीत्?
- ii) कुत्र वसन् अमर्त्यसेनः संस्कृताभ्यासं कृतवान् आसीत्?
- iii) अमर्त्यसेनस्य नाम केन चितम्?
- iv) किं भवितुम् अमर्त्यसेनस्य तीव्रः अभिलाषः आसीत्?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत—

- i) अमर्त्यसेनस्य नामविषये निर्दिशन् रवीन्द्रनाथवर्यः किमुक्तवान्? 2

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

- i) 'अस्य नाम' इत्यत्र 'अस्य' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्? 1
 - ii) 'स्यात्' इत्यर्थे किं क्रियापदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? 1
 - iii) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखता 2
7. कदाचित् देवराजः इन्द्रः भूलोकम् आगतवान्। भूलोके कमपि नगरं प्रविष्टः सः मार्गे गच्छन् आसीत्। तत्र कश्चन विक्रेता बहूनां देवानां विग्रहान् संस्थाप्य विक्रयणं करोति स्मा देवेन्द्रः कुतूहलेन समीपं गत्वा दृष्टवान्। तत्र विष्णुः, शिवः, लक्ष्मीः, सरस्वती, गणेशः इत्यादीनां देवानां विग्रहः आसन्। देवेन्द्रस्य विग्रहः अपि तत्र आसीत्। देवेन्द्रः एकैकस्यापि विग्रहस्य मूल्यं पृष्ठवा-पृष्ठवा ज्ञातवान्। अन्ते च कुतूहलेन तत्र स्थितस्य देवेन्द्रविग्रहस्य मूल्यं पृष्ठवान्। सः विक्रेता उक्तवान्— यः कोऽपि कमपि विग्रहं क्रीणाति तस्मै एषः देवेन्द्र-विग्रहः निःशुल्कं दीयते इति। तदा तु देवेन्द्रस्य स्थितिः शोचनीया एव आसीत्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

- | | |
|---------------------------------|---|
| i) देवराजः कुत्र आगतवान्? | 1 |
| ii) कस्य स्थितिः शोचनीया आसीत्? | 1 |

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- | | |
|---|---|
| i) विक्रेता तत्र केषां देवानां विग्रहान् स्थापितवान्? | 2 |
| ii) देवेन्द्रविग्रहं कस्मै निःशुल्कं दीयते? | 2 |

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

- | | |
|---|---|
| i) 'स्थितिः शोचनीया' अत्र विशेष्यपदं किम्? | 1 |
| ii) 'अपश्यत्' इत्यर्थे किं क्रियापदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? | 1 |
| iii) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखता। | 2 |

8. हरियाणाराज्ये यमुनानगरमण्डले एकः संस्कृतपरिवारः अस्ति। तस्मिन् गृहे सर्वे संस्कृते सम्भाषणं कुर्वन्ति। तत्र पशवोऽपि संस्कृतम् अवबोद्धुं समर्थाः सन्ति। तस्मिन् गृहे अभिमन्युः नाम एकः युवकः अस्ति। सोऽपि संस्कृतं वदति। एकदा तत्र एकः संस्कृतप्राध्यापकः आगतवान्। तेन सह अभिमन्युः संस्कृतेन सम्भाषणं कृतवान्। तस्य युवकस्य प्रतिभां दृष्ट्वा प्राध्यापकः अभिमन्यवे शतं रूप्यकाणि दत्तवान्। तस्मात् दिनात् तस्य मनसि संस्कृतं प्रति महती अभिरुचिः समुत्पन्ना। सः प्रतिदिनं गीतायाः श्लोकान् पठित्वा-पठित्वा सर्वान् श्लोकान् अस्मरत्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

- | | |
|---|---|
| i) संस्कृतपरिवारः कुत्र अस्ति? | 1 |
| ii) प्राध्यापकः कस्मै शतं रूप्यकाणि दत्तवान्? | 1 |

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- | | |
|--|---|
| i) प्राध्यापकः अभिमन्यवे शतं रूप्यकाणि किमर्थं दत्तवान्? | 2 |
| ii) युवकः कथं गीतायाः श्लोकान् अस्मरत्? | 2 |

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

- i) 'अयच्छत्' इत्यर्थे किं क्रियापदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? 1
ii) 'कृतवान्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् चित्वा लिखता। 1
iii) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखता। 2
9. एकस्मिन् दिने बहवः जिज्ञासवः तत्त्वज्ञानं श्रोतुं महात्मनः सुकरातस्य गृहम् आगच्छन्। ज्ञानचर्चा शृणवतां तेषां भूयान् कालः व्यतियातः। सुकरातस्य पत्नी गृहेऽपेक्षितानां वस्तूनाम् अभावचर्चा चिकिर्षिति स्म, किन्तु तत्र उपस्थिते जनसमवाये एतत् सुकरं नासीत्। ततः कोपविहितचेतना सा अपशब्दान् उच्चारयन्ती तत्र समायाता, आगन्तुकेषु च पयः पातयन्ती प्रतिनिवृत्ता। सुकरातः सर्वान् सम्बोधयन् सस्मितम् उवाच, श्रुतम् एव भवद्विर्यत् ये मेघाः गर्जन्ति, ते न वर्षन्ति, किन्तु अद्य प्रकृत्यां विपर्यासः परिलक्षितो भवति, मेघाः गर्जन्ति वर्षन्ति च।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

- I. एकपदेन उत्तरत— 2
i) के महात्म-सुकरातस्य गृहम् आगच्छन्? 1
ii) सुकरातस्य पत्नी आगन्तुकेषु किं पातयन्ती प्रतिनिवृत्ता? 1
- II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—
i) सुकरातस्य पत्नी किं चिकिर्षिति स्म? 2
ii) सुकरातस्य मते प्रकृत्यां कः विपर्यासः परिलक्षितः? 2
- III. यथानिर्देशम् उत्तरत—
i) 'कोपविहितचेतना सा' इति पदे अनुच्छेदे कस्यै प्रयुक्ते? 1
ii) 'अनेके' इत्यर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? 1
iii) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखता। 2

4. अनुच्छेदलेखनम्

किसी विषय के एक बिन्दु पर विचारों या भावों को एक स्थान पर क्रमबद्ध रूप से लिखना अनुच्छेद कहलाता है।

नैतिकशिक्षाया: महत्त्वम्

'शिक्षा' 'विद्योपादाने' इति व्युत्पत्त्या शिक्षाशब्दस्य अर्थः विद्यार्जनम् एव किन्तु केवलानि पुस्तकानि कण्ठस्थीकृत्य उपाधिं प्राप्य जीविकोपार्जनम् एव शिक्षा नास्ति। जीवने सत्यम्, अहिंसा, विनप्रतानियमसाहसप्रभृतीनाम् उच्चादशाणाम् सम्यक् समावेशनम् एव शिक्षाया: उद्देश्यं भवति। यथा शिक्षया एतादृशाणां सद्गुणानां विकासः भवति सा नैतिकशिक्षेति उच्यते। नैतिकशिक्षामाध्यमेन मानवानां मूलप्रवृत्तयः संशोध्यन्ते। नैतिकशिक्षया सङ्कीर्णानां विचाराणाम् अपनयनं भवति। उचितानुचितनिर्णयक्षमतायाः विकासोऽपि भवति। सम्प्रति लोके चौर्यहिंसाबलात्कार—घृणाद्वेषादिघृणितप्रवृत्तयः अनियंत्रणीयाः सञ्जाताः। अतः अस्माभिः मूलप्रवृत्तीनां संयमनम् अवश्यं कर्तव्यम्। नैतिकशिक्षाबलेन एव वर्यं गतगौरवं पुनः प्राप्तुं शक्नुमः।

महामना मदनमोहनमालवीयः

महामनामदनमोहनमालवीयमहोदयः वैदिकधर्मस्य उद्धारकेषु अन्यतमः। 1869 तमे वर्षे प्रयागसमीपवर्तिनि ग्रामे ब्राह्मणकुले मदनमोहनमालवीयमहोदयानां जन्म अभवत्। सः प्रयागस्थ-म्योर-सेंट्रल-महाविद्यालये शिक्षां प्राप्तवान्। 1884 वर्षात् आरभ्य 1887 वर्षपर्यन्तं स उच्चविद्यालये अध्यापकरूपेण कार्यं कृतवान्। तदनन्तरं सः अनेकानां पत्रपत्रिकाणां सम्पादकरूपेण कार्यं कृतवान्। 1899 तमे वर्षे सः विधिशास्त्रस्य परीक्षाम् उत्तीर्य अधिवक्तृरूपेण अपि कार्यं कृतवान्। राष्ट्रीयताप्रसारणाय, प्राचीनसंस्कृतेः गौरवर्धनाय उत्तमशिक्षया च श्रेष्ठसन्ततिनिर्माणाय च सः 1916 तमे वर्षे काश्यां हिन्दूविश्वविद्यालयस्य स्थापनाम् अकरोत्। यद्यपि 1916 तमे वर्षे मालवीयमहोदयाः दिवंगताः परं तेषाम् नाम हिन्दूविश्वविद्यालयमाध्यमेन अद्यापि श्रद्धया स्मर्यते।

सत्सङ्गतिः

सताम् सङ्गतिः इति सत्सङ्गतिः कथ्यते। मनुष्यः स्वसंगत्या एव सज्जनः दुर्जनो वा भवति। यो जनः दुर्जनानाम् संसर्गे अधिकं कालं यापयति, सोऽपि दुर्जनः

भवति सुमनः सङ्गात् कीटः अपि सतां शिरसि आरोहति, परं यदि कोऽपि सज्जनः अपि चौराणाम् संसर्गे कालं यापयति तदा आरक्षिभिः सोऽपि चौरः एव कथ्यते। अत एव अस्माभिः सर्वदा सत्सङ्गतिः एव करणीया।

परोपकारः

परेषाम् उपकारः परोपकारः अस्ति। परोपकारप्रवृत्त्या एव मनुष्यः पशुभ्यः पृथक् भवति। आहारादिप्रवृत्त्यः तु पशुषु अपि तथैव भवन्ति यथा मानवेषु। परं मानवः स्वविवेकेन उचितानुचितज्ञानेन एव आत्मानम् उच्चासने उच्चपदे च स्थापयति। वृक्षाः स्वयं फलं न खादन्ति, ते परेषां कृते एव फलानि छायाः च ददति। नद्यः परोपकाराय एव वहन्ति, गावः अन्येभ्यः एव दुग्धं यच्छन्ति। एवमेव अनेके प्रातःस्मरणीयाः महापुरुषाः अपि अभवन् ये स्वप्राणान् उत्सृज्य देशस्य समाजस्य च रक्षाम् अकुर्वन्। राजा शिविः शरणागतस्य कपोतस्य रक्षायै स्वशरीरस्य मांसं कर्तव्यित्वा श्येनाय दत्तवान्। ऋषिः दधीचिः अपि वृत्रासुरवधाय स्वास्थीनि सहर्षम् अयच्छत्। अद्यापि लोके अनेके समाजसुधारकाः सन्ति ये स्वार्थं परित्यज्य लोककल्याणं कुर्वन्ति। अतः सत्यमेव कथितम्—

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्रव्यम्।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

छात्रजीवनम्

यः विद्यार्जनं कर्तुम् इच्छति विद्यार्जने च संलग्नः भवति सः विद्यार्थी उच्यते। विद्याध्ययनाय छात्रः विद्यालयं गच्छति। सः सर्वविधं सुखं परित्यज्य अहर्निशं विद्याध्ययनं करोति। विद्यार्थी अल्पाहारी गृहत्यागी काकचेष्टावान् बकध्यानयुक्तः अल्पनिद्रालुश्च भवेत्। यथोक्तं केनापि कविना—

काकचेष्टा बकध्यानं शुनो निद्रा तथैव च।

अल्पाहारः गृहत्यागः विद्यार्थिपञ्चलक्षणम्।

प्रमादं विहाय अध्ययनेन परिप्रश्नेन च विद्यार्थी विद्यार्थी भवितुं शक्नोति। तेन तपोमयजीवनम् अनुकरणीयम् इति।

5. निबन्धावली

पर्यावरणम्

अद्यत्वे हि विज्ञानमयं युगं वर्तते। जनैः सौविध्यार्थं नानोपकरणानि प्रयुज्यन्ते। तेषामुत्पादनं कार्यशालासु यन्त्रैः क्रियते। यातायातव्यवस्थायाः कृते विविधानि यानानि प्रयुज्यन्ते। यद्यपि एतैरस्माकं जीवनं सुखमयं भवति, परम् एभिः प्रसारितः धूमः वायुमण्डलम् अत्यन्तं दूषयति। एवमेव वनानां विनाशेन क्रतुचक्रं प्रभावितं भवति। वायुमण्डलस्य दुष्प्रभावितत्वात् अस्माकं शरीरमपि श्वासादिरोगैः रुणं भवति।

महानगराणां मलिनजलं नानाप्रवाहिकामाध्यमेन नदीं प्रविशति। अस्मात् कारणात् नदीनां स्वच्छमपि जलं मलिनम् अपेयं च भवति। साम्प्रतं पाश्चात्यदेशेषु पर्यावरणं प्रति जागरुकता समुत्पन्ना। तत्प्रेरिता भारतीयैरपि पर्यावरणदूषणस्य सङ्कटम् अवगत्य साम्प्रतं गंगा-यमुनादि-नदीनां कृते शुद्धीकरणकार्यक्रमाः प्रचाल्यन्ते। अस्माभिरपि आवश्यकेऽस्मिन् पर्यावरणरक्षाकार्यक्रमे वृक्षारोपणमाध्यमेन, स्वच्छतादिनियमानां पालनेन च योगदानं विधेयम्।

दूरदर्शनम्

कालोऽयं विज्ञानमयः। विज्ञानस्य विभिन्नोपकरणैः मानवजीवनम् अतितरां सौविध्यमनुभवति। विज्ञानक्षेत्रे ये आविष्काराः संजाताः तेषु दूरदर्शनं सर्वान् अतिशेतो।

अद्यत्वे एकत्र स्थितः मानवः एतदुपकरणमाध्यमेन दूरस्थिताः घटना: वीक्षितुं शक्नोति। अमेरिकादेशेन ईराकदेशे यद् आक्रमणम् कृतम् तस्य साक्षात्प्रसारणं दूरदर्शनयन्त्रमाध्यमेन तद्वत् प्रत्यक्षीकृतं, यथा हि पुरा महाभारतस्य युद्धं सञ्जयेन धृतराष्ट्रं प्रति वर्णितमासीत्।

दूरदर्शनेन न केवलं मनोरञ्जनमेव भवति, अपितु दैनिकघटनानां ज्ञानम् अपि एतेन भवति। विभिन्नाभिः प्रणालिकाभिः (वैनलैः) प्रतिक्षणं नूतन-नूतनवार्ताणां प्रसारणं क्रियते। साम्प्रतं तु शिक्षाक्षेत्रेऽपि अस्य महान् उपयोगो विधीयते।

'ज्ञानदर्शन' इति कार्यक्रममाध्यमेन देशस्य सुदूरस्थक्षेत्रवास्तव्याः छात्राः अपि विद्यार्जनं कर्तुं पारयन्ति। दूरदर्शनेन तु साम्प्रतं प्रतिदिनं संस्कृतवार्ताः अपि प्रसार्यन्ते, एतत्प्रसारणं निशम्य लोकाः शुद्धं संस्कृतोच्चारणं कर्तुं पारयन्ति।

यद्यपि दूरदर्शनस्य नैके गुणाः सन्ति, परमत्र केचन अवगुणाः अपि सन्ति। अत्र प्रसार्यमाणानां कार्यक्रमाणाम् अधिकदर्शनेन नेत्रहानिः सम्भवति। बाल्यावस्थायामेव बालकाः उपनेत्राणि संधारयितुं विवशीभवन्ति।

एकोऽपरोऽतिदोषः वर्तते यत् प्रायशः ये मनोरञ्जककार्यक्रमाः प्रसार्यन्ते, तेषु सदाचारशिक्षायाः अभावो वर्तते। नैके कार्यक्रमाः केवलम् अनैतिकताम् मूल्यहानिं च प्रदर्शयन्ति। अतः अस्माभिः दूरदर्शनेन केवलम् गुणार्जनमेव विधेयम्।

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

भारतवर्षे आदिकालादेव मानवानां व्यवहारे संस्कृतभाषायाः प्रयोगो भवति स्म। संस्कृतं विश्वस्य प्राचीनतमा भाषास्ति। श्रद्धावशादियं जनैः देववाणी सुरभारतीत्यपि कथ्यते। इयं भाषा भारतीयायाः सभ्यतायाः संस्कृतेः चिन्तनस्य च संवाहिकास्ति। संस्कृतं धर्मस्य, दर्शनस्य, राजनीतेः, इतिहासस्य, अर्थशास्त्रस्य नीतिशास्त्रस्य च मूलमस्ति।

अस्यां भाषायां भारतीयचिन्तनस्य सर्वे प्रमुखाः ग्रन्थाः उपनिबद्धाः सन्ति। विश्वसाहित्यस्य प्राचीनतमानां ग्रन्थानां वेदानामपि भाषा संस्कृतमेवास्ति। सम्पूर्णं वैदिकं वाङ्मयं ज्ञानविज्ञानदृष्ट्या समस्ते जगति निरूपमं विद्यते। अस्यां भाषायां दर्शनग्रन्थाः साहित्यग्रन्थास्तु उपनिबद्धाः सन्त्येव सहैव भौतिकविज्ञानस्य रसायनविज्ञानस्य, चिकित्साविज्ञानस्य, वनस्पतिविज्ञानस्य, भाषाविज्ञानस्य, वास्तुविज्ञानस्यापि अनेके मौलिकाः ग्रन्थाः विद्यन्ते।

संस्कृतभाषायाम् उपनिबद्धे साहित्ये सत्यस्य, अहिंसायाः राष्ट्रभक्तेः, परस्परं सहयोगस्य, त्यागस्य, विश्वबन्धुत्वस्य, शान्तेश्च भावनानाम् अजस्रं स्रोतः प्रवहत् विद्यते। लोककल्याणाय अस्यां भाषायां बहवः आदर्शः प्रस्तुताः सन्ति, यथा— 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'तेन त्यक्तेन

भुज्जीथाः मा गृधः कस्यस्वद्धनम् इत्यादयः। एतेषामादर्शानामनुकरणं कृत्वा
यः कोऽपि मानवः स्वजीवनम् उन्नतं कर्तुं शक्नोति।

विषयदृष्ट्या भाषासौष्ठवदृष्ट्या च इयं भाषा अन्यासु सर्वासु विश्वभाषासु
अतिशेते। आधुनिकाः प्रायशः सर्वाः भारतीयाः भाषाः संस्कृतभाषायाः एव
निर्गताः सन्ति।

संस्कृतसाहित्यमाश्रित्यैव आधुनिकं साहित्यमपि विकसितम्। अत एव
इयं भाषा भारतीयभाषाणां जननी सम्पोषिका च कथ्यते। विश्वबन्धुत्वभावनां
पोषयितुम्, भारतीयां संस्कृतिमवगन्तुम्, राष्ट्रियतायाः भावनां वर्धयितुम्
भारतीयभाषाणां विकासाय च संस्कृतभाषायाः परमोपयोगिता विद्यते।

भारतीया संस्कृतिः

संस्कृतिः नाम संस्कारेण संस्करणं परिष्करणम् इति। यया संस्कृत्या सभ्यतया
च भारतीयाः जनाः संस्कारं परिष्कारं च लभन्ते सा एव भारतीया संस्कृतिः।
इयम् 'आर्यसंस्कृतिः' अपि उच्यते। एषा संस्कृतिः जनानां हृदयेभ्यः दुरुणान्,
दुर्व्यसनानि, पापानि च निस्सार्य दूरीकरोति। सदाचार-शिक्षणेन च सा
मानवमनांसि निर्मलानि सात्त्विकानि च करोति। 'समन्वय-भावना' अस्माकं
भारतीयानां संस्कृतेः प्रमुखा विशेषता अस्ति। संस्कृतिरियं विश्वस्य सर्वेभ्यः
मानवेभ्यः सौख्यम् उपदिशति।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाभवेत्॥

अस्माकं भारते पूर्वम् आर्यजनाः पापेभ्यः बिभ्यति स्म, सत्यं वदन्ति स्म,
अहिंसाम् आचरन्ति स्म। ते दया-परोपकार-धैर्य-त्यागशीलता-सहानुभूत्यादि-
नियमान् पालयन्ति स्म। अत एव ते विश्ववन्द्याः आसन्। भारतीयाः जनाः
शास्त्रोक्तानां धर्मनियमानां पालने मनसा वाचा कर्मणा संनद्धाः भवन्ति स्म।
सत्यमिदं यत् संसारे यः कोऽपि स्वसंस्कृतिं त्यजति सः कदापि सुखी समृद्धश्च न
भवति। अतः यदि वयं सुखं सम्मानं, समृद्धिं च इच्छामः तर्हि स्वभारतीयसंस्कृतेः
सद्गुणाः अस्माभिः ग्रहणीयाः पालनीयाः एव।

कविः कालिदासः

संस्कृतसाहित्यम् अतिविस्तृतं वर्तते। अत्र नैके कवयः अनेकान् ग्रन्थान् विरचितवन्तः परं न हि तैर्लिखिं सर्वं साहित्यम् इदानीं प्राप्यते। केवलं अङ्गुलिगण्या एव कवयः एतादृशाः सन्ति, येषां नाम अद्यापि आदरपूर्वकं गृह्यते, मुहुर्मुहुश्च तेषां साहित्यं पठ्यते। एतादृश एव कविः कालिदासोऽस्ति, यो हि आलोचकैः कविकुलगुरुः इत्युपाधिना समलङ्घक्रियते।

कालिदासः भारतवर्षस्य कस्मिन् प्रदेशे कस्मिंश्च काले जन्म लेभे इत्यादिप्रश्ना: अद्यावधिः असमाहिताः एव। विद्वांसः ख्यैस्तीयप्रथमशताब्दीतः आरभ्य षष्ठशतकं यावत् कुत्रापि कालिदासस्य स्थितिं स्थापयन्ति। एवमेव तस्य जन्मस्थान-विषयेऽपि विवदन्ते। कालिदासस्य लोकप्रियतां वीक्ष्य कश्मीरवासिनस्तं कश्मीरप्रदेशे समुत्पन्नम् बंगालवासिनश्च तं बंगप्रान्ते समुद्भूतम् उज्जयिनीवासिनश्च कालिदासम् उज्जयिन्यां लब्धजन्मानं कथयन्ति।

महाकविना कालिदासेन सप्तग्रन्थाः विरचिताः, एतेषु रघुवंश कुमारसम्भव-नामके द्वे महाकाव्ये, ऋतुसंहार-मेघदूतनामके द्वे खण्डकाव्ये, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकानिमित्रञ्चेति त्रीणि नाटकानि सन्ति।

एतेषु सर्वेषु अभिज्ञानशाकुन्तलं नाम नाटकं तस्य सर्वस्वम् अभिधीयते। एतन्नाटकम् अधीत्यैव पाश्चात्याः संस्कृताध्ययनं प्रति समुत्सुका अभूवन्। कालिदासस्य साहित्ये सर्वत्र प्रकृतेश्चित्रणं वर्तते। मानवः यदा-यदा स्वर्कर्तव्यस्य अवहेलनां विदधाति तदा स शापं दण्डं च प्राप्नोति। प्रकृतिशरणं गत्वैव तस्य निष्कृतिर्भवति। शाकुन्तले दुर्वासिसः शापमाध्यमेन, मेघदूते च यक्षकथामाध्यमेन कविरिदमेव मुहुर्मुहुरूपदिशति। कालिदासस्य रस भावसमन्विता वाणी कस्य मनो न हरति? कालिदासस्य अद्वितीयत्वमेव केनापि कविनोक्तम्—

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।

अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावाद्
अनामिका सार्थवती बभूव॥

आदिकविः वाल्मीकिः

महर्षिः वाल्मीकिः संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविरस्ति। अयं मर्यादापुरुषोत्तमस्य रामस्य चरितवर्णनाय 'रामायणम्' नाम आर्षकाव्यम् अरचयत्। रामायणस्य फलश्रुत्याद्याये रामायणस्य कर्तृत्वेन वाल्मीकिः उल्लेखः प्राप्यतो क्रौञ्चद्वन्द्वस्य एकं व्याधेन व्यापादितं दृष्ट्वा अस्य कवेः मनसि समुत्थितः शोकः एव श्लोकरूपेण आविर्भूतः। उक्तञ्च—

क्रौञ्चद्वन्द्ववियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः।

आदिकविरयम् क्रषेः प्रचेतसः दशमः पुत्र आसीत्। अयं जात्या ब्राह्मणः राज्ञो दशरथस्य च मित्रमासीत्। मुनेर्वाल्मीकिः आश्रमे दशसहस्रसंख्याकाः छात्राः उषित्वा शिक्षामगृह्णन्। अस्याश्रमः गङ्गायाः तमसानद्याश्च तीरे आसीत्। वाल्मीकिः आश्रमविषये इदमपि मतं प्राप्यते यत् अस्याश्रमः यमुनायास्तटे चित्रकूटस्य समीपे आसीत्। तत्रैव उषित्वा वाल्मीकिः रामायणस्य रचनामकरोत्।

वाल्मीकिना विरचितं 'रामायणम्' लोकेऽस्मिन् सर्वतो मधुरम्, लोकप्रियम्, सर्वतश्चाधिकं हृदयस्पर्शि ऐतिहासिकं काव्यमस्ति। अस्मिन् रामस्य, कथां वर्णयित्वा कविना लोकसमक्षम् एकः आदर्शः प्रस्तुतीकृतः यत् 'रामादिवद् प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्'।

रावणः सीतायाः अपहरणम् अकरोत् अतः तस्य समूलं नाशोऽभवत्। रामः रामायणस्य सर्वगुणसम्पन्नः आदर्शनायकोऽस्ति। रामस्य चरितानि पठित्वा जनाः स्वकर्तव्यस्य, लोकव्यवहारस्य शौर्यस्य च शिक्षां गृह्णन्ति।

इयं रामायणी कथा इयती रुचिपूर्णा अस्ति यत् जावा-सुमात्रा-बोर्नियो-बाली-चम्पा-थाईलैंडप्रभृतिदेशेषु सर्वत्र प्रचारमलभता।

परवर्तिभिरनेकैः महाकविभिः अस्य कथामवलम्ब्य अनेकानि काव्यानि नाटकानि च विरचितानि। अत एव इदं महाकाव्यं चिरस्थायिर्नीं कीर्तिमलभता अत एवोच्यते—

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणी कथा लोकेषु प्रचलिष्यति॥

भगवद्वीता

अयं ग्रन्थः महर्षिणा वेदव्यासेन रचितस्य महाग्रन्थस्य महाभारतस्य अड्गभूतः अस्ति। महाभारतयुद्धकाले यदा अर्जुनः मोहग्रस्तः युद्धविरतः च अभवत् तदा श्रीकृष्णेन यत्किञ्चिदुपदिष्टं तत् गीता-ग्रन्थरूपेण प्रसिद्धम्। अस्मिन् कर्म-ज्ञान-सांख्य-योगानां विषये उपदेशः विद्यते। कर्मयोगः गीतायाः प्रमुखः उपदेशः अस्ति। अत एव अस्य ग्रन्थस्य अपरं नाम 'कर्मयोगशास्त्रम्' अपि अस्ति। अस्य मननं कृत्वा मनुष्यः कर्मयोगी भवति। सः मनसा इन्द्रियैः शरीरेण च क्रियमाणेषु कर्मसु कर्तृत्वाभिमानं त्यजति। अयं ग्रन्थः संन्यासं नोपदिशति अपितु योगः कर्मसु कौशलम्" इत्युपदिशति। गीतायां निष्कामकर्मणः विशिष्टं महत्त्वम् अस्ति —

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"।

अस्मिन् ग्रन्थे भगवता श्रीकृष्णेन उपदिष्टम् यत् — आत्मा नित्यः शरीराणि च अनित्यानि। अतः मरणात् न भेतव्यम् नरः वीरो भूत्वा अन्यायस्य प्रतीकारं कुर्यात्। एवं प्रकारेण गीता सर्वान् मनुष्यान् सर्वेषु लौकिककर्मसु कौशलम् शिक्षयति। अर्जुनः उपदेशेन नष्टमोहो भूत्वा कृष्णस्य धर्मयुद्धे प्रवृत्तः अभवत्। गीतायाः उपदेशसारं प्राप्य मनुष्यः आसुरीं सम्पदं परित्यज्य दैवीं सम्पदम् अर्जितुम् प्रवृत्तो भवति। अतः सर्वैः लोकैः गीतोपदेशम् अनुकृत्य जीवनम् सफलं कर्तव्यम्। गीताविषये केनापि कविना सत्यमुक्तम् —

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।

हिमालयः

भारतभूखण्डोपरि प्रकृते: महती अनुकम्पा वर्तते। नाना पर्वतमालाः विभिन्नाः सरितः नैकानि वनानि, द्वे सागरे, मरुस्थली च अत्र राजन्ते। एकस्मिन्नेव समये नैके ऋतवः अपि द्रष्टुं शक्यन्ते। यद्येकत्र ग्रीष्मातपप्रचण्डता दृश्यते, तदा अन्यत्र

हिमाच्छादितत्वात् शैत्यप्रकोपोऽप्यनुभूयते। अस्मिन् भारतवर्षे ये प्राकृतिक-सीमानः सन्ति तेषु उत्तरस्यां दिशि हिमालयस्य प्रामुख्यं वर्तते।

भारतवर्षस्य उत्तरे दिग्बिभागे अवस्थितेयं विशाला पर्वतमाला। कश्मीरादाभ्य अरुणाचलप्रदेशं यावद् अतिविस्तृतेयं पर्वतशृङ्खला अनादिकालात् भारतं रक्षितवती। न कोऽपि शत्रुः इमाम् उल्लङ्घ्य भारतं प्राविशत्, केवलं विगते शताब्दे चीनदेश एव एतादृशां दुःसाहसं कर्तुम् अपारयत्।

हिमालय एव उत्तरभारतस्य पिपासां शमयति विशालं कृषिक्षेत्रं च सिञ्चति। अस्य हिमाच्छादितत्वाद् गड्गा-यमुना-शतद्रु-व्यास-वितस्तादयः सरितः सततं निस्सरन्ति। अस्माकं देशः 'हिन्दुस्तान' इति नाम्नापि व्यवहियते, अत्र यत् हिन्दू इति पदं वर्तते तत् सिन्धु इति शब्दान्निष्पन्नम्। सिन्धुनदी अपि हिमालयादेव प्रभवति।

चिरात् नाना कवयः स्वीयरचनासु हिमालयं वर्णितवन्तः। कालिदासेन तु स्वीये कुमारसम्भवे अयं हिमालयः देवभूमिरूपेण इत्थं वर्णितः—

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।

पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्यामिव मानदण्डः॥

हिमालयप्रदेशे एव अस्माकं पुरातनतीर्थादीनि सन्ति। अत्रैव शङ्कराचार्येण स्थापितम् 'केदारनाथ इति तीर्थस्थानं वर्तते'। यमुनोत्री-गंगोत्री-बदरीनाथ-प्रभृतीनि पवित्राणि स्थानान्यपि अत्रैव वर्तन्ते।

नैकखनिजानाम् इयम् जन्मभूमिः। अत्रैवासीत् कण्वस्य तपोवनम्। आयुर्वेदस्य उपयोगाय औषधजातानि वनस्पतयश्च अस्मादेव प्राप्यन्ते। योगिनः अपि तपः साधनां कर्तुम् अत्रैव गच्छन्ति।

भारते भावनात्मकम् ऐक्यं स्थापयितुं हिमालयस्य महत्त्वपूर्ण योगदानं वर्तते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

संसारेऽस्मिन् जननी अस्मभ्यं यानि यानि सुखानि प्रयच्छति, जन्मभूमिश्च तथैव सौविध्यानि ददाति।

जन्मदात्री माता जन्मभूमिश्च स्वर्गाद् अपि श्रेष्ठा वरिष्ठा च वर्तते। माता

कुमाता कदापि न भवति। सा जन्मन प्रभृति अतीव निश्छलप्रेमणा पुत्रं पुत्रीं च लालयति, पालयति, स्वदुग्धं पाययित्वा शिशुं वर्धयति स्वयं च महत्कष्टानि अनुभूय तं सुखयति, महद्वयाच्च रक्षति।

शीताँ रात्रिकालेषु बालस्य मूत्रेण आद्रीभूताऽपि विष्टरे स्वयं स्वपिति, परन्तु बालं च शुष्कस्थाने शय्यायां स्वापयति। किमधिकं माता स्वसन्ततिसुखाय रक्षणाय च स्वदुर्लभप्राणानपि दातुम् उद्यता भवति। अतः सत्यमिदं कथितं यत् जननी स्वर्गादपि अधिकं सुखं प्रयच्छति।

भासस्य कथनानुसारेण माता किल मनुष्याणां देवतानाम् च दैवतम्।

वस्तुतः जन्मभूमिः जननीवत् अस्मान् सर्वान् नानाविधानि अन्नानि, फलानि च दत्त्वा यावज्जीवनं पालयति पोषयति संवर्धयति चा भूमिः अस्मभ्यं धनं, धातून्, रत्नानि च प्रयच्छति। जन्मदात्री कतिचिद्वर्षानन्तरं स्वकर्तव्यं पूर्यित्वा निवृत्ता भवति; किन्तु जन्मभूमिः अस्माकं जीवनस्य अन्तिमं क्षणं यावत् स्वान्नजलफलादिभिः अस्मान् पोषयति। वयं च अन्तिमं श्वासम् अत्रैव नयामः। पशुपक्षिषु अपि स्वमातृभूमिं प्रति स्नेहभावः दृश्यते। मानवः तु विशेषरूपेण विवेकशीलः मनस्वी च वर्तते। अतः मातृभूम्यै तस्य स्नेहः स्वाभाविकः। सुष्ठूकृतम् अर्थवर्वेदेऽपि "माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः"। खगाः अपि स्वदेशभूमिं बहु स्निह्यन्ति—

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजमण्डितम्।

रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना॥

चन्द्रशेखर-भगतसिंह राजगुर्वादयः देशभक्ताः जन्मभूमिस्वतन्त्रतायै स्वकीयान् प्राणान् दत्त्वा अमरा: जाताः। मातृभूमेः सीमां परिरक्ष्य सैनिकाः जन्मभूम्याः क्रणात् मुक्ताः भवन्ति। स्वर्णमर्यां लड़कां विजित्य रामः लक्ष्मणम् अवदत्—

अपि स्वर्णमर्यी लड़का, न मे लक्ष्मण रोचते।

जननी जनमभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

प्रियं मे भारतम्

अस्माकं प्रियं भारतम् 'आर्यावर्तः' 'भारतवर्षम्' हिन्दुस्तान' 'इण्डिया' इति चतुर्थिः नामभिः प्रसिद्धम् परन्तु सम्प्रति जनैः अस्य नाम 'भारतम्' इत्येव स्वीकृतम्।

भारतं कश्मीरात् कन्याकुमारीपर्यन्तं सुविस्तृतं राजते। अस्य मुकुट इव नगाधिराजः हिमालयः उत्तरस्यां दिशि शोभते। दक्षिणे चास्य हिन्दमहासागरः विद्यते।

अद्यत्वे भारते अष्टाविंशतिः राज्यानि सन्ति, तानि सर्वाण्यपि प्रादेशिक-विधानसभाभिः सञ्चाल्यन्ते। दिल्लीनगरं भारतस्य राजधानी केन्द्रं चास्ति। केन्द्रीयं शासनं सांसदैः संचाल्यते। सांसदबहुसंख्याकदलेन मन्त्रिमण्डलं निर्मीयते। सर्वोपरि राष्ट्रपतिः देशस्य शासनं करोति। किं बहुना भारतं सर्वोच्चसत्तासम्पन्नं प्रजातन्त्रात्मकं गणराज्यमस्ति।

भारते विविधाः जातयः सम्प्रदायाः, धर्माः भाषाश्च। परं सर्वे भारतीयाः परस्परं प्रेमणा व्यवहरन्ति। अत्रत्या: गड्गादिनद्यः सकलं जगत् पुनन्ति। अत्रैव अवतीर्णा: श्रीरामः, श्रीकृष्णः, महात्माबुद्धः, महावीरः, शङ्करादिमहामानवाः। अत्रैव रघुः, चन्द्रगुप्तः, अशोकः, विक्रमादित्यः, प्रभूतयः महान्तः शासकाः अभवन्। आधुनिककाले गान्धि:, जवाहरलालः, सुभाषः, चन्द्रशेखरः, मालवीयादयः महापुरुषाः अजायन्ता स्वकार्यैश्च भारतस्य महत्त्वं वर्धितवन्तः। राष्ट्रभक्तिः अस्माकं प्रथमं कर्तव्यम् अस्ति। अस्माभिः सर्वैरपि भारतस्य सेवा मनसा, वाचा कर्मणा च करणीया। सम्प्रदाय-जाति-भाषा-प्रदेशादिभेदकतत्त्वानि विस्मृत्य ऐक्यं विधाय भारतस्य रक्षा, उन्नतिः च कर्तव्या। भारतस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादयन् केनापि सत्यमेवोक्तम्—

गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागो।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

मैट्रो-रेलसेवा

अतिविस्तृतानि महानगराणि असंख्यनिवासिभिः सङ्कुलानि भवन्ति। महान-गेरेषु जनाः स्वकार्यं कर्तुं दूरं गन्तुं विवशा भवन्ति। यद्यपि महानगरेषु नैके राजमार्गा भवन्ति, परं यथा-यथा जनसंख्या वर्धते, वाहनानामपि संख्या प्रवर्धते, तथा तथा गमनागमने कष्टं भवति, वाहनानां च आधिक्येन पर्यावरणमपि दूषितं भवति।

अतः एतत्समाधानाय यूरोप-देशेषु मैट्रोनामधारिणी उपनगरगामिनी तीव्र-गतिका रेलसेवा प्रवर्तिता। मूलतः सा रेलसेवा 'मैट्रो' नामा अभिधीयते। भूमौ खननं विधाय विशालभवनानाम् अथः सुरंगेषु रेलपट्टिकाः स्थाप्यन्ते, तदुपरि द्रुतगत्या रेलकक्षाः धावन्ति।

दिल्लीनगर्या प्रचलितायाः मैट्रोरेलसेवायाः द्वे स्वरूपे स्तः। मैट्रो-मार्गस्य प्रथमं स्वरूपं तु भूमेरुपरि, अपरज्च भूम्यन्तः। इदानीं तु दिल्लीनगरं प्रतिवेशिनगरेषु यथा नोएडानगरं प्रति, गुरुग्रामं प्रति, गाजियाबादनगरं प्रति, फरीदाबादनगरं प्रति अपि मैट्रोरेलयानेन जनाः सुगमतया गमनागमनं कुर्वन्ति। वायुयानस्थानकं प्रति गम्यमानायाः तीव्रगामीमैट्रोसेवायाः प्रयोगं दैशिकाः, वैदेशिकाः च सानन्दं कुर्वन्ति।

साम्प्रतं सहस्रशो जनाः अल्पेनैव कालेन एकस्मात् स्थानाद् अपरत्र यान्ति। द्रुतगत्या प्रधावतः वातानुकूलितकक्षान् वीक्ष्य को जनः मैट्रोद्वारा यात्रां कर्तुं नेच्छति।

स्वतन्त्रता-दिवसः

अस्माकं भारतदेशः सप्तचत्वारिंशदुत्तर—नवशैक्षकसहस्रतमे (1947) वर्षे अगस्तमासस्य पञ्चदशदिनाङ्के स्वतन्त्रः अभवत्। दिनेऽस्मिन् प्रतिवर्षे सम्पूर्णे भारतवर्षे स्वतन्त्रादिवसोत्सवः मन्यते। अयं दिवसः भारतीयेतिहासे स्वर्णाक्षरैः लिखितमस्ति यतः अस्मिन् एव दिवसे भारतवर्षः मुक्तो भूत्वा स्वातन्त्र्यम् अलभता भारतस्य राजधान्यां दिल्लीनगरे स्वतन्त्रादिवसोत्सवः विशेषरूपेण दर्शनीयः भवति। प्रातःकाले सप्तवादनसमये अपारजनसमूहः रक्तदुर्गस्य

मुख्यद्वारे एकत्रितो भवति। महान्तो नेतारः वैदेशिकाः अतिथयश्च मञ्चे उपविशन्ति। भारतस्य प्रधानमन्त्री त्रिवर्णात्मिकां राष्ट्रपताकाम् आरोहयति, ततः 'जन-गण-मन' इति राष्ट्रगीतं गीयते, पश्चाच्च प्रधानमन्त्री देशवासिनः सन्दिशति। दूरदर्शनेन एतेषां कार्यक्रमाणाम् प्रसारणं भवति येन दूरस्थाः अपि जनाः सोल्लासम् कार्यक्रमान् पश्यन्ति।

दिवसेऽस्मिन् न केवलं राजधान्यामेव अपितु सर्वेषु प्रदेशेष्वपि विविधानि कार्यक्रमाः आयोज्यन्ते, यथा कविभिः देशभक्तिपराः कविताः पठ्यन्ते, वीररसमयानि गीतानि गीयन्ते, स्वतन्त्रता-संग्रामसेनानिनः स्मर्यन्ते, क्रीडा-भाषण-प्रतियोगिताः समायोज्यन्ते, अन्ते च मिष्टान्नानि वितीर्यन्ते। राष्ट्रपर्व इदं सर्वेषु भारतीयेषु नवोत्साहं, नवां कल्पनाङ्गं जनयति। अत एव अवसरेऽस्मिन् अस्माभिः सर्वैरपि प्रतिज्ञा कर्तव्या यद् शरीरण, मनसा, धनेन, प्राणार्पणेनापि भारतमातुः सेवां सदा करिष्यामः।

परिशिष्ट

I. शब्दरूपाणि

i) स्वरान्त शब्दरूप

बालक (अकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
	स् (ः)	औ	अः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
	अम्	औ	अः (आन्)
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
	आ (एन)	भ्याम्	भिः (ऐः)
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य
	ए (आय)	भ्याम्	भ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
	अस् (आत)	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
	अस् (स्य)	ओ (योः)	आम् (नाम्)
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
	इ (ए)	ओः (योः)	सु (एषु)
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालकाः !

(अकारान्त पुँलिङ्ग शब्दों के रूप बालक के समान पढ़े जाएँगे।)

फल (अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
सम्बोधन	हे फल !	हे फले !	हे फलानि!
(शेष तृतीया से सप्तमी विभक्ति पर्यन्त बालक के रूप के समान पढ़े जाएँगे।)			

लता (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

(आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप लता के समान होते हैं)

मुनि (इकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मनुयः !

(‘भूपति’ आदि सभी इकारान्त पुँलिङ्ग शब्दों के रूप मुनि के समान पढ़े जाएँगे।)

पति (इकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पति:	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या (पतिना)	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पतये (पत्यै)	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते !	हे पती!	हे पतयः!

नदी (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

भानु (उकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्

तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू !	हे भानवः!

धेनु (उकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा (धेनुना)	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे/धेन्वे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः!

मधु (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

पितृ (पिता) (ऋक्कारान्त पुँलिलङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	है पितरौ!	हे पितरः !

मातृ (माँ, माता) (ऋक्कारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः !	हे मातरौ!	हे मातरः !

गो (गाय और बैल) (ओक्कारान्त पुँलिलङ्ग/स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गा:
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः

चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः!	हे गावौ!	हे गावः!

द्यु/द्यो (आकाश/स्वर्ग) (ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्यौः	द्यावौ	द्यावः
द्वितीया	द्याम्	द्यावौ	द्याः
तृतीया	द्यवा	द्योभ्याम्	द्योभिः
चतुर्थी	द्यवे	द्योभ्याम्	द्योभ्यः
पञ्चमी	द्योः	द्योभ्याम्	द्योभ्यः
षष्ठी	द्योः	द्यवोः	द्यवाम्
सप्तमी	द्यवि	द्यवोः	द्योषु
सम्बोधन	हे द्योः!	हे द्यावौ!	हे द्यावः!

नौ (नाव) स्त्रीलिङ्ग (ओकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	नावौ	नावः
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
चतुर्थी	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः
पञ्चमी	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः
षष्ठी	नावः	नावोः	नावाम्
सप्तमी	नावि	नावोः	नौषु
सम्बोधन	हे नौः!	हे नावौ!	हे नावः!

अक्षि (इकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्षणा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभः
चतुर्थी	अक्षणे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्षणः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्षणः	अक्षणोः	अक्षणाम्
सप्तमी	अक्षिणि	अक्षणोः	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि!	हे अक्षिणी!	हे अक्षीणि!

ii) व्यञ्जनान्त शब्दरूप

राजन् (राजा) (नकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राजा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि	राज्ञोः	राज्ञसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

भवत् (आप) (तकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः

तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्ग्रिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्!	हे भवन्तौ!	हे भवन्तः!

आत्मन् (आत्मा, अपने आप) (नकारान्त पुँलिलङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मानः!

विद्वस् (विद्वान्) (सकारान्त पुँलिलङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्ग्रिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्!	हे विद्वांसौ!	हे विद्वांसः!

चन्द्रमस् (चन्द्रमा) (सकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमा:	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्यु
सम्बोधन	हे चन्द्रमाः!	हे चन्द्रमसौ!	हे चन्द्रमसः!

वाच् (वाणी) (चकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाभ्याम्	वाभिः
चतुर्थी	वाचे	वाभ्याम्	वाभ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाभ्याम्	वाभ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्, वाग्!	हे वाचौ!	हे वाचः!

गच्छत् (जाते हुए) (तकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः

चतुर्थी	गच्छते	गच्छदभ्याम्	गच्छदभ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छदभ्याम्	गच्छदभ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः!

पुम्स् (पुरुष) (सकारान्त पुँलिलङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुम्भ्याम्	पुम्भिः
चतुर्थी	पुंसे	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
पञ्चमी	पुंसः	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
षष्ठी	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सम्बोधन	हे पुमान्!	हे पुमांसौ!	हे पुमांसः!

पथिन् (रास्ता) नकारान्त पुँलिलङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्था:	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः!	हे पन्थानौ!	हे पन्थानः!

गिर् (वाणी, सरस्वती) रकारान्त स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पञ्चमी	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
षष्ठी	गिरः	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	गिरोः	गीर्षु
सम्बोधन	हे गीः!	हे गिरौ!	हे गिरः!

अहन् (दिन) नकारान्त नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहः	अही-अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	अही-अहनी	अहानि
तृतीया	अहा	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अहे	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अहः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अहः	अहोः	अहाम्
सप्तमी	अहिं-अहनि	अहोः	अहस्यु-अहःसु
सम्बोधन	हे अहः!	हे अही-अहनी!	हे अहानि!

पयस् (दूध और जल) सकारान्त नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः

पञ्चमी	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
षष्ठी	पयसः	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	पयसोः	पयसु-पयःसु
सम्बोधन	हे पयः!	हे पयसी!	हे पयांसि!

iii) सर्वनाम

सर्व (सब) अकारान्त पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व (सब) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (सब) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

(तृतीया से सप्तमी पर्यन्त शेष रूप पुँलिङ्ग के समान चलेंगे। सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।)

यत् (जो) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यत् (जो) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत् (जो) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(तृतीया से सप्तमी पर्यन्त शेष रूप पुँलिङ्ग के समान होते हैं।)

एतत् (यह) पुँलिलङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतत् (यह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि

(शेष रूप पुँलिलङ्ग के समान होते हैं।)

एतत् (यह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

तत् (वह) पुँलिलङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते

द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

(तत्, यत्, एतत्, इदम्, अदस्, किम्, युष्मद्, अस्मद् आदि सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता)

तत् (वह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् (वह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
(शेष रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं।)			

किम् (कौन) पुंलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः

चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (क्या-कौन) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् (क्या) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

(शेष रूप पुँलिङ्ग के समान होंगे)

इदम् (यह) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः

षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

इदम् (यह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

इदम् (यह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि
(इसके शेष रूप पुँलिङ्ग के समान होते हैं।)			

अस्मद् (मैं)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तुम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वा	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयो:, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयो:	युष्मासु

अदस् (यह) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयो:	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयो:	अमीषु

ईदृश् (इस प्रकार) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ईदृक्, ईदृग्	ईदृशौ	ईदृशः
द्वितीया	ईदृशम्	ईदृशौ	ईदृशः
तृतीया	ईदृशा	ईदृश्याम्	ईदृशिः
चतुर्थी	ईदृशे	ईदृश्याम्	ईदृश्यः
पञ्चमी	ईदृशः	ईदृश्याम्	ईदृश्यः

षष्ठी
सप्तमी

ईदृशः
ईदृशि

ईदृशोः
ईदृशोः

ईदृशाम्
ईदृक्षु

कतिपय* (कुछ) (पुँलिलङ्ग)

विभक्ति
प्रथमा
द्वितीया
तृतीया
चतुर्थी
पञ्चमी
षष्ठी
सप्तमी

बहुवचन
कतिपयः
कतिपयान्
कतिपयैः
कतिपयेभ्यः
कतिपयेभ्यः
कतिपयेषाम्
कतिपयेषु

कतिपय (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति
प्रथमा
द्वितीया
तृतीया
चतुर्थी
पञ्चमी
षष्ठी
सप्तमी

बहुवचन
कतिपयाः
कतिपयाः
कतिपयाभिः
कतिपयाभ्यः
कतिपयाभ्यः
कतिपयासाम्
कतिपयासु

कतिपय (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति
प्रथमा
द्वितीया
(शेष रूप पुँलिलङ्ग के समान)

बहुवचन
कतिपयानि
कतिपयानि

* कतिपय शब्दों के रूप केवल बहुवचन में ही होते हैं।

उभ*, दोनों (पुँलिलिङ्ग)

विभक्ति	द्विवचन
प्रथमा	उभौ
द्वितीया	उभौ
तृतीया	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्
पञ्चमी	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयोः
सप्तमी	उभयोः

उभ (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	द्विवचन
प्रथमा	उभे
द्वितीया	उभे
तृतीया	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्
पञ्चमी	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयोः
सप्तमी	उभयोः

उभ (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	द्विवचन
प्रथमा	उभे
द्वितीया	उभे

(शेष रूप पुँलिलिङ्ग के समान)

iv) संख्यावाची शब्द

पुँलिलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. एकः	एका	एकम्

* उभ शब्दों के रूप केवल द्विवचन में ही होते हैं।

2. द्वौ	द्वे	द्वे
3. त्रयः	तिसः	त्रीणि
4. चत्वारः	चतसः	चत्वारि

नीचे के संख्या-शब्द तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

5. पञ्च	27. सप्तविंशतिः
6. षट्	28. अष्टाविंशतिः
7. सप्त	29. नवविंशतिः
8. अष्टौ (अष्ट)	30. त्रिंशत्
9. नव	31. एकत्रिंशत्
10. दश	32. द्वात्रिंशत्
11. एकादश	33. त्रयस्त्रिंशत्
12. द्वादश	34. चतुस्त्रिंशत्
13. त्रयोदश	35. पञ्चत्रिंशत्
14. चतुर्दश	36. षट्त्रिंशत्
15. पञ्चदश	37. सप्तत्रिंशत्
16. षोडश	38. अष्टत्रिंशत्
17. सप्तदश	39. एकोनचत्वारिंशत्/नवत्रिंशत्
18. अष्टादश	40. चत्वारिंशत्
19. नवदश, एकोनविंशतिः	41. एकचत्वारिंशत्
20. विंशतिः	42. द्विचत्वारिंशत्/द्वाचत्वारिंशत्
21. एकविंशतिः	43. त्रयश्चत्वारिंशत्/त्रिचत्वारिंशत्
22. द्वाविंशतिः	44. चतुश्चत्वारिंशत्
23. त्रयोविंशतिः	45. पञ्चचत्वारिंशत्
24. चतुर्विंशतिः	46. षट्चत्वारिंशत्
25. पंचविंशतिः	47. सप्तचत्वारिंशत्
26. षड्विंशतिः	48. अष्टचत्वारिंशत्

- | | |
|--------------------------------|------------------------------|
| 49. एकोनपञ्चाशत्/नवचत्वारिंशत् | 75. पञ्चसप्तति: |
| 50. पञ्चाशत् | 76. षट्‌सप्तति: |
| 51. एकपञ्चाशत् | 77. सप्तसप्तति: |
| 52. द्वि/द्वापञ्चाशत् | 78. अष्टसप्तति:/अष्टासप्तति: |
| 53. त्रि/त्रयः पञ्चाशत् | 79. नवसप्तति:/एकोनाशीति: |
| 54. चतुः पञ्चाशत् | 80. अशीति: |
| 55. पञ्चपञ्चाशत् | 81. एकाशीति: |
| 56. षट्‌पञ्चाशत् | 82. द्व्यशीति: |
| 57. सप्तपञ्चाशत् | 83. त्र्यशीति: |
| 58. अष्टपञ्चाशत् | 84. चतुरशीति: |
| 59. चतुः सप्तति | 85. पञ्चाशीति: |
| 60. षष्ठिः | 86. षडशीति: |
| 61. एकषष्ठिः | 87. सप्ताशीति: |
| 62. द्विषष्ठिः/द्वाषष्ठिः | 88. अष्टाशीति: |
| 63. त्रि/त्रयःषष्ठिः | 89. नवाशीति:/एकोननवति: |
| 64. चतुः षष्ठिः | 90. नवति: |
| 65. पञ्चषष्ठिः | 91. एकनवति: |
| 66. षट्‌षष्ठिः | 92. द्विनवति: |
| 67. सप्तषष्ठिः | 93. त्रि/त्रयोनवति: |
| 68. अष्टषष्ठिः/अष्टाषष्ठिः | 94. चतुर्णवति: |
| 69. नवषष्ठिः/एकोनसप्तति: | 95. पञ्चनवति: |
| 70. सप्तति: | 96. षण्णवति: |
| 71. एकसप्तति: | 97. सप्तनवति: |
| 72. द्वि/द्वासप्तति: | 98. अष्टनवति:/अष्टानवति: |
| 73. त्रि/त्रयःसप्तति: | 99. नवनवति:/एकोनशतम् |
| 74. चतुः सप्तति | 100. शतम् |

क्रमसंख्यावाचक शब्द (एक से बीस तक)

पुँलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नवमः	नवमी	नवमम्
दशमः	दशमी	दशमम्
एकादशः	एकादशी	एकादशम्
द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
षोडशः	षोडशी	षोडशम्
सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
नवदशः	नवदशी	नवदशम्
विंशः	विंशी	विंशम्

संख्यावाचक शब्दों के रूप

एक (नित्य एकवचनान्त)

विभक्ति	पुँलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	(शेष पुँलिङ्ग एक के समान)
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः	
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	

द्वि (दो) (नित्य द्विवचनान्त)

विभक्ति	पुँलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि (तीन) (नित्य बहुवचनान्त)

विभक्ति	पुँलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिसः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिसः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः

षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसूषु	त्रिषु

चतुर् (चार) (नित्य बहुवचनान्त)

विभक्ति	पुँलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चतसः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतसः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसूषु	चतुर्षु

II. धातुरूपाणि

पठ्, पढ़ना (भ्वादिगण)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

श्रु (सुनना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः, शृणवः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्
उत्तम पुरुष	अशृणवम्	अशृणव, अशृणुव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोतु, शृणुतात्	शृणुताम्
मध्यम पुरुष	शृणु, शृणुतात्	शृणुतम्
उत्तम पुरुष	शृणवानि	शृणवाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव

भू (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु (भवतात्)	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव (भवतात्)	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

पा (पीना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः

लड् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव

गम् (जाना)**लट् लकार (वर्तमान काल)**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

पच् (पकाना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्
मध्यम पुरुष	पचे:	पचेतम्
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव

लिख् (लिखना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुष	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

स्था (तिष्ठ), बैठना

लट् लकार (वर्तमान काल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
उत्तम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लङ् लकार (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
उत्तम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
उत्तम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
उत्तम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
उत्तम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

दृश् (पश्य), देखना
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

अस् (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात्
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

सेव् (सेवन करना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट् लकार (भविष्यत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवेत्	सेवेयाताम्	सेवेस्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लभ् (प्राप्त करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभावहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथा:	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेन्
मध्यम पुरुष	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

दा (यच्छ्), देना

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छति	यच्छतः
मध्यम पुरुष	यच्छसि	यच्छथः
उत्तम पुरुष	यच्छामि	यच्छावः

लड् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयच्छत्	अयच्छताम्
मध्यम पुरुष	अयच्छः	अयच्छतम्
उत्तम पुरुष	अयच्छम्	अयच्छाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छतु	यच्छताम्
मध्यम पुरुष	यच्छ	यच्छतम्
उत्तम पुरुष	यच्छानि	यच्छाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छेत्	यच्छेताम्
मध्यम पुरुष	यच्छेः	यच्छेतम्
उत्तम पुरुष	यच्छेयम्	यच्छेव

अर्च् (पूजा करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चति	अर्चतः
मध्यम पुरुष	अर्चसि	अर्चथः
उत्तम पुरुष	अर्चमि	अर्चावः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आर्चत्	आर्चताम्
मध्यम पुरुष	आर्चः	आर्चतम्
उत्तम पुरुष	आर्चम्	आर्चाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चिष्यति	अर्चिष्यतः
मध्यम पुरुष	अर्चिष्यसि	अर्चिष्यथः
उत्तम पुरुष	अर्चिष्यामि	अर्चिष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चतु	अर्चताम्
मध्यम पुरुष	अर्च	अर्चतम्
उत्तम पुरुष	अर्चानि	अर्चाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चेत्	अर्चेताम्
मध्यम पुरुष	अर्चेः	अर्चेतम्
उत्तम पुरुष	अर्चेयम्	अर्चेव

ब्रज (जाना)**लट् लकार (वर्तमान काल)**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रजति	ब्रजतः	ब्रजन्ति
मध्यम पुरुष	ब्रजसि	ब्रजथः	ब्रजथ
उत्तम पुरुष	ब्रजामि	ब्रजावः	ब्रजामः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अब्रजत्	अब्रजताम्	अब्रजन्
मध्यम पुरुष	अब्रजः	अब्रजतम्	अब्रजत
उत्तम पुरुष	अब्रजम्	अब्रजाव	अब्रजाम

लट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रजिष्यति	ब्रजिष्यतः	ब्रजिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	ब्रजिष्यसि	ब्रजिष्यथः	ब्रजिष्यथ
उत्तम पुरुष	ब्रजिष्यामि	ब्रजिष्यावः	ब्रजिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रजतु	ब्रजताम्	ब्रजन्तु
मध्यम पुरुष	ब्रज	ब्रजतम्	ब्रजत
उत्तम पुरुष	ब्रजानि	ब्रजाव	ब्रजाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रजेत्	ब्रजेताम्	ब्रजेयुः
मध्यम पुरुष	ब्रजेः	ब्रजेतम्	ब्रजेत
उत्तम पुरुष	ब्रजेयम्	ब्रजेव	ब्रजेम

तप् (तप करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तपति	तपतः
मध्यम पुरुष	तपसि	तपथः
उत्तम पुरुष	तपामि	तपावः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतपत्	अतपताम्
मध्यम पुरुष	अतपः	अतपतम्
उत्तम पुरुष	अतपम्	अतपाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तप्स्यति	तप्स्यतः	तप्स्यन्ति
तप्स्यसि	तप्स्यथः	तप्स्यथ
तप्स्यामि	तप्स्यावः	तप्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तपतु	तपताम्	तपन्तु
तप	तपतम्	तपत
तपानि	तपाव	तपाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तपेत्	तपेताम्	तपेयुः
तपे:	तपेतम्	तपेत
तपेयम्	तपेव	तपेम

शुच् (शोक करना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचति	शोचतः	शोचन्ति
मध्यम पुरुष	शोचसि	शोचथः	शोचथ
उत्तम पुरुष	शोचामि	शोचावः	शोचामः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशोचत्	अशोचताम्	अशोचन्
मध्यम पुरुष	अशोचः	अशोचतम्	अशोचत्
उत्तम पुरुष	अशोचम्	अशोचाव	अशोचाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचिष्यति	शोचिष्यतः	शोचिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शोचिष्यसि	शोचिष्यथः	शोचिष्यथ
उत्तम पुरुष	शोचिष्यामि	शोचिष्यावः	शोचिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचतु	शोचताम्	शोचन्तु
मध्यम पुरुष	शोच	शोचतम्	शोचत
उत्तम पुरुष	शोचानि	शोचाव	शोचाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचेत्	शोचेताम्	शोचेयः
मध्यम पुरुष	शोचे:	शोचेतम्	शोचेत
उत्तम पुरुष	शोचेयम्	शोचेव	शोचेम

नी (ले जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयति	नयतः
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथः
उत्तम पुरुष	नयामि	नयावः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्
मध्यम पुरुष	अनयः	अनयतम्
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयावः

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्
उत्तम पुरुष	नयानि	नयावः

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्
मध्यम पुरुष	नयेः	नयेतम्
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव

भज् (भजन करना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजति	भजतः	भजन्ति
मध्यम पुरुष	भजसि	भजथः	भजथ
उत्तम पुरुष	भजामि	भजावः	भजामः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभजत्	अभजताम्	अभजन्
मध्यम पुरुष	अभजः	अभजतम्	अभजत्
उत्तम पुरुष	अभजम्	अभजाव	अभजाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजिष्यति	भजिष्यतः	भजिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भजिष्यसि	भजिष्यथः	भजिष्यथ
उत्तम पुरुष	भजिष्यामि	भजिष्यावः	भजिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजतु	भजताम्	भजन्तु
मध्यम पुरुष	भज	भजतम्	भजत
उत्तम पुरुष	भजानि	भजाव	भजाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजेत्	भजेताम्	भजेयुः
मध्यम पुरुष	भजेः	भजेतम्	भजेत
उत्तम पुरुष	भजेयम्	भजेव	भजेम

यज् (यजन करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजति	यजतः
मध्यम पुरुष	यजसि	यजथः
उत्तम पुरुष	यजामि	यजावः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयजत्	अयजताम्
मध्यम पुरुष	अयजः	अयजतम्
उत्तम पुरुष	अयजम्	अयजाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यक्ष्यति	यक्ष्यतः
मध्यम पुरुष	यक्ष्यसि	यक्ष्यथः
उत्तम पुरुष	यक्ष्यामि	यक्ष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजतु	यजताम्
मध्यम पुरुष	यज	यजतम्
उत्तम पुरुष	यजानि	यजाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजेत्	यजेताम्
मध्यम पुरुष	यजेः	यजेतम्
उत्तम पुरुष	यजेयम्	यजेव

शुभ् (शोभित होना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभते	शोभेते	शोभन्ते
मध्यम पुरुष	शोभसे	शोभेथे	शोभध्वे
उत्तम पुरुष	शोभे	शोभावहे	शोभामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशोभत	अशोभताम्	अशोभन्त
मध्यम पुरुष	अशोभथा:	अशोभेथाम्	अशोभध्वम्
उत्तम पुरुष	अशोभे	अशोभावहि	अशोभामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभिष्यते	शोभिष्येते	शोभिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	शोभिष्यसे	शोभिष्येथे	शोभिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	शोभिष्ये	शोभिष्यावहे	शोभिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभताम्	शोभेताम्	शोभन्ताम्
मध्यम पुरुष	शोभस्व	शोभेथाम्	शोभध्वम्
उत्तम पुरुष	शोभै	शोभावहै	शोभामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभेत	शोभेयाताम्	शोभेरन्
मध्यम पुरुष	शोभेथा:	शोभेयाथाम्	शोभेध्वम्
उत्तम पुरुष	शोभेय	शोभेवहि	शोभेमहि

वृत् (होना-रहना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तते	वर्तन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तसे	वर्तथे
उत्तम पुरुष	वर्ते	वर्तावहे

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवर्तत	अवर्तेताम्
मध्यम पुरुष	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्
उत्तम पुरुष	अवर्ते	अवर्तावहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते
मध्यम पुरुष	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे
उत्तम पुरुष	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्
मध्यम पुरुष	वर्तस्व	वर्तेथाम्
उत्तम पुरुष	वर्तै	वर्तावहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्
मध्यम पुरुष	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्
उत्तम पुरुष	वर्तेय	वर्तेवहि

अदादिगण—

**अद् (भक्षणे), खाना
लट् लकार (वर्तमान काल)**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
मध्यम पुरुष	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उत्तम पुरुष	अद्धि	अद्वः	अद्यः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
मध्यम पुरुष	आदः	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्य

लट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उत्तम पुरुष	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतु	अत्ताम्	अदन्तु
मध्यम पुरुष	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
मध्यम पुरुष	अद्याः	अद्यात्तम्	अद्यात
उत्तम पुरुष	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

ब्रू(स्पष्ट बोलना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीति (आह)	ब्रूतः (आहतुः)
मध्यम पुरुष	ब्रवीषि (आत्थ)	ब्रूथः (आहथुः)
उत्तम पुरुष	ब्रवीमि	ब्रूवः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्
मध्यम पुरुष	अब्रवीः	अब्रूतम्
उत्तम पुरुष	अब्रवम्	अब्रूव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यतः
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः
उत्तम पुरुष	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्
मध्यम पुरुष	ब्रूहि	ब्रूतम्
उत्तम पुरुष	ब्रवाणि	ब्रवाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्
मध्यम पुरुष	ब्रूयाः	ब्रूयातम्
उत्तम पुरुष	ब्रूयाम्	ब्रूयाव

हन् (हिसागत्योः), (वध करना-जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घन्ति
मध्यम पुरुष	हन्सि	हथः	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघन्न
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहन्म्	अहन्व	अहन्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

पा (रक्षणे), रक्षा करना
लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पाति	पातः
मध्यम पुरुष	पासि	पाथः
उत्तम पुरुष	पामि	पावः

लड् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपात्	अपाताम्
मध्यम पुरुष	अपा:	अपातम्
उत्तम पुरुष	अपाम्	अपाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पातु	पाताम्
मध्यम पुरुष	पाहि	पातम्
उत्तम पुरुष	पानि	पाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पायात्	पायाताम्
मध्यम पुरुष	पाया:	पायातम्
उत्तम पुरुष	पायासम्	पायास्व

तुदादिगण—

तुद् (दुख देना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम पुरुष	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम पुरुष	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

लट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम पुरुष	तुद	तुदतम्	तुदत
उत्तम पुरुष	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
मध्यम पुरुष	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम पुरुष	तुदेयेम्	तुदेव	तुदेम

इष् (चाहना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

मिल् (मिलना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलति	मिलतः	मिलन्ति
मध्यम पुरुष	मिलसि	मिलथः	मिलथ
उत्तम पुरुष	मिलामि	मिलावः	मिलामः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अमिलत्	अमिलताम्	अमिलन्
मध्यम पुरुष	अमिलः	अमिलतम्	अमिलत
उत्तम पुरुष	अमिलम्	अमिलाव	अमिलाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मेलिष्यति	मेलिष्यतः	मेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मेलिष्यसि	मेलिष्यथः	मेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	मेलिष्यामि	मेलिष्यावः	मेलिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलतु	मिलताम्	मिलन्तु
मध्यम पुरुष	मिल	मिलतम्	मिलत
उत्तम पुरुष	मिलानि	मिलाव	मिलाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलेत्	मिलेताम्	मिलेयः
मध्यम पुरुष	मिले:	मिलेतम्	मिलेत
उत्तम पुरुष	मिलेयम्	मिलेव	मिलेम

सिंच् (सींचना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	सिञ्चति	सिञ्चतः	सिञ्चन्ति
उत्तम पुरुष	सिञ्चसि	सिञ्चथः	सिञ्चथ
	सिञ्चामि	सिञ्चावः	सिञ्चामः

लङ् लकार (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	असिञ्चत्	असिञ्चताम्	असिञ्चन्
उत्तम पुरुष	असिञ्चः	असिञ्चतम्	असिञ्चत
	असिञ्चम्	असिञ्चावः	असिञ्चामः

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	सेक्ष्यति	सेक्ष्यतः	सेक्ष्यन्ति
उत्तम पुरुष	सेक्ष्यसि	सेक्ष्यतः	सेक्ष्यथ
	सेक्ष्यामि	सेक्ष्यावः	सेक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	सिञ्चतु	सिञ्चताम्	सिञ्चन्तु
उत्तम पुरुष	सिञ्च	सिञ्चतम्	सिञ्चत
	सिञ्चानि	सिञ्चावः	सिञ्चामः

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	सिञ्चेत्	सिञ्चेताम्	सिञ्चेयुः
उत्तम पुरुष	सिञ्चेः	सिञ्चेतम्	सिञ्चेत
	सिञ्चेयम्	सिञ्चेव	सिञ्चेम

**विद् (लाभे), पाना
लट् लकार (वर्तमान काल)**

प्रथम पुरुष	एकवचन विन्दति	द्विवचन विन्दतः	बहुवचन विन्दन्ति
मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष
उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष

लड् लकार (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	एकवचन अविन्दत्	द्विवचन अविन्दताम्	बहुवचन अविन्दन्
मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष
उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	एकवचन वेत्स्यति	द्विवचन वेत्स्यतः	बहुवचन वेत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष
उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

प्रथम पुरुष	एकवचन विन्दतु	द्विवचन विन्दताम्	बहुवचन विन्दन्तु
मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष
उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

प्रथम पुरुष	एकवचन विन्देत्	द्विवचन विन्देताम्	बहुवचन विन्देयः
मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष
उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष

विश् (प्रवेश), घुसना
लट् लकार (वर्तमान काल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	विशति	विशतः	विशन्ति
उत्तम पुरुष	विशसि	विशथः	विशथ
	विशामि	विशावः	विशामः

लङ् लकार (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	अविशत्	अविशताम्	अविशन्
उत्तम पुरुष	अविशः	अविशतम्	अविशत्
	अविशम्	अविशाव	अविशाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	वेद्यति	वेद्यतः	वेद्यन्ति
उत्तम पुरुष	वेद्यसि	वेद्यथः	वेद्यथ
	वेद्यामि	वेद्यावः	वेद्यामः

लोट् लकार (आज्ञा)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	विशतु	विशताम्	विशन्तु
उत्तम पुरुष	विश	विशतम्	विशत
	विशानि	विशाव	विशाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

प्रथम पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	विशेत्	विशेताम्	विशेयुः
उत्तम पुरुष	विशे:	विशेतम्	विशेत
	विशेयम्	विशेव	विशेम

प्रच्छ (पूछना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्षयति	प्रक्षयतः	प्रक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्षयसि	प्रक्षयथः	प्रक्षयथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छे:	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

मुञ्च् (छोड़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चति	मुञ्चतः
मध्यम पुरुष	मुञ्चसि	मुञ्चथः
उत्तम पुरुष	मुञ्चामि	मुञ्चावः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्
मध्यम पुरुष	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्
उत्तम पुरुष	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः
मध्यम पुरुष	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथः
उत्तम पुरुष	मोक्ष्यामि	मोक्ष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चतु	मुञ्चताम्
मध्यम पुरुष	मुञ्च	मुञ्चतम्
उत्तम पुरुष	मुञ्चानि	मुञ्चाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्
मध्यम पुरुष	मुञ्चे:	मुञ्चेतम्
उत्तम पुरुष	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव

**विद् (लाभे), पाना
लट् लकार (वर्तमान काल)**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दते	विन्दते	विन्दन्ते
मध्यम पुरुष	विन्दसे	विन्दथे	विन्दध्वे
उत्तम पुरुष	विन्दे	विन्दावहे	विन्दामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अविन्दत	अविन्देताम्	अविन्दन्त
मध्यम पुरुष	अविन्दथा:	अविन्देथाम्	अविन्दध्वम्
उत्तम पुरुष	अविन्दे	अविन्दावहि	अविन्दामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दताम्	विन्देताम्	विन्दन्ताम्
मध्यम पुरुष	विन्दस्व	विन्देथाम्	विन्दध्वम्
उत्तम पुरुष	विन्दे	विन्दावहै	विन्दामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्देत	विन्देयाताम्	विन्देरन्
मध्यम पुरुष	विन्देथा:	विन्देयाथाम्	विन्देध्वम्
उत्तम पुरुष	विन्देय	विन्देवहि	विन्देमहि

तनादिगण—

तनु (तानना, फैलाना) लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोति	तनुतः
मध्यम पुरुष	तनोषि	तनुथः
उत्तम पुरुष	तनोमि	तनुवः, तन्वः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्
मध्यम पुरुष	अतनोः	अतनुतम्
उत्तम पुरुष	अतन्वम्	अतनुव-अतन्व

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यतः
मध्यम पुरुष	तनिष्यसि	तनिष्यथः
उत्तम पुरुष	तनिष्यामि	तनिष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोतु	तनुताम्
मध्यम पुरुष	तनु	तनुतम्
उत्तम पुरुष	तन्वानि	तन्वाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्
मध्यम पुरुष	तनुया:	तनुयातम्
उत्तम पुरुष	तनुयाम्	तनुयाव

कृ (करना)

लट् लकार (वर्तमान काल) परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

कृ, करना (आत्मनेपद)
लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वते
मध्यम पुरुष	कुरुषे	कुर्वथे
उत्तम पुरुष	कुर्वे	कुर्वहे

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्
मध्यम पुरुष	अकुरुथा:	अकुर्वाथाम्
उत्तम पुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते
मध्यम पुरुष	करिष्यसे	करिष्यथे
उत्तम पुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वताम्
मध्यम पुरुष	कुरुष्व	कुर्वथाम्
उत्तम पुरुष	करवै	करवावहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्
मध्यम पुरुष	कुर्वीथा:	कुर्वीयाथाम्
उत्तम पुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि

क्र्यादिगण—

**क्री, खरीदना (उभयपदी)
लट् लकार (वर्तमान काल)**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
मध्यम पुरुष	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उत्तम पुरुष	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्यम पुरुष	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तम पुरुष	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उत्तम पुरुष	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
मध्यम पुरुष	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उत्तम पुरुष	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयः
मध्यम पुरुष	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उत्तम पुरुष	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

चुरादिगण—

चुर् (चुराना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्
मध्यम पुरुष	चोरये:	चोरयेतम्
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव

भक्ष (भक्षण करना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

लट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयानि	भक्षयाव	भक्षयाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
मध्यम पुरुष	भक्षये:	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उत्तम पुरुष	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

कथ् (कहना)
लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयति	कथयतः
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथः
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयावः

लड् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्
मध्यम पुरुष	अकथयः	अकथयतम्
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यतः
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयेत्	कथयेताम्
मध्यम पुरुष	कथये:	कथयेतम्
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव

गण् (गिनना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयति	गणयतः	गणयन्ति
मध्यम पुरुष	गणयसि	गणयथः	गणयथ
उत्तम पुरुष	गणयामि	गणयावः	गणयामः

लड़् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगणयत्	अगणयताम्	अगणयन्
मध्यम पुरुष	अगणयः	अगणयतम्	अगणयत
उत्तम पुरुष	अगणयम्	अगणयाव	अगणयाम

लट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयिष्यति	गणयिष्यतः	गणयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गणयिष्यसि	गणयिष्यथः	गणयिष्यथ
उत्तम पुरुष	गणयिष्यामि	गणयिष्यावः	गणयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयतु	गणयताम्	गणयन्तु
मध्यम पुरुष	गणय	गणयतम्	गणयत
उत्तम पुरुष	गणयानि	गणयाव	गणयाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयेत्	गणयेताम्	गणयेयुः
मध्यम पुरुष	गणये:	गणयेतम्	गणयेत
उत्तम पुरुष	गणयेयम्	गणयेव	गणयेम

पाल् (पालन करना)
लट् लकार (वर्तमान)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पालयति	पालयतः
मध्यम पुरुष	पालयसि	पालयथः
उत्तम पुरुष	पालयामि	पालयावः

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपालयत्	अपालयताम्
मध्यम पुरुष	अपालयः	अपालयतम्
उत्तम पुरुष	अपालयम्	अपालयाव

नश् (नष्ट होना)

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्
मध्यम पुरुष	अनश्यः	अनश्यतम्
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नड़क्ष्यति	नड़क्ष्यतः
मध्यम पुरुष	नड़क्ष्यसि	नड़क्ष्यथः
उत्तम पुरुष	नड़क्ष्यामि	नड़क्ष्यावः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव

विधिलिङ्गः (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्ये:	नश्येतम्	नश्येत्
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम्

जन् (उत्पन्न होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथा:	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेन्
मध्यम पुरुष	जायेथा:	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

स्वादिगण—

सु (स्स निकालना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
मध्यम पुरुष	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उत्तम पुरुष	सुनोमि	सुनुवः सुन्वः	सुनुमः सुन्मः

लड् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
मध्यम पुरुष	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उत्तम पुरुष	असुन्वम्	असुन्व, असुनुव	असुन्म, असुनुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उत्तम पुरुष	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
मध्यम पुरुष	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
उत्तम पुरुष	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

विधिलिङ्गः (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुन्यात्	सुन्याताम्	सुन्यः
मध्यम पुरुष	सुन्याः	सुन्यातम्	सुन्यात्
उत्तम पुरुष	सुन्याम्	सुन्याव	सुन्याम्

चि (चुनना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति
मध्यम पुरुष	चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ
उत्तम पुरुष	चिनोमि	चिनुवः-चिन्वः	चिनुमः-चिन्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
मध्यम पुरुष	अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत
उत्तम पुरुष	अचिन्वम्	अचिनुव(अचिन्व)	अचिनुम(अचिन्म)

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ
उत्तम पुरुष	चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु
मध्यम पुरुष	चिनुहि	चिनुतम्	चिनुत
उत्तम पुरुष	चिन्वानि	चिन्वाव	चिन्वाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयः
मध्यम पुरुष	चिनुया:	चिनुयातम्	चिनुयात
उत्तम पुरुष	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

(शक्) सकना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नुवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ्गः (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयः
मध्यम पुरुष	शक्नुया:	शक्नुयातम्	शक्नुयात्
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

आप् (प्राप्त करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयात्
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव

टिप्पणी

not to be republished
© NCERT

टिप्पणी

not to be republished
© NCERT